

शृङ्गी ऋषि कृष्ण दत्त जी महाराज

ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म परमपिता परमात्मा की विचित्रता से युक्त, अद्भुत और विलक्षण सृष्टि का उद्घाटन पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों से हुआ। वह ईश्वर का एक अलौकिक और दिव्य प्रकटीकरण है और सृष्टि के इतिहास की एक मात्र, विलक्षण अद्भुत घटना भी। जब १४ सितम्बर सन् १९४२ को, उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर, सलेमाबाद में एक विशेष बालक ने जन्म लिया। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो बालक की गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, लगभग १५ मिनट वेद मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त सृष्टि के आदि काल से वर्तमान काल तक के विभिन्न कालों के स्वयं और विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक एक दिव्य प्रवचन होता। बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ में आवाज अस्पष्ट होती और जैसे-जैसे आयु बढ़ने लगी, वैसे-वैसे ही आवाज और विषय दोनों स्पष्ट होने लगे। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नही था। ग्रामीण, निर्धन और अपठित समाज होने के कारण भूत प्रेत का प्रभाव मानते हुए बहुत-सी चिकित्सा भी कराई गई, पर सब व्यर्थ रहे। क्योंकि बालक की यह प्रवचन क्रिया तो यौगिक थी यह तो सतत् ऐसे ही चलती रही। आवाज जब कुछ स्पष्ट हुई तो इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि

ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। और इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में भी जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में जाता तो कुछ अन्तराल बाद स्वतः ही योग समाधि की स्थिति बन जाती। जहां इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और जैसा काल देखा था उस काल के अनुकूल व्याख्यान कण्ठ आ जाते। क्योंकि, जन्म जन्मान्तरों के संस्कार स्मृति में, अन्तःकरण में विराजमान रहते हैं। और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीर धारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती, जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि महाराज, और पूज्य महानन्द जी के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण, वहां अन्तरिक्ष में दिव्य आत्माओं के सम्मुख सत्संग में दिया जाने वाला दिव्य प्रवचन, इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन मानस को भी सुनाई देते। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, ब्रह्माण्ड की विशालता, प्रत्येक लोक में जीवन की अनिवार्यता का बोध, सृष्टि का उद्देश्य, पूर्व कालों में विज्ञान की विशालता का दिग्दर्शन, वैदिक संस्कृति का उज्ज्वलतम स्वरूप, आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का स्वरूप, विभिन्न कालों का आँखो देखा सदृश्य वर्णन, भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का साक्षात दर्शन, समाज में प्रचलित रूढ़ियों का निवारण करने वाली दृष्टि, क्या कुछ दिव्य नहीं है इन दिव्य प्रवचनों में ? ये किसी भी मनुष्य को, समाज का और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते है।

पूज्यपाद गुरुदेव की २० वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्यचकित और उनका मार्गदर्शन करते रहे। परन्तु कुछ प्रबुद्ध महानुभावों ने इन प्रवचनों की इस अमूल्य निधि को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सन् १९६२ से शब्द ध्वनांकित यन्त्र (टेप रिकार्ड) संरक्षित करने का निश्चय किया, और यह क्रम पूज्यपाद गुरुदेव के महाप्रयाण १५ अक्टूबर सन् १९९२ तक होता रहा।

ब्रह्म की ओर

इस अन्तराल पूज्यपाद गुरुदेव के १५०० प्रवचन, टेप रिकार्ड से संरक्षित किये गये। जिनमें सृष्टि के अनन्तकाल की अमूल्य धरोहर निहित है। हम उनको व्यवस्थित रूप से और अनुसन्धानात्मक दृष्टि से पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। परमात्मा की अनुपम कृपा से प्राप्त, इस अमूल्य धरोहर को जन जन तक पंहुचाने के प्रयास में योगदान देने के लिए, प्रत्येक वैदिक धर्मी को सहयोगी बनना चाहिए। जिससे हम सृष्टि के आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक की मानव गाथा को सभी के सम्मुख रख सकें। विश्व कल्याणार्थ की भावना से निहित इस महान ज्ञान की वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति को प्रसारित कर सकें।

1. 920204-सुविधा न होने पर याग

परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि कि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास कर रहा है इसलिए वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है उसका प्रायः वर्णन कर रहा है और प्रत्येक वेद मन्त्रों में उस ज्ञान और विज्ञान की महिमा अथवा उसके विशाल रूपों का वर्णन होता रहा है।

परमपिता परमात्मा का याग

तो आज का हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा था यजन्म् प्रवाहा वर्णस्सुतम् यह जो परमपिता परमात्मा का यह जो भव्य जगत है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है और इस यज्ञशाला में वह परमपिता स्वयं इसके ब्रह्मा है, आत्मा यज्ञमान है और इन पञ्च महाभूत मानो देखो, कोई इनमें से अध्वर्यु है कोई उद्गाता है और कोई होता बन करके बेटा! अपने में याग कर रहा है। तो यह कैसी भव्य सुन्दर एक यज्ञशाला है जिसके ऊपर मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक मानो अपने में अन्वेषण करता रहा है, अनुसन्धान करता रहा है और इसीलिए आभा को ले करके मानव ज्ञान और विज्ञान में मानव अपनी उड़ाने उड़ता रहा है। तो विचार विनिमय यह कि आज हम उस परमपिता परमात्मा की भव्य यज्ञशाला में सब विद्यमान है और विद्यमान होकर अपने जीवन में और बाह्य जगत में भी मानो सुगन्ध करना हमारा कर्तव्य है। आज हमें कहीं से यह प्रेरणा आ रही है क्या याग के ऊपर अपना एक विचार दिया जाए क्या याग अपने में कितना भव्यतम माना

गया है क्योंकि परमपिता परमात्मा का यह जो संसार है इसमें नाना प्रकार का औषध विज्ञान है और मानवीयतव एक सूत्र में सूत्रित हो रहा है। तो ये कैसी अपनी अपनी आभाओं में परणित हो करके बेटा! याग कर रहा है। एक मानव अपनी एकन्त स्थली में विद्यमान हो करके और अपने विचारों से सुगन्धित कर रहा है तो वह भव्य याग कर रहा है और जब साकल्य को ले करके बेटा! इन्द्रियों का साकल्य बनाता है तो उसी साकल्य को ले करके वह अपने हृदय को पवित्र बनाता रहता है। तो हृदय ही बेटा! यज्ञशाला है। जिस हृदय में मानो देखो, नेत्र रूप को लाते है वह हृदय में समाहित हो जाता है मानो घ्राण से सुगन्ध लाते हैं वह हृदय में और श्रोत्रों से शब्द आता है वह हृदयों में है और मुनिवरों! देखो, घ्राणं ब्रहे रसना से नाना प्रकार का रस आता है रवश्षमीतम्ब्रहे मानो वह भी हृदय में प्रवेश हो जाता है नाना त्वचा से प्रेम आता है उसकी भी मानो प्रतिष्ठा हृदय में होती है। मेरे पुत्रों! देखो, ये मन संसार की वस्तुओं को लाता है वह भी हृदय में है। तो वेद का ऋषि कहता है हृदयम् ब्रह्मणा वर्णास्सुतम् मानो देखो, हृदय रूपी यज्ञशाला में तुम याग करने लगो वही तो संसार में एक योगी है कर्म सात्विक है जो मानो देखो, हृदय रूपी यज्ञशाला में याग करना जानता है और पाँच यह ज्ञानेन्द्रियों का मानो चरू बना करके अथवा साकल्य बना करके उसको हूत कर रहा है। तो विचार आता रहता है बेटा! याग अपने में बड़ा विचित्रतम् एक क्रियाकलाप है जिसके ऊपर सृष्टि के प्रारम्भ से ही मुनिवरों! देखो, यह एक नृत्त होता रहा ऋषि मुनि अपने में एकन्त स्थलियो में विद्यमान हो करके ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ते रहे है इसी आशा को ले करके।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय

तो आओ मेरे पुत्रो! देखो, इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं प्रगट करने आया हूँ केवल यह आओ आज मैं तुम्हे महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, प्रातः कालीन नैतिक शिक्षा देते हुए

ब्रह्म की ओर

आचार्य, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान होना और विद्यमान हो करके मानो उनको कहा यज्ञम् ब्रह्मा हरंणाम् ब्रहा कृतं देवाः हे ब्रह्मचारियों! आओ तुम याज्ञिक बनो और अपनी मानो देखो, अपनी प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को साकल्य बना करके और हृदय में प्रवेश करते चले जाओ। मेरे प्यारे! क्योंकि संसार में जो विद्यालय पवित्र होते है तो उन विद्यालयों में जो महानता होती है तो ब्रह्मचारी अपने में पवित्र बनता है और जब ब्रह्मचारी और विद्यालय दोनो ही पवित्रता की प्रतिभा में प्रतिष्ठित होते है तो मानो देखो, यह समाज और प्राण अपने में पवित्रता की आभा में परणित हो जाता है।

याग की प्रेरणा

तो मेरे प्यारे! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज याग की प्रेरणा दे रहे थे। ब्रह्मचारियां से कहते हे ब्रह्मचारियों! तुम सबसे प्रथम मानो अपने में गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करो जो गार्हपथ्य अग्नि तुम्हारे अन्तर्हृदयों में प्रदीप्त हो रही है। जिस अग्नि को तुम देखो, प्रदीप्त करके शिक्षा का व्यवधान करते हो शिक्षा को अपने में धारण करते हो मानो देखो, उस गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करो जिस अग्नि के माध्यम से मानव अपने में पवित्रता में परणित हो जाता है। तो तुम मानो उस पवित्रता को अपनाने का अपने में धारयामि बनो और ब्रह्मचारी जब इस प्रकार जब न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन, श्रवण करते रहे तो उन ब्रह्मचारियों में एक ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ। यज्ञदत्त नाम के ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! मैने आप से कई समय प्रश्न किया है जब भी याग का कोई प्रसंग आता है उसी समय मैं आप से यह प्रश्न करता हूँ। क्या हे प्रभु! हम याग कैसे करे? उन्होंने कहा याग एक सुन्दर यज्ञशाला हो और यज्ञशाला मानो नाना खम्बो वाली होनी चाहिए जैसे देखो, इस मानव देखो, आत्मा का यह मानवीय शरीर माना गया है और इसका यह पञ्च महाभूतो के लोक में रहने वाला है इसी प्रकार तुम मानो देखो, याज्ञिक बन करके यज्ञनम् ब्रह्मा यज्ञम प्रवहा लोकम वर्णास्सुतम मानो देखो, याग को प्रारम्भ करे जिसके द्वारा तुम्हारा कल्याण हो और तुम मानो देखो, चौबीस खम्बो वाली देखो, वह नौ सप्तम नाना

प्रकार के खम्बो वाली तुम्हारी यज्ञशाला हो और तुम्हारा मधु, रोगनाशक, और देखो, पुष्टिवर्धक और मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मणो ब्राहा यह चार प्रकार की वृत्तियों में साकल्य तुम्हारा सदा हुआ होना चाहिए। उस साकल्य के द्वारा तुम याग करो और याग करके कहो प्रणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा और समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके तुम हूत करो क्योंकि उसी से तुम्हारी प्राण सत्ता पवित्र बनती है प्राणो में एक सूत्र में प्राणित हो जाता है। तो बेटा! देखो, कल्याण की सुतः भावना अप्रतम मानो देखो, एक महानता की उग्रतियाँ उत्पन्न हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने यह श्रवण किया वह बड़े प्रसन्न हुए। याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि वेद मन्त्रों का अध्ययन होना चाहिए और वेद मन्त्रों के साथ तुम्हारा देखो, स्वाहा होना चाहिए जिससे तुम्हारा अन्तः अन्तरिक्ष पवित्र बन जाएं। ब्राह्म जगत और आन्तरिक जगत को, दोनो को पवित्र बनाना बहुत अनिवार्य है।

समिधा द्वारा याग

मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञदत्त ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ कि जब मानो देखो, कहीं यह सुविधा हो, असुविधा हो जाए, कि मैं यज्ञम ब्रह्मे यज्ञ करना चाहता हूँ परन्तु न तो साकल्य है और न यज्ञशाला है तो याग कैसे करे? तो उन्होंने कहा कि तुम नाना प्रकार की अमृत समिधा ले करके और अग्नि को प्रदीप्त करो और कहो प्रणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो मानो देखो, अग्नि समिधा के द्वारा मानो प्रदीप्त की जाती है देखो, जैसे आन्तरिक जगत में तुम अपने में देखो, प्रत्येक इन्द्रियों को ले करके इनकी समिधा बना करके और तुम अपने हृदय को पवित्र बना करके इसी प्रकार तुम ब्राह्मीय जगत वाले यज्ञशाला को तुम अग्नि के द्वारा चयन करते हुए अग्नि का चयन करके समिधाओं में मानो देखो, अमृतम में पाही तुम उसको अमृत को अपने में धारण करने वाले बनो। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि कहते है क्या उस समय तुम याग करोगे तो मानो देखो, तुम्हारा अन्तरात्मा इन्द्रियों सहित पवित्र बन करके तुम देवलोक में प्रवेश हो जाओगे।

जल के द्वारा याग

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! देखो, यज्ञदत्त नाम के ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! मैं यह जानना और चाहता हूँ कही भगवन! यह भी हमें प्राप्त न हो, कहीं अग्नि भी न हो, समिधा भी न हो और याग करने की हमारी इच्छा है तो हम कैसे करे? उन्होंने कहा हे यज्ञदत्त ब्रह्मचारी! तुम याग करना चाहते हो तो मानो जल को अञ्जलि में लो और जल को अञ्जलि में ले करके कहो प्रणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो। मानो देखो, याग मम ब्राहा याग को प्रारम्भ करो जिससे तुम्हारा जीवन अमृतमय बन जाए। मानो देखो, क्योंकि यह जो जल है यही तो आपो कहलाता है जब हम माता के गर्भस्थल में होते है तो हम माता के गर्भस्थल में मानो देखो, हमारा ओढन भी जल है और बिछौना भी हमारा जल है और पाशे भी जल के ही होते है। तो जल में मुनिवरों! देखो, हम सब मग्न रहते है और माता की शिक्षा का अध्ययन करते रहते है, प्रेरणा पाते रहते हैं। माता बालक को अपने गर्भस्थल में बालक को प्रेरित बना देती है। तो विचार आता है मेरे पुत्रों! देखो, यह जलम ब्रह्मा आपो को ले करके, जल को ले करके तरलमयी मानो देखो, उसको हूत प्रारम्भ करो वह जो हूत है वही तो तुम्हारा जीवन है। तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणाम् ब्रह्मा व्रतम् यही जल है बेटा!। देखो, जहां जल को अग्नि उष्णा बनाने वाली है और जल ही आपो में मानो देखो, चन्द्रमा उसे शीतल बनाता है और चन्द्रमा अमृत देता है। मेरे प्यारे! समुद्रों से देखो, चन्द्रमा का समन्वय रहता है। वह वहां से जल लेता है औषध बना करके वह मानो देखो, वनस्पतियों में प्रवेश करा देता है। उन्हीं वनस्पतियों का रस एकत्रित हो करके बेटा! रेचस्तव बन करके वही माता के गर्भस्थल में बेटा! देखो, शिशु का उससे निर्माण होता है और निर्माण करने वाला वह मेरा प्यारा प्रभु है। बेटा! निर्माण के लिए मैने तुम्हें कई कालो में प्रगट करते हुए कहा है यह परमपिता परमात्मा निर्माण करने वाला, मन मस्तिष्क का और मेरे प्यारे! देखो, उसी के पञ्च प्राण अथवा पञ्च उप प्राण, दस प्राणो का निर्माण

होता है। मेरे प्यारे! देखो, वह बुद्धि भी जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, और प्रज्ञावी। मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि से दृष्टिपात करता है मेधावी से उसे प्रयोग में लाता है, ऋतम्मरा में मौन हो जाता है और प्रज्ञा में बेटा! देखो, वह परमात्मा का दर्शन करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह बुद्धियों का निर्माण भी मानो देखो, इसी प्रकार मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार चित्त अहङ्कार मानो देखो, यह चित्त अहङ्कार की प्रतिया भी मानो देखो, उस आपो से उत्पन्न होती है। हमें उसकी आभा में रत्त होना चाहिए। तो विचार वेत्ता कहते है कि वे ब्रह्मणा कृतं देवत्वाम्, हे माता तू अपने में महान है। जब तू प्राण को अपान में मिलान करती है और अपान को व्यान में और व्यान को समान में समान को उदान में तो वह अपने गर्भस्थल के अन्तः शिशु से देखो, तू उससे वार्ता प्रगट करने लगती है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस विज्ञान में जाना नही चाहता हूँ केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, यह आपो हमारा जीवन है और आपो ही मानो देखो, अञ्जलि में ले करके जल को उससे कहो प्राणाय स्वाहाः क्योंकि प्राण ही तो भक्षक करता है और प्राण से ही मुनिवरों! देखो, उस महान आपो से ही पिण्डो का निर्माण होता है।

पृथ्वी की रज द्वारा याग

तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणे जब यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यह भी मैने जान लिया परन्तु कही ऐसे अवसर प्राप्त हो जाते है कि जल भी प्राप्त नहीं होता और याग की इच्छा होती है तो हम कैसे करे? तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा कि तुम यदि यह प्राप्त न हो तो तुम पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, कह करके हूत प्रारम्भ करो मानो देखो, वहीं तुम्हारा जीवन है वहीं तुम्हारे जीवन की प्रतिष्ठा कहलाती है क्योंकि संसार में जब भी इस संसार में पिण्डो के निर्माण होते हैंतो मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के परमाणु होते है और वह देखो, तेजोमयी, तरलतव और देखो, गुरूतव यह देखो, तीन प्रकार के परमाणुओ से वैज्ञानिक जन इन्हीं परमाणुओं से बेटा! यन्त्रों का निर्माण करते है और इन्हीं परमाणुओं से मानो लोक

लोकान्तरों के सब पिण्डो का निर्माण होता है। माता के गर्भस्थल में यह मानो पिण्ड का निर्माण होता है जिसमें बेटा! देखो, हृदय भी दो, एक लघु मस्तिष्क में हृदय होता और एक हृदय मुनिवरों! देखो, एक शरीर के मध्य में होता है और मन, बुद्धि, चित, अहङ्कार पञ्च प्राण है और बुद्धियां है देखो, रेतस्तव माना गया है। मेरे प्यारे। देखो, पञ्च महाभूतो की रचना में विद्यमान होने वाला आत्मा जो क्रिया शील बना रहता है। तो विचार आता है यह जो पिण्ड है यह कौन निर्माण करता है? पिण्ड, मेरे प्यारे इन परमाणुओं से ही तो उनका निर्माण होता है, निर्माण करने वाला मेरा प्रभु है। इस मानव शरीर में बेटा! बहतर करोड़ बहतर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों को निर्माण होता है उन निर्माण वाले ही मानो देखो, यह पिण्ड कहलाता है। जो मानो देखो, इन्हीं के द्वारा खेचरी वाणी उच्चारण करता है। कहीं मानो देखो, ध्वनियों को श्रावण करता है कहीं मुनिवरों! देखो, अन्नाद को अपने में धारण करने लगता है। इसी को जान करके योगेश्वर बनता है, इसी को जान करके विज्ञानवेत्ता बनता है। वैज्ञानिक जन बेटा! इन परमाणुओ को ले करके अपने यन्त्रों का निर्माण करते है, कहीं मानो देखो, वह नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में गमन करने लगते है।

मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है जब महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहां बेटा! ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन करते रहे है और अध्ययन करते हुए मानो देखो, नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते हुए नाना लोक लोकान्तरों में बेटा! गतिवान होते रहे हैं। आज मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, केवल यह महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहां जब महर्षि भारद्वाज और भी नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे तो बेटा! वह यन्त्रों में विद्यमान हो करके जब अपनी मानवीय यन्त्रम् ब्रह्मा उसमें प्रवेश करके और यन्त्रों में निर्माणित हो करके गमन करते तो बेटा! यहां से, पृथ्वी मण्डल से, ऋषि के आश्रम से मानो जब यन्त्र उड़ाने उड़ता है तो बेटा! वह मङ्गल में जाता। सबसे प्रथम चन्द्रमा में जाता है, चन्द्रमा से बुद्ध में जाता है, बुद्ध से शुक्र में जाता है, शुक्र से मङ्गल में जाता है, मङ्गल से मुनिवरों! देखो, रेत्वा मण्डल में

प्रवेश होता है, रेत्वा मण्डल से उड़ान उड़ करके वह अरुन्धति में प्रवेश करता है, अरुन्धति से उड़ान उड़ता है तो वशिष्ट मण्डल में जाता है और वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ता है तो व्रेतकेतु मण्डल में प्रवेश कर जाता है और व्रेतकेतु मण्डल से उड़ान उड़ करके वह स्वाति नक्षत्र में प्रवेश हो जाता है और स्वाति से उड़ान उड़ता है तो भेंतरी व्रेत मण्डल में प्रवेश कर जाता है और भेंतरी मण्डल से उड़ान उड़ता है तो मूल नक्षत्र में प्रवेश हो जाता है और मूल नक्षत्र के मानवीयतव को दृष्टिपात करता हुआ बेटा! और और भी नाना मण्डलों में प्रवेश करता हुआ, मूल यह कि बहत्तर लोको का भ्रमण करके वह भारद्वाज मुनि के आश्रम में बेटा! वह शनै शनै यान अपने में प्रवेश करता रहा है। तो आज मैं बेटा! विज्ञान के युग में तुम्हे ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, उच्चारण यह हो रहा था अमृतम यह पिण्ड का स्वामी कौन है? बेटा! पिण्ड का निर्माण करने वाला यह आपो है, मानो गुरूतव है और यही देखो, तरलतव यह तीन प्रकार के परमाणुओं का मिलान किया जाता है। मानो तेजोमयी, तरलतव और गुरूतव इन परमाणुओं के मिलान से ही नाना प्रकार के विज्ञान में मानव प्रवेश करता रहा है।

अब विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रो! देखो, भव, वर्णास्तम् ब्रह्मा लोकाम वेद का महर्षि याज्ञवल्क्य कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम इस प्रकार मानो देखो, अपने में, अपनेपन में ही प्रतिष्ठित होते चले जाओ और तुम मानो देखो, यह पिण्डो का आकार दृष्टिपात करो। तुम जब देखो, पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपनाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो मानो देखो, इसी से पिण्ड बनते है। पिण्डो की चर्चा मैने बेटा! तुम्हे इसमें पूर्व काल में प्रकट की थी। नाना पृथ्वियो का निर्माण होता है, उनके पिण्ड बनते है, सूर्य का पिण्ड बनता है, चन्द्रमा का पिण्ड बनता है, मेरे प्यारे! देखो, ध्रुव और देखो, नक्षत्रों का पिण्ड बन करके बेटा! यह ब्रह्माण्ड एक अनुपमता में दृष्टिपात होता रहा है। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! यह पिण्ड किनसे बनते है? यह तीन ही प्रकार के परमाणु है, तीन ही मानो गुण कहलाते है रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण और तीन

ही ओ३म् की मात्रा है अ, उ और म् और तीन ही मेरे प्यारे देखो, भू, भुव, स्वः लोक ये तीन ही मण्डल कहलाए जाते है। यह त्रैतवाद में देखो, यह ब्रह्माण्ड अपने में गति कर रहा है। तीन ही पदार्थ है बेटा! आत्मा, परमात्मा, प्रकृति जिनके ऊपर यह जगत अपने में क्रियाशील हो रहा है। तो विचार विनिमय क्या बेटा! मैं त्रैतवाद के ऊपर कोई वार्ता प्रगट करना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार विनिमय यह मुनिवरों! यह जो संसार का पिण्ड बन रहा है यह गुरूतव के कारण है पृथ्वी का पिण्ड है एक पृथ्विया नहीं नाना पृथ्वियों के पिण्ड बनते हैं। मानो देखो, इन पिण्डों की माला बनी वह सूर्य धारण कर रहा है जैसा मैने आज वाक्यों की पुनरूक्तिया करना नहीं चाहता हूँ। तो विचार विनिमय वेद का ऋषि कहता है, याज्ञवल्क्य हे! ब्रह्मचारियों तुम मानो देखो, इसको जल अमृतम ब्रह्मा तुम रज को ले करके अञ्जलि में कहों प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा क्योंकि यह प्राण ही तो इसका भक्षण कर जाते है और यह अपने में धारण कर लेते है।

मेरे प्यारे! देखो, यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहां हे प्रभु! ये भी मैने आप का वाक स्वीकार कर लिया आपका ज्ञान बड़ा अनन्त है। हे प्रभु! मैं जानना यह चाहता हूँ क्या भगवन! कहीं देखो, ऐसा हो कि पृथ्वी की रज भी हमें प्राप्त न हो और हम याग करना चाहते है तो प्रभु! हम कैसे करे? बेटा! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि बोले, हे ब्रह्मचारी! यदि तुम याग करना चाहते हो और पृथ्वी की रज भी तुम्हे न प्राप्त होती है तो तुम एकन्त स्थली में विद्यमान हो जाओ और वेद मन्त्रों का उद्गीत होना चाहिए वेद मन्त्रों के साथ में कहों प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, सम्भूति ब्रह्मा प्राणम्ब्रह्मा लोकाम् व्रजस्व प्रव्हा स्वाहा वर्णा ब्रह्मे लोकाम् वासम ब्रह्वी दोऽगस्तम् देवस्वय दिव्याम भविते मङ्गलम वसी देवत्वाम स्वाहा। इस प्रकार तुम वेद का उद्गीत गाते रहो, वेद के मन्त्रों को उच्चारण करते रहो परन्तु स्वाहाः कहते रहो और एकन्त स्थलियों में बेटा! मन, मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए तुम जब याग करोगे तो तुम मानो इस लोक को विजय कर जाओगे। इस संसार में तुम विजेता को प्राप्त हो जाओगे, तुम्हारी इन्द्रिया मानो देखो, विजयी बन करके और तुम मानो देखो,

संसार के स्वामित्व को अपने में धारण करोगे। मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज मङ्गलम ब्रह्मा देखो, यह उच्चारण करके अपने में मौन होने लगे परन्तु यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! आप को धन्य है आप ने हमें मानो देखो, याग में अन्तिम छोर में पहुंचा दिया है कि मौन रह करके हम वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए, वेद मन्त्रों की धाराओं में रत्त रह करके हम अपने में मौन हो जाए और याग को हम कदापि न त्यागे क्योंकि याग वसु है। वेद का ऋषि कहता है याग वसु है। जब ही तो तुम संसार में बसोगे जब तुम याज्ञिक बनोगें और याग नहीं होगा, जीवन में सुन्दरता नहीं होगी, चरित्र नहीं होगा, मानवता नहीं होगी तो तुम बस नहीं सकोंगे इसलिए याग को वसु कहते है। तो मेरे प्यारे! मैं कई समय से वसु के ऊपर अपनी वार्ता प्रगट कर रहा हूँ आज मैं तुम्हें केवल यहीं वाक उच्चारण करने के लिए कि हमारा जीवन एक महानता में परणित होता रहे। महानता की वेदी पर हम सदैव रत्त रहे जिसमें हमारे जीवन की धाराए महान और पवित्रता की वेदी पर मानो देखो, पवित्रम ब्रह्मा व्रतम् हम अपने में देखो, विशाल बन करके, वैज्ञानिक बन करके अपने जीवन को अग्रणीय बनाए जिससे परमात्मा के राष्ट्र में परमात्मा के यज्ञरूपी संसार को हम जान सके मानो देखो, उसे अपने में धारण कर सके। ऐसा बेटा! देखो, ऋषि का आदेश ब्रह्मचारियों को प्राप्त होता रहा है। तो ब्रह्मचारी बेटा! देखो, विद्यालय में जब आचार्य इस प्रकार के तपे हुए होते है तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी भी महान होते है और जब ब्रह्मचारी आचार्य दोनो महान होते है तो उससे समाज पवित्र बनता है और जब समाज पवित्र बनता है तो बेटा! राष्ट्र अपनी आभा में पवित्रतव को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब राजा के राष्ट्र में देखो, सबसे प्रथम विद्यालयों की प्रणाली पवित्र होनी चाहिए। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने वाक्यों में कहा है क्या हे ब्रह्मचारियों! तुम आओ तपस्वी हो और तुम तपस्या में परणित हो जाओ, मानो आचार्य ब्रह्मचारी जब दोनों तपस्वी होते है। तपस्या का अभिप्राय है उनका आहार पवित्र हो उनका व्यवहार पवित्र हो और उनकी शिक्षा प्रणाली मानो देखो,

एक दूसरे को बुद्धि वर्धक हो तो इस प्रकार का जब देखो, प्रणालिया होती है वही प्रणाली मुनिवरों! देखो, राष्ट्र और देखो, समाज को सजातीय बना देती है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। आज का वाक केवल हमारा यह क्या हमारे यहां प्रातः कालीन विद्यालयों में इस प्रकार की नैतिक शिक्षाएं होनी चाहिए। नैतिक शिक्षा हो तो मुनिवरों! देखो, विद्यालय पवित्रता की आभा में परणित हो जाएंगे। यह जब होंगे जब आचार्य तपे हुए होते है और तप करके मुनिवरों! देखो, उनके अन्तर्हृदय प्रत्येक इन्द्रियों से जब सुगन्धि आने लगती है अरे, वही तो सुगन्धि रूपी तरंगे बेटा! हृदय को पवित्र बनाती है और उसी से हृदय पवित्र हो करके बेटा! देखो, समाज का वायुमण्डल पवित्र बन जाता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वाक सममब्रह्मे अब मेरे प्यारे महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवम् भद्रा मनुः वाचन्नमः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे मानो एक एक आख्यिका में ऐसा हमें प्रतीत हो रहा था जैसे यह संसार इसी में निहित हो। परन्तु जब अग्रणीय वाक आया तो इसमें यह प्रतीत हुआ कि इसी में भी संसार है। तो विचार कि गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। आज का हमारा वाक्, मैं इसलिए उच्चारण कर रहा हूँ क्या यह हमारी जो आकाशवाणी हमारी जो वृत्तिया है यह मृत मण्डल में ऐसी स्थली में प्रवेश कर रही है जहां एक याग का वातावरण बना हुआ है और याग अपने में बहुत ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप माना गया है। जिसके ऊपर ऋषि मुनि परम्परागतो से इसके ऊपर अपनी विचारधारा प्रगट करते रहे है और ब्रह्माण्ड को और पिण्ड को, दोनों को एक सूत्र में ला करके और उन्होंने याग की कल्पनाएं की है। आज मेरा अन्तरात्मा इसलिए प्रसन्न युक्त क्या यह जो वर्तमान काल चल रहा है यह वाम् मार्ग काल मैं इसको कहा करता हूँ। यहां सुरा और सुन्दरी और द्रव्य की लोलुपतता में मानव अपने जीवन को व्यतीत कर रहा है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कोई ऐसा वाक नहीं

उच्चारण करूँगा मेरे वाक कटुता में तो अवश्य होंगे परन्तु उससे पूर्व यहीं वाक क्या आधुनिक काल का जो समाज है वर्तमान का चाहे वह राष्ट्र वेत्ता हो, राजा हो, चाहे प्रजा हो परन्तु दोनों एक दूसरे के स्वार्थपरता में लगे हुए है। तो मैं इस वाक्यों को विशेषता नहीं केवल यह कि मैं आज, मैं अपने यज्ञमान को अपना सुविचार देने के लिए हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहें और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। जिस गृह में दृव्य का सदुपयोग होता है वह गृह स्वर्ग कहलाता है और जिस गृह में द्रव्य का दुरूपयोग होता है, सुरा और सुन्दरी में लगा रहता है वह द्रव्य मानव को नारकिक बना देता है इसीलिए द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। उसमें देवतत्व होना चाहिए उस द्रव्य में राष्ट्रीयता होनी चाहिए।

राजा एवम् राष्ट्र

परन्तु राजा को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। राजा के राष्ट्र में भिन्न भिन्न प्रकार की रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। हमारे यहां मैने बहुत पूर्व काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करते हुए कहा था कि रावण के राष्ट्र में भी नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गई थी। ईश्वर के नाम पर जब समाज में रूढ़ि बन जाती है तो वह समाज आज नहीं तो कल अवश्य नष्ट हो जाएगा। राष्ट्रीय पद्धति भ्रष्ट हो जाती है और जब राजा के राष्ट्र में एकोकी विचार होते है, एकोकी महानता परमात्मा के प्रति होती है तो उस राजा के राष्ट्र में एकता का सूत्र मानो देखो, जैसे धागे में नाना मनके पिरो करके और वह माला बन जाती है इसी प्रकार माला के सदृश समाज बन जाता है। तो विचार आता रहता है मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ केवल अपने पूज्यपाद गुरुदेव को अवगत करा रहा हूँ क्या रावण के राष्ट्र में राक्षस एक सम्प्रदा थी जो राजा रावण ने जिस सम्प्रदा को अपनाया। देवी सम्प्रदाय को अपनाने वाले देव्यव्रहा व्राहतकेतु वर्णाम्ब्रह्मा देखो, वह राजा रावण के पुत्र मेघनाथ जी का मत कुछ और था, उनकी सम्प्रदाय कुछ और थी। परन्तु इन सम्प्रदायों में जब अशान्ति हो गई एक दूसरे के विचारों में विभिन्नता, देखो, राम मत को मानने वाला विभीषण

उनका विधाता था और इसी प्रकार नाना प्रकार के सम्प्रदायों का जब जन्म हो गया तो उस समय राष्ट्र का विनाश हो गया। मानो देखो, राष्ट्र अग्नि के काण्ड बन करके नष्ट हो गया। इसी प्रकार यह जो वर्तमान का काल है इसमें भी नाना प्रकार के सम्प्रदाय है और उन सम्प्रदायों में बड़ी त्रुटिया है। सिद्धान्त रूप में उन सैद्धान्तिक रूपों से राजा को चाहिए कि राजा वेद का देखो, क्या, ब्रह्मज्ञान का अध्ययनी हो और ब्रह्मज्ञानी हो। राजा की मध्यस्थता में देखो, सब सम्प्रदायों के आचार्यों को एकत्रित किया जाए और एकत्रित करके उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए, विचार विनिमय होना चाहिए। राजा की मध्यस्थता में, ब्रह्मवेत्ताओ की मध्यस्थता में जब इस प्रकार का विचार विनिमय होता है तो मानो देखो, राष्ट्र को जो धर्म विज्ञान और मानवीयता का जो विचार स्थिर हो जाए उसको अपनाना राष्ट्र का कर्तव्य है। जो वैज्ञानिक दृष्टि से और देखो, जो ब्रह्म ज्ञान की दृष्टि से सिद्ध हो जाए उसको अपनाना राजा का कर्तव्य है और वह राजा जो इस प्रकार का अपनाने वाला बनता है तो नाना प्रकार के जो ईवश्र के नाम पर नाना सम्प्रदाय है वह समाप्त हो जाते है और जब तक यह समाप्त नहीं होते एक दूसरे के विचार नहीं मिल पाते। जब विचारों में साम्यता नहीं आयेगी तो मानो देखो, विचारों में रक्त भरी क्रान्ति अवश्य आयेगी। तो रक्त भरी क्रान्ति जब आती है एक दूसरा प्राणी, प्राणी को नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाता है। प्राणी प्राणी देखो, उग्रवाद को धारण कर लेता है और धारणा क्यों करता है क्योंकि ईश्वर के नाम का उसे ज्ञान नहीं रहा। धर्म और मानो मन मस्तिष्क मानो देखो, उसका पवित्र न रहने से मानो देखो, वह द्रव्य की लोलुपता में रत्त हो गया।

ब्रह्म हत्या

जब राजा के राष्ट्र में ऐसी शिक्षा दी जाती है क्या परमात्मा तो मानो सर्वत्र विद्यमान है परमात्मा एक महानता में रत्त रहता है। वह विज्ञान का स्वामी है, वह ज्ञान का स्वामी है। अन्तरात्मा में जब भावना आती है प्रत्येक मानव कहता है अरे, मानव तू ब्रह्महत्या न कर, ब्रह्महत्या कौन करता है? मानव देखो, ब्रह्मण ब्रह्मा कृतं देवा

ब्रह्म की ओर

जो बुद्धिमान आत्मा की मानो देखो, त्रास करता है वह ब्रह्म हत्या है और जो अपनी अन्तरात्मा देखो, आत्मा ब्रह्मे वाणी आत्मा की प्रेरणा को जो नष्ट करता है वह भी ब्रह्महत्या कर रहा है। यहां ब्रह्महत्या नहीं होनी चाहिए जब ब्रह्म हत्या होती है तो राष्ट्र का राष्ट्र के ऊपर दोषारोपण आता है और ब्रह्म हत्या क्या है? देखो, अपनी अन्तरात्मा आत्मा को ब्रह्म कहते हैं। आत्मा की जो प्रेरणा है उसे जो नष्ट कर रहा है मानो देखो, वह ब्रह्म हत्या कर रहा है मानो सुरापान कर रहा है परन्तु आत्मा उसे प्रेरणा देती है परन्तु वह प्रेरणा अम्ब्रहा वह बाहर जगत में अपने को ले जाता है परन्तु आत्मा की हत्या कर रहा है, ब्रह्म हत्या कर रहा है। अरे, ब्रह्म हत्या न होने दो यदि ब्रह्म हत्या हुई तो यह राष्ट्र और समाज मानो देखो, एक समय आयेगा जब रक्त भरी क्रान्ति बन करके रह जाएगा। परन्तु देखो, आत्माम भूतम ब्रह्मा देवत्वाम् वेद का वाक कहता है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! परम्परागतो से यह शिक्षा देते रहे है, क्या, आत्मा की प्रेरणा को स्वीकार करो और जो आत्म प्रेरणा को स्वीकार करता है वहीं देखो, ब्रह्म की रक्षा कर रहा है वही ब्रह्मवादी है और ब्रह्मवादी बन करके देखो, अपने मानवीयतव को ऊंचा बनाता है।

तो आज का विचार मैं विशेष न देता हुआ केवल यह कि देखो, हमारे यहां यदि समाज को ऊंचा बनाना है तो राजा को जय होना होगा, प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर संयम होगा और ब्रह्मवेत्ता बन करके राष्ट्र मानो देखो, जब गमन करेगा तो देखो, उसका राष्ट्र पवित्र बनेगा और जब राजा ब्रह्मवेत्ता नहीं होगा और वह रूढ़िवादी बन जाएगा और देखो, जब रूढ़ि उसके मस्तिष्क में सदैव तत्पर रहेगी और यहाँ नाना प्रकार के रूढ़ियों को देखो, नष्ट नहीं करेगा तो वह राजा देखो, राजा नहीं कहलाएगा। उस राजा का समाज आज नहीं तो कल अवश्य बिखर जाएगा, विचार बिखर जाएंगें रक्तभरी क्रान्तियां आ जाएगी। तो आज का हमारा केवल यह वाक है क्या मैं सदैव यह वाक अपने पूज्यपाद गुरुदेव को अवगत कराता रहता हूँ क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव! जब किसी मानो देखो, राष्ट्र में जाते थे तो राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नहीं करते थे। क्योंकि राष्ट्र का अन्न मानो देखो, किस किस प्रकार का

होता है बुद्धि समाप्त हो जाती है। राजा वह ब्रह्म वेत्ता बन सकता है जो अपने यहां स्वयं पुरुषार्थ करके जिस अन्न को पान करता है, राष्ट्र का क्रियाकलाप करता है वह राजा देखो, अपने में ब्रह्मवेत्ता बन सकता है। जो उसका अन्न ही पवित्र नहीं होगा तो आज तब इन्द्रियां कैसे पवित्र हो सकेंगी। जब महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में जाने का पूज्यपाद गुरुदेव! के द्वारा जाने का गर्भ सौभाग्य प्राप्त होता तो वह स्वयं देखो, कृषि का उद्गम् करते और वसुन्धरा के गर्भ से जो अन्न उत्पन्न होता उसको पान करते। कामधेनु गऊ के दुग्ध का आहार करते और राष्ट्र मे मानो देखो, अपने में क्रियाकलाप करते थे। राष्ट्र प्रसन्न रहता, प्रजा प्रसन्न रहती परन्तु देखो, जब ज्ञान ही नहीं है तो देखो, अज्ञान की यहीं अव्रता देखो, यह रक्त भरी क्रान्ति में समाज परिवर्तित होता जा रहा है। उसका मूल केवल यह ही मैं जान पाया हूँ कि नाना प्रकार की जो ईश्वर के नाम पर रूढ़िया है वह रूढ़िया समाप्त होनी चाहिए। रूढ़ियों को समाप्त करके, सब, प्रत्येक राजा अपने में संगठित हो करके ब्रह्मवेत्ता देखो, अपना वह ब्रह्म का बखान करते हुए, ब्रह्म का उपदेश दे कर के निर्मोही बनते है। राजा का और मोह का कोई सम्बन्ध नहीं होता। मानो जैसे योगी का, मोह का, काम का कोई सम्बन्ध नहीं होता ऐसे राजा होने चाहिए। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मैं अवकाश पाऊंगा अब मानो देखो, मेरा यही आव्रतम् ब्रह्मा यही विचार रहता है हे यज्ञमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए और देखो, जब प्रत्येक गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है यह द्रव्य ही माता बन करके, यह लक्ष्मी बन करके तुम्हारे गृह को सजातीय बना देगी और यदि तुम देखो, लक्ष्मी का दुरूपयोग करते रहोगे सुरा सुन्दरियो में लगाएं रहोगे तो एक समय आयेगा यह लक्ष्मी तुम्हें त्याग देगी! मानो देखो, तुम अपने में देखो, द्रव्य हीन बन करके और अपने में मानो कृतियों में रत्त हो जाओगे। तो अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा और यज्ञम् भवसप्रे क्या यागाम ब्व्हे हे यज्ञमान!। तुम्हारा जीवन महान बना रहे ऐसी मेरी कामना रहती है।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी! ने अपने

बड़े भव्य विचार दिए है। इन विचारों में बड़ी सार्थकिता, ऊर्ध्वा में विचार जो परम्परागतो में जब यह उपदेश अयोध्या में या प्रत्येक राष्ट्रों में प्रायः होते रहे है इस प्रकार का इन्होंने आज विचार दिया। अब इसके साथ ही हमारा यह विचार सम्पन्न होने जा रहा है। विचारों का अभिप्राय यह क्या मानव को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए महानन्द जी के शब्दों में ब्रह्म हत्या नहीं होनी चाहिए और हमारे विचार केवल यहीं कि मानव अपने विद्यालयों में अपने में नैतिकवाद होना चाहिए और याग मानो देखो, आध्यात्मिक और भौतिकवाद, दोनों मानो याग से मानव देखो, जकड़े हुए रहते है दोनो उसके स्तम्भ माने गएं है। तो आध्यात्मिक याग और भौतिक याग दोनों का समन्वय होना चाहिए जिससे मानव, मानव का सहायक बन करके इस संसार को माला के सदृश अपने में भोगने वाला हो ऐसा विचार! अब आज का वाक समाप्त, अब वेदो का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वाचन नमः ओ३म् तनु ग्रहिता रथम् आप्याम् देवाःओ३म् जनु तारथम आभ्याम् देवम् आ पाःअच्छा भगवन्!।

2. 920207-विष्णु का स्वरूप पुस्तक ब्रह्म की ओर

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुण गान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी है और उसका ज्ञान और विज्ञान अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए है परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। वह सीमा से रहित है और वह सीमा मे आने वाले नही हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान की महिमा का वर्णन करते रहे हैं। क्योंकि हमारे ऋषि मुनि जिस भी काल में एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके विचार विनिमय करने लगे, तो उसके ज्ञान और विज्ञान की महिमा का बखान होने लगा और उन्होंने एक एक वस्तु को ज्ञान और विज्ञान से मापने का प्रयास किया। कोई भी वाक्, कोई भी उनका ज्ञान ऐसा नही जिसका कोई न कोई मूल्य न हो वह मूल्य से मानो अवृत हो रहा है इसीलिए हम उस परमपिता के ज्ञान और विज्ञान की प्रायः अपने में महिमा का वर्णन करते रहे हैं, और यह जो परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञानमयी यह ब्रह्माण्ड है, यह प्रायः अनन्तवत माना गया है। इसके ऊपर मानव ने एक एक अणु और परमाणु के ऊपर विचार विनिमय किया अथवा उसका मिलान करने का भी प्रयास किया। नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया गया है। परन्तु जब उसके लिए अवरत अपने में समाधिष्ट हो गये हैं, मन और प्राणों का दोनों का एक समूह बना करके और ब्रह्माण्ड को बेटा! देखो, देखो, लघुमस्तिष्क को अपने अन्तरात्मा में दृष्टिपात करने का प्रायः प्रयत्न होता रहा है।

विष्णु की विवेचना

ब्रह्म की ओर

आओ मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र हमे जहां परमपिता परमात्मा की महिमा का बखान कर रहा है, वहां आज का हमारा वेदमन्त्र बेटा! यह कि विष्णुम् ब्रह्मा विष्णु रुद्र प्रव्हा कृतम वसु। हमारे वदमन्त्रों में बेटा! उस विष्णु की महिमा का वर्णन आ रहा था। जिस विष्णु की चर्चाएं हम बारम्बार बारम्बर करते रहते हैं। उसकी महिमा का बखान करते रहते हैं और विचारते रहते हैं कि वह परमपिता परमात्मा विष्णु है, और वह मानो पालन करने वाला है, विष्णु का अभिप्राय, जो पालन करने वाला हो। परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है हमारे यहां साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्दों को प्रायः विवचेना होती रही है और यहां पर्यायवाची शब्दों में कहा गया है कि विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है। परन्तु मूल यह कि जहां भी रक्षा का प्रसंग आता है कोई भी रक्षक हो, परन्तु मूल यह विष्णु के नाम से उसी को वर्णित किया गया है। तो मुनिवरों! देखो, यहां परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है और विष्णु नाम माता का है क्योंकि वह भी पालन करने वाली है, अपने गर्भ से ले करके और बाह्य जगत तक मानो देखो, हम सब शिशुओं की रक्षा करने वाली है। इसीलिए वह परमपिता परमात्मा को तो विष्णु कहा ही जाता है। परन्तु यहां माता का नाम भी विष्णु है। परमात्मा का नाम वसु है। क्योंकि उसके गर्भ में बेटा! यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड वशीभूत हो रहा है। तो माता का नाम भी वसु है, क्योंकि वह वसु होने से अपने में बसा लेती है। मानो देखो, शिशु पनप रहा है और बस रहा है वह माता के आंगन में वशीभूत हो रहा है। इसी प्रकार बेटा! देखो, वसु और विष्णुम् ब्रह्मा व्रत्यम् देवत्वाम् विष्णु क्या उस परमपिता परमात्मा का माता का नाम विष्णु है। उसी में हम वशीभूत रहते हैं। परन्तु जहां इनका नाम विष्णु है, वहां आत्मा का नाम विष्णु है। आत्मा का जब तक शरीर में विद्यमान रहता है यह मानव चेतनित बना रहता है और आत्मा मानो योगाभ्यास के द्वारा मानव जब आत्मा को जान लेता है, तो बेटा! उसका नाम विष्णु है और वेदज्ञ बन जाता है, आत्मा इस शरीर में नही रहेगा तो मानव शून्यवत को प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए आत्मा का नाम भी विष्णु है जहां आत्मा का नाम विष्णु है

वहां सूर्य का नाम विष्णु है, क्योंकि सूर्य प्रकाश देता है हमे जीवन देता है, हमारी रक्षा करता है। प्रातःकाल में उदय होता है नाना प्रकार की वनस्पतियों को नाना प्रकार का मानो अपने में ओजस और तेजस दे करके और वह नाना प्राणियों का बेटा! अपने में पालक बना हुआ है मानो चन्द्रमा का समन्वय जब सूर्य से होता है तो सूर्य से वह प्रकार ले करके और उसे शीतल बना करके अमृत देता है जिससे मानव अमृतमयी बन जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, यह सूर्य का नाम विष्णु है।
आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है विष्णु व्रत्यम् विष्णु क्या विष्णु मानो देखो, वसु है। यज्ञोमयी विष्णु क्या याग का नाम भी विष्णु माना गया है। यदि मानव सुक्रियाकलाप नही करेगा यागों का अभिप्राय यह है कि जितने भी सुक्रियाकलाप है, देवत्व है मानो वह सर्वत्र याग माने गये हैं यदि यह क्रियाकलाप पवित्र नही होगा तो मानव बस नही सकेगा। इसीलिए वेद कहता है यज्ञोमयी विष्णु हे विष्णु! तू हमारा कल्याण करने वाला है देवत्व कहलाता है तो इसीलिए बेटा! उस परमपिता परमात्मा और नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों में विष्णु की विवेचना होती रही है, मैंने तुम्हे विष्णु की बहुत पूर्व काल में नाना रूपों में इसका विश्लेषण किया और यह कहा कि विष्णाम् ब्रह्मा वर्णं व्रह्मे देवाम् हे विष्णु! तू कल्याणकारी है। मानो जो सत में रत्त रहने वाला है।

राजा का नाम विष्णु

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं राजम् ब्रह्मा देखो, राजा का नाम विष्णु है। राजा भी मानो देखो, पालक है और वह अपने राष्ट्र में अपने में सुचरित्र हो करके और राष्ट्र को मुनिवरों! देखो, वह विष्णाम् ब्रह्मा देखो, विष्णु बन करके राष्ट्र का पालन कर रहा है, वह पालन करने से ही उसका नाम विष्णु है हे मनम् ब्रह्मा देव्रतम् हमारे यहां देखो, राजा का नाम विष्णु है, माता का नाम विष्णु है नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों में बेटा! विष्णु की विवेचना होती रही है। तो आओ मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र यह क्या कह रहा है कि विष्णु ब्रह्मणा तू अमृत के देने वाला है, वसु वर्णनम् ब्रह्मा तू अपने में बसाने वाला है। तो परमात्मा के बेटा!

नाना पर्यायवाची शब्द माने जाते हैं। आज मैं तुम्हें उन पर्यायवाची शब्दों में ले जाना नही चाहता हूं क्योंकि वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार की विवेचना होती रही हैं।

अक्षयक्षीर सागर

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है हे विष्णु! तू अक्षयक्षीर सागर में रहता है वेद का मन्त्र कहता है कि यह विष्णु अक्षयक्षीर सागर में रहता है और अक्षयक्षीर सागर में मेरे प्यारे! वहां लक्ष्मी चरणों में ओत प्रोत है और गन्धर्व गान गा रहा है। नारद अपनी वीणा के लिए विणित हो रहा है और मुनिवरों! देखो, वह अक्षयक्षीर सागर में शेष नाग की शैय्या पर विद्यमान है। ऐसा मुझे बेटा! एक समय महर्षि श्रेतकेतु ने इसकी विवेचना प्रगट कराई। उन्होंने कहा कि वह अलंकार है, हमारे यहां अलंकार और साहित्य दो वस्तु मानी जाती हैं। परन्तु अलंकार और साहित्य क्योंकि साहित्य में यदि अलंकार को मिश्रित किया जाता है, तो मुनिवरों! देखो, साहित्य में दूषितपना आ जाता है और जब अलंकार में साहित्य को स्वीकार करते हैं जब अलंकार और साहित्य दोनों अपने में भ्रमित हो जाते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! अलंकार अपने में अलंकारित रहना चाहिए, उसको अलंकृत करना चाहिए। और विचारना चाहिए कि इसके स्वरूप को हमे विचारना है। तो मेरे प्यारे! देखो, एक समय आदि आचार्यों का बेटा! जैसे महर्षि कागभुषुण्ड जी इत्यादि अपने में यह विचार विनिमय कर रहे थे एक समय उन्होंने महर्षि लोमश मुनि से कहा क्या हे भगवन्! यह क्या है प्रभु! मानो अक्षयक्षीर सागर नाम ब्रह्मे वेदमन्त्र आता है विष्णु ग्रतम् देवत्वम् ब्रह्म ब्रव्हा वाचन्नमम् ब्रह्मे देवत्वाम् लक्षणाम् ब्रह्मे क्या हे प्रभु! यह वेदमन्त्र की विवेचना करने से ऐसा प्रतीत होता है क्या देखो, वह परमपिता परमात्मा शेष नाग की शैय्या पर रहता है और वह अक्षयक्षीर मानो देखो, विद्यमान है। तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय महर्षि ने वर्णन करते हुए कहा कि यह अलंकार है, हमारे यहां वैदिक मन्त्रों में अलंकार आता है। अलंकृत इसीलिए किया जाता है किसी भी वाक को और किसी भी गाथा और

विचार को जब हम सजातीय बनाते है तो उसमें एक अलंकारिक वार्ता प्रारम्भिक हो जाती है और वह अलंकार से मानो देखो, सजातीय बन जाता है। जैसे हमारे यहां देखो, अहिल्या नाम रात्रि को कहा जाता है। अब रात्रि अहिल्या इसीलिए क्योंकि चन्द्रमा को गौतम कहते हैं। उसका प्रकाश और देखो, रात्रि का जो अन्धकार है, उनका दोनों का जब समन्वय हो जाता है तो मेरे पुत्रों! देखो, प्रकाश प्रकाश हो जाता है और प्रकाश अन्धकार को अपने में सम्मलित कर लेता है। अपने में मिलान कर लेता है। उसको सम्भोक्ता का एक नृत माना गया है, तो यह अलंकार अपने में बेटा! अलंकृत किया गया है।
तो आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि हमारे यहां आत्मा का नाम विष्णु माना गया है। मैंने विष्णु की विवेचना करते हुए कई समय कहा है, क्या जब साधक योग साधना में परिणत होने लगता है तो बेटा! यह अलंकार मानो अपनी स्थली पर स्थित हो जाता है। तो वेदमन्त्र कहता विष्णाम् ब्रह्मा व्रतव प्रव्हा मेरे प्यारे! देखो, जब साधक अपने में साधना में परणित होता है, तो उस समय वह मुनिवरों! देखो, विष्णु के ऊपर अपना चित्रण करता है और विचार विनिमय करता है कि हम अमृतम् आत्माम् विष्णाम् ब्रह्मा। मेरे प्यारे! यह आत्मा विष्णु है, और विष्णु इसीलिए क्योंकि यह शरीर को चेतनित बनाए रहता है और जब मानो देखो, साधक इसको जब विष्णु वास्तव में बनाना चाहता है योगाभ्यास के द्वारा तो उस समय बेटा! साधना करता है और साधना में जब परिणत होता हुआ अपने को ले जाता है। तो बेटा! कहता है विष्णाम् ब्रह्मा विष्णा ब्रव्हा वसु यह मानो देखो, वसु कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, वेदमन्त्र में जब इस प्रकार का तो साधको ने इसकी विवेचना की है, उन्होंने कहा कि जब यह आत्मा अक्षयक्षीर सागर में मानो विष्णु अक्षयक्षीर सागर में रहता है। अक्षयक्षीर सागर नाम कहते है बेटा! ज्ञान रूपी जो विवेक होता है उसका नाम अक्षयक्षीर सागर है और जब आत्मा में ज्ञान और विवेक दोनों बलवती हो जाते हैं। तो बेटा! यह जो मन रूपी नारद है, जो अपनी चञ्चल रूपी वीणा को त्याग देता है और

चञ्चल रूपी वीणा को त्याग करके यह शान्त हो जाता है और यह गन्धर्व नाम बुद्धि का है और वुद्धि मुनिवरों! अपने में गान गाने लगती है जब विवेक उत्पन्न होता है तो बुद्धि स्थिर हो करके गान गाने लगती है, इसको क्योंकि हमारे यहां बुद्धि का नाम रेणुका भी बुद्धि को कहा जाता है मुनिवरों! जहां देवता इसे अपने में धारण करते हैं, तो यही बुद्धि यज्ञ के दस पात्रों में प्रवेश कर जाती है। तो आज मैं बेटा! शतपथ मानो देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विचारों में नही जाना चाहता हूं। केवल विचार विनिमय क्या ऋषि कहते हैं अमृतं ब्रह्मा विष्णु तो मेरे प्यारे यह अक्षयक्षीर सागर में रहता है। और मुनिवरों! देखो, जहां ब्रह्मा शेष नाग की शैय्या पर विद्यमान होते हैं शेष नाग कहते है जो पांचों फनों वाला शेष नाग हो जिसके पांच फन हो बेटा! काम, क्रोध, मद, लोभ यह साधक के लिए बड़े बाधक होते हैं और यह मुनिवरों! देखो, आवांछनीय होते हैं तो इनको साधक देखो, त्याग करके और इनको नीचे दबा करके मुनिवरों! देखो, उसमें विष्णु विद्यमान होता है और जो लक्ष्मी है जो संसार को लुभायमान करती है इसमें चञ्चलता की वृत्तियां होती हैं। तो बेटा! देखो, अपनी चञ्चलता को त्याग करके यह मानो ब्रह्मणा व्रत्यम् देवत्वाम् यह देखो, चरणों मं ओत प्रोत हो जाती है।

साधना का कर्म

मेरे प्यारे! देखो, साधक जब अपने में साधना करता है तो साधना देखो, हमारे यहां ऐसा माना गया है सबसे प्रथम यह मूला-यह मुनिवरों! देखो, आत्मा और प्राण और मन का जब इनका सबका समन्वय होता है तो चित्त के मण्डल को लेकर के बेटा! सबसे प्रथम यह मानो देखो, यह मूलाधार में प्रवेश करता है। और मूलाधार से ही जब गमन करता है यह प्राणम् ब्रह्मा आत्माम् भूत प्रव्हे तो बेटा यह नाभि चक्र से हृदय चक्र में और हृदय चक्र से बेटा! देखो, यह कण्ठ चक्र में, मानो देखो, गति करने लगता है नाभिचक्र में जा करके वायु पर अपना आक्रमण करता है, वायु को विजय कर लेता है और जब यह हृदयचक्र में जाता है, तो समूह इन्द्रियों के ज्ञान विज्ञान को अपने में धारण कर लेता है तो मेरे प्यारे! जब

कण्ठ चक्र में जाता है तो यह मुनिवरों! देखो, वीणाम् ब्रह्मा गान विद्या को अपने में धारण कर लेता है। और जब यह मुनिवरों! देखो, त्रिवेणी के स्थान में जाता है, जहां ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना तीन देखो, तीन नदियों का मिलान होता है उसको त्रिवेणी कहते हैं। जहां तीन नदियों का या तीन नाड़ियों का जहां निर्माण होता है बेटा! ईंगला, पिंगला और सुषुम्ना जब यह सुषुम्ना में प्रवेश होता है तो मेरे प्यारे! देखो, यहां तीन प्रकार की जो धाराएं हैं उनको कृतिका कहते हैं और वह कृतिका में जब प्रवेश करता है तो बेटा! वहां प्रकाश आना प्रारम्भ हो जाता है और यह प्रकाशाम् भूतम् ब्रह्मा वर्णास्सुतम मानो देखो, जब वहां से गमन करके यह ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश कर जाता है और ब्रह्मरन्ध्र में जब प्रवेश करता है, तो यहां मानो देखो, नाना प्रकार की चक्रिका अपने में जब प्राण की धुकधुकी से जब गति करने लगती है। तो वह योगेश्वर बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड को साक्षात्कार दृष्टिपात देखो, ब्रह्माण्ड को साक्षात्कार दृष्टिपात करने लगता है मानो देखो, लोक लोकान्तरों की जो माला बनी हुई है, उन मालाओं को यह दृष्टिपात करने लगता है। क्योंकि यह नाना प्रकार के तारा मण्डलों की माला बनी हुई है, नाना सूर्य की माला बनी हुई है नाना चन्द्रमाओं की माला बनी हुई है, सूर्यों की माला बनी हुई है। मेरे प्यारे! देखो, यह पृथ्वी की मालाओं में प्रवेश हो करके और वाहन में विद्यमान हो करके वह ब्रह्माण्ड के लोक लोकान्तरों में अपने को मानो देखो, प्रवेशिका में अवकृत करा देता है।

विचार आता है बेटा! देखो, यह ब्रह्मरन्ध्र से ही देखो, इसमें तीन प्रकार के मस्तिष्कों का भान होता है, देखो, रेणु मस्तिष्क और लघु मस्तिष्क और वृत्तिका मस्तिष्क यह तीन प्रकार के मानो देखो, जिसको इन्द्र, सर्वत्र इन्धा वाचन इन्द्र, त्रेतकेतु इन्द्र बेटा! देखो, यह सर्वत्र यह साधको का विषय है। जब साधक मुनिवरों! देखो, इनमें देखो, नाना प्रकार के मस्तिष्कों में अपने इस ब्रह्माण्ड और प्रभु की सृष्टि को निहारने लगता है, तो बेटा! वह केवल परमात्मा के ही विषय को ले करके उसी के ऊपर विचार विनिमय करता है। जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह याग की ही चर्चा करता है। वह याग में ही मानो अपने को स्वीकार

करता है और वह अग्नि को देवताओं का दूत स्वीकार करता हुआ मानो देखो, अग्नि का ध्यान करता रहता है। इसी प्रकार हो योगेश्वर होते हैं वह केवल देखो, अपनी साधना में प्रवेश हो करके नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों को देखो, गणना में लाते रहते हैं, उन्हीं का उन्हें अवधान होता रहता है। विचार आता है बेटा! जब मैं इस ब्रह्माण्ड की चर्चाएं करने लगता है तो अन्तरात्मा बेटा! गद गद हो जाता है और मैं यह कहा करता हूं कि प्रभु का ये कितना अमूल्य जगत है यह कैसा अनुपम ब्रह्माण्ड है, जिसके ऊपर मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ही विचार विनिमय करता रहा है नाना प्रकार के विज्ञान में रत्त होता रहा है, कहीं हृदय को अगम्मय बना करके बेटा! इन्द्रियों के विषयों को जान करके इस ब्रह्माण्ड को अपने मैं मापने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं आज इस परमपिता परमात्मा का जो यह ब्रह्माण्ड रूपी अनुपम माला के सदृश्य हमे प्रायः यह जगत दृष्टिपात आता है, यह बड़ा अनुपम है और बड़ा अनुकरणीय है जिसके ऊपर हम सदैव अपने में विचार विनिमय करते रहे हैं।

विष्णु बनने का मार्ग

आओ मेरे प्यारे! देखो, मानव अपने वायुमण्डल को अपने को ऊंचा बनाने में परम्परागतों से बेटा! अपने में क्रियाकलाप करता रहा है यह विचारता रहा है कि मैं अपने में महान बनूं और पवित्र बनूं और विष्णु बनूं मानव देखो, विष्णु जब ही बनता है जब वह प्रकाश में वह वेदज्ञ बन जाता है। तो बेटा! जब यह आत्मा मानो देखो, यह पञ्च महा वर्णनम् पांच फनों वाले शेष नाग पर विद्यमान हो जाता है और वह शेष नाग क्या है? बेटा! मानो देखो, काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह यह पांच फनों वाला शेष नाग है इसको विजय करने वाला योगी होता है मेरे प्यारे! देखो, अति काम आता है, वह भी मानव की मृत्यु कर देता है। अति मानो देखो, लोभ आता है वह भी मृत्यु में ले जाता है, अति क्रोध आता है वह भी मृत्यु में ले जाता है काम, क्रोध, लोभ, मोह और मोह में ममतम् ब्रह्मा देखो, यह भी मृत्यु है। अमृतम् अभिमम् ब्रव्हा ऋतम् मानो देखो, तृष्णा भी नही होनी चाहिए। मेरे पुत्रों!

देखो, अमृतम् ब्रव्हा जब यह इस प्रकार नीचे दबा करके बेटा! उसके ऊपर विश्राम करता है, मानो देखो, वह योगी कहलाता है और यह जो लक्ष्मी है। जो संसार को लुभाने वाली है मानो देखो, कोई वितैष्णा में लगा हुआ है, और यह चाहता है कि मुझे वित्त ही वित्त प्राप्त हो जाए। तो बेटा! देखो, यह अमृतम् बन्धनम् ब्रव्हे वह अन्धकार में रत्त हो जाता है। परन्तु देखो, जब नीचे दबा कर लेता है इन तृष्णाओं को तो बेटा! देखो, यह लक्ष्मी उसके चरणों में ओत प्रोत हो जाती है लक्ष्मां भूतम् ब्रह्मा वर्णनम् ब्रव्हे उसके चरणों में ओत प्रोत हो जाती है लक्ष्मां भूतम् ब्रह्मा वर्णनम् ब्रव्हे ऋतम् देवत्वाम् लोकाः यह देवताओं की पुकार करने लगता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या वेद का मन्त्र कहता है क्या यह आत्मा विष्णु है और यह आत्मा विष्णु स्वरूप मैं जब यह वेदज्ञ बन जाता है मानो देखो, अपने में विजय करता हुआ, योग में प्रवेश करता हुआ, वेद के ज्ञान को जानने लगता है उसके मर्म को जानता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह आत्माम् भूतम् ब्रह्मणा वह विष्णु बन करके बेटा! यह जो शरीर रूपी साम्राज्य है शरीर रूपी राष्ट्र है, इसके ऊपर यह विजेता बन जाता है मेरे पुत्रों! देखो, इसी विचार को ले करके आचार्यों ने यह कहा कि राजा का नाम भी विष्णु कहा जाता है, आत्मा का नाम विष्णु है। तो राजा का नाम भी विष्णु है जहां सूर्य का नाम विष्णु आता है, वहां नाना प्रकार की ऊर्ज्वा दे करके और मुनिवरों! देखो, इस संसार को तपायमान करता रहता है। उसके मूल में नाना प्रकार का खाद्यान्न और खनिज पदार्थ देखो, उसी के गर्भ में विद्यमान है। नाना प्रकार की किरणों से उनको भग कहा जाता है। भगम् ब्रह्मा भगम् प्रवाणां ब्रव्हे लोकाम् वह मेरे प्यारे! देखो, उसमें नाना प्रकार की किरणों के द्वारा संसार को प्रकाशमान बनाता रहता है, एक प्रकार नही दो नहीं अनन्य प्रकाशों में वह रत्त हो जाता है।

महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां विष्णु शब्द में विज्ञान का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, जब मुझे ये वाक स्मरण आता है, क्या जब मुनिवरों! देखो, योगेश्वर नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों को अपनी गणना में लाता है। तो इसी

ब्रह्म की ओर

विचार को ले करके महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां बेटा! एक विज्ञानशाला का निर्माण हुआ था किसी काल में जहां बेटा! ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रेणकेतु और ब्रह्मचारिणी शबरी बेटा! विद्यामान हो करके और यह अपने में देखो, विचार विनिमय करते रहे हैं महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने जब मुनिवरों! देखो, इसके ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ किया। अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् वजस्तव प्रव्हा वृत्ति देवाः एक एक वेदमन्त्र को ले करके बेटा! अपनी अपनी विज्ञानशाला में मानो देखो, विष्णु शब्द को ले करके उन्होंने मुनिवरों! देखो, विज्ञान के अपने स्वरूप में ले गये। सूर्य की गणना नाना प्रकार की किरणों को ले करके और वह अपने स्वरूप में ले गए। सूर्य नाना प्रकार की किरणों को ले करके और वह अपने में गणना करने लगे। वेदमन्त्र जब उनके समीप आया सूर्याम् प्रथम ब्रह्मा पृथ्वी रूपाम् देव प्रव्हा लोकम् रचस्सुतम् प्रव्हा वायु सम्भवाः जब मुनिवरों! यह वेदमन्त्र उन्हें स्मरण आया तो इसके ऊपर विचार विनिमय करने लगे, ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा कवन्धि से हे प्रभु! हे भगवन! मैं इसके ऊपर विचार विनिमय तो कर रहा हूं परन्तु मैं रात्रि में और दिवस में भी इसी पर लगा हुआ हूं मैं यह चाहता हूं कि मेरे यहां यह जो नाना प्रकार की शालाएं हैं विज्ञानशाला है, इन विज्ञानशालाओं में मैं लोकों की गणना प्रारम्भ करूं तो भगवन! कैसे कर पाऊंगां। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि वेदमन्त्रम् ब्रव्हा करे। वेदमन्त्र यह कहता है कि नाना सूर्य है, नाना पृथ्वियां हैं, नाना चन्द्रमा हैं और नाना बृहस्पति माने गए हैं, यह वेदमन्त्रों में आता रहता है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा सम्भव ब्रव्हा। मुनिवरों! देखो, जब पृथ्वी के ऊपर गणना करने लगे दोनों ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि जब दोनों एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके अपनी अपनी यज्ञशाला में विज्ञान की वार्ताएं प्रगट करने लगे तो बेटा! कई मानो वर्ष हो गए और वर्षों हो करके उन्होंने भारद्वाज मुनि ने कहा कि हे प्रभु! मैं इन पृथ्वियों की गणना में लगा हुआ हूं। उन्होंने कहा अवश्य होना चाहिए। तो बेटा! उन्होंने अपनी विज्ञानशाला में तीस लाख पृथ्वियों की गणना की।परन्तु देखो, जब पृथ्वी की गणना में लाने लगे और तीस लाख

पृथ्वियां उन्होंने गणित में लाने का प्रयास किया तो भारद्वाज मुनि ने कहा प्रभु यह हमने देखो, यह इस प्रकार की पृथ्वियां जानी हैं। मेरे पुत्रों! उन्होंने यन्त्रों का निर्माण करने का प्रारम्भ किये। आज मैं विज्ञान के युग में तुम्हे ले जाना नही चाहता हूं, केवल यह कि हमारे यहां ऋषि मुनि विद्यमान हो करके अपने विद्यालयों में अपने मानो अपने अपने कक्ष में किस प्रकार का विचार विनिमय होता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब पृथ्वियां की माला उन्होंने जब दृष्टिपात की तो उस माला को धारण करने वाला सूर्य मानो यह सूर्य मण्डल इतना विशाल पाया जिसमें बेटा! तीस लाख पृथ्वियां उसमें समाहित हो जाएं। मेरे प्यारे! देखो, जब सूर्यों की गणना करने लगे, गणना करके एक सहस्त्र सूर्यों की गणना की वह बृहस्पति मण्डल में समाहित हो गया। एक सहस्त्र बृहस्पति बेटा! आरूणि मण्डल में समाहित हो गये, एक सहस्त्र आरूणी मेरे पुत्रों! देखो, ध्रुव में समाहित हो गये, एक सहस्त्र ध्रुव पुष्प नक्षत्र में समाहित हो गया, एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्र देखो, अमृतम् ब्रह्मा देखो, आरूणी व्रेतकेतु मण्डल में प्रवेश हो गया एक सहस्त्र आरुणी व्रेतकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया और एक सहस्त्र आरूणि केतु मण्डल मेरे प्यारे! देखो, वह कृतिका नक्षत्र में ओत प्रोत हो गया और एक सहस्त्र व्रेतकेतु मण्डल मेरे प्यारे! देखो, अचंग मण्डल में और अचंग मण्डल कृति मण्डल में प्रवेश हो गया और एक सहस्त्र कृति मण्डल गन्धर्व में ओत प्रोत हो गये। तो बेटा! मानो देखो, यह एक लोकों की माला बन गई और इतने लोकों को एकाग्र करते हुए ऋषि ने उनको सौर मण्डलों के रूप में वर्णन किया। मेरे प्यारे! देखो, हमारी पृथ्वी मानो राई कण के सामान्य बन जाती है। हमारा जीवन ही क्या है? मेरे पुत्रों! प्रभु का राष्ट्र इतना अनन्तमयी, इतना विशाल है क्या इसके ऊपर विचार वेत्ताओं ने बड़ा अनुसन्धान किया। महर्षि ब्रह्मचारी कवन्धि ने और सुकेता ने जब इस प्रकार की गणना की मानो इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बन गया। मेरे प्यारे! देखो, एक अरब छानवें करोड़ उन्नतीस लाक उनन्चासवी हजार मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् ब्व्हे देखो, पांच सौ बयासी के लगभग देखो, इतने सौर मण्डलों की एक आकाश गंगा बन गई। मेरे प्यारे! देखो, लगभग

देखो, एक अरब छियासी करोड़ उनतीस लाख उनचासवें हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग इतनी आकाश गंगाओं की एक अवन्तिका बन गई और पौने दो अरब अवन्तिकाओं की एक निहारिका बन गई। तो बेटा! देखो, ऋषि अपने में मौन हो गया। और यह कहा कि इसमें असमर्थ हूं, मैं इसके ऊपर आगे विचार विनिमय नही कर पाऊंगा। यह परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है, यह अनन्तमयी माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, मानव जीवन, ज्ञान बड़ा सीमित है। जब परमात्मा के ज्ञान विज्ञान के ऊपर मानव विचार विनिमय करता है, तो वही मेरे प्यारे! देखो, अपनी साधना में प्रवेश हो जाता है और उसमें अपने में अन्त में मौन हो जाता है।

मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां यन्त्रों का निर्माण होता रहता था और यन्त्रों में विराजमान हो करके नाना लोक लोकान्तरों में भी प्रायः जाने का प्रयास करते रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारिणी शबरी और ब्रह्मचारी कवन्धि मेरे प्यारे! देखो, देखो, पणकेतु इत्यादि इन सर्वत्र ब्रह्मचारियों ने उस विज्ञानशाला में बेटा! यन्त्र का निर्माण किया था जिस यन्त्र में देखो, जहां जिस यन्त्र के निर्माण में देखो, राजा रावण के विधाता कुम्भकरण भी मानो देखो, इसमें सम्मिलित हो करके यन्त्रों का निर्माण किया। जिनको वरूण नाम से वर्णन किया जाता था वरूण ब्रह्मचारी ने भी उसमें सम्मिलित हो करके यन्त्रों का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो, यन्त्रों में प्रवेश हो करके वह बहत्तर लोकों का भ्रमण करके और वह अपने पृथ्वी पर पुनः आश्रम में प्रवेश होते थे।

परमपिता परमात्मा विष्णु है

बेटा! आज मैं तुम्हे विज्ञान के युग में नही ले जा रहा हूं केवल विचार विनिमय यह कि हमारे यहां ऋषि मुनि एक एक वेदमन्त्र को ले करके बेटा! अपने में बड़ा विचार विनिमय करते रहे हैं। आज मैं बेटा! अपने वाक्यों को उच्चारण कर रहा था क्या यह परमात्मा का जो जगत है। वह परमपिता परमात्मा विष्णु है वह वसु अमृतम् देखो, परमात्मा का नाम वसु है इसीलिए विष्णु, विष्णुम् ब्रह्मा वसु कहलाता है जिसमें हम सब बसते हैं इसी में ओत प्रोत रहते हैं और एक माला दूसरी माला

को प्रभावित करती रही है। एक माला दूसरे में सहायक बन करके मेरे पुत्रों! देखो, यह जगत अपने में महानता में परिणित होता रहा है। तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हे विशेष विवेचना देने नही आया हूं, विचार विनिमय केवल यह बेटा! एक दूसरे की माला संसार बना हुआ है, लोक लोकान्तरों एक दूसरे की माला में है नाना निहारिका एक दूसरे में माला बनी हुई है और मालाओं को भी बेटा! एक दूसरा धारण करने लगता है। इसी प्रकार देखो, इस संसार में मानव मानव में माला बना हुआ है और परमाणु परमाणु में माला बन करके बेटा! उसका निर्माण कर रहा है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हे विशेष विवेचना न देता हुआ केवल विचार विनिमय यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए परमात्मा का नामोकरण विष्णु उच्चारण करते हुए बेटा! विष्णाम् ब्रह्मा व्रतम् देवाः क्या वह परमात्मा विष्णु है और हम विष्णु की याचना करते रहते हैं।

आओ मेरे प्यारे! देखो, उस अमृतम् देखो, इस संसार में ब्रह्मणा नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों में आत्मा का नाम विष्णु है, परमात्मा का नाम विष्णु है, क्योंकि आत्मा देखो, साधक बन करके अपनी आत्मा को देखो, विष्णु बनाता है। और परमात्मा को जानने वाला बेटा! देखो, विशालता में प्रवेश होता है। तो मेरे आओ मेरे प्यारे! आज विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम बेटा! उस परमात्मा को विष्णु स्वीकार करें। आत्मा का नाम विष्णु है और विष्णु बन करके बेटा! इस संसार को जानते हुए इस संसार से पार हो जाना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक मानव का एक ही कर्तव्य है क्या इस संसार को जानना और जान करके मानो देखो, इससे पार हो जाना। यही मानव की इसी में मानव की प्रतिष्ठा है और इसी में वह प्रतिष्ठित हो जाता है।

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम योगाभ्यास में परिणित होते हुए, विष्णु बनें और विज्ञान वेत्ता बन करके मानो परमात्मा को परमात्मा की

सृष्टि को जानने में लग जाएं, यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा तो कल मैं तुम्हे शेष चर्चाएं प्रगट कर सकूंगां। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा।

आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह है है कि परमात्मा अनन्तमयी है और सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके नाना विज्ञान वेत्ता हुए हैं परन्तु परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को कोई भी मानव अपने में सीमाबद्ध नही कर सका है। वह सीमा से रहित है, सीमा में आने वाला नही है इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगां। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गायन्त्वा आभ्यां मनु गृहिता वाचन्न स्वरणां ब्रह्मा। ओ३म् तानु माः३म् वसु वायाः। ओ३म् प्रत्यं मनु वाचन्न आपाः३म्।

3. 920208-याग कैसे करें। ब्रह्म की ओर

परमपिता परमात्मा महिमावादी

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी है और वह यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं। क्योंकि आज के हमारे वेद के पठन पाठन में उस परमपिता परमात्मा के याग का वर्णन आ रहा है इसीलिए वह परमपिता परमात्मा के याग का वर्णन आ रहा है इसीलिए परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं अथवा यागाम् भू वर्णनम् ब्रह्मा। क्योंकि वह स्वतः याग है और वह उसी में रत्त रहने वाले हैं। तो हम परमपिता परमात्मा को अपने देव अपना यज्ञोमयी अपने में स्वीकार करते चले जाएं। क्योंकि सदैव परम्परागतों से ही उस परमपिता परमात्मा की महती का प्रायः वर्णन होता रहा है और प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा बनी रहती है कि मैं उस परमपिता परमात्मा की महती को जानने वाला बनूं और उस परमपिता परमात्मा की आभा और उसका यज्ञोमयी स्वरूप है, मैं उसमें प्रविष्ट हो जाऊं। प्रत्येक मानव की यह प्रबल इच्छा होती है मेरी पुत्रियां भी सदैव यह चाहती रहती है क्या हमारा जीवन उस परमपिता परमात्मा से कटिबद्ध हो जाए अथवा उसी में रत्त हो जाए। तो प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही विचार विनिमय करता रहा है कि मैं उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में ओझल हो जाऊं और उसी में मैं अपने को शान्त करूं ऐसी प्रायः देखो, प्रत्येक मानव को एक इच्छा बनी रहती है।

याज्ञिक स्वरूप

आज का हमारा वेदमन्त्र यह क्या कह रहा है क्या यज्ञम् भूवर्णनम् ब्रह्मा व्रताः क्या जो व्रती होते हैं, वह याज्ञिक कहलाते हैं। तो हम परमपिता परमात्मा को स्वीकार

करने में व्रती बनें और व्रती बन करके मानो उसका व्रत ले करके मानो उसकी सृष्टि को उसकी महानता को अपने में सदैव विचार विनिमय करने वाले हों और अपने में उसे ओझल करते हुए अपने को उसमें सिमट करके ही अपने को पान कर सकते हैं। अपने को प्राप्ति की आभा में परणित हो जाते हैं। तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा। क्योंकि हमारे यहां नाना प्रकार की प्रतिभाओं का वर्णन होता रहा है। मैं पुनः से तुम्हे उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं जहां मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की चर्चाएं करता रहा हूं, और जाबाला पुत्र सत्यकाम की भी चर्चाएं होती रही हैं।

जाबाला पुत्र सत्यकाम ने मुनिवरों! देखो, याग के माध्यम् से ही देखो, ब्रह्मकी आभामें परणित हो गए थे जब महात्मा गौतम ने यह कहा कि हे ब्रह्मचारी! अब मैं तुम्हे दीक्षा देना चाहता हूं तो उस समय आचार्य ने जब ऐसा कहा तो सत्यकाम ने कहा प्रभु! जो आप मुझे दीक्षा देना चाहते हैं वह दीक्षा मुझे प्राप्त हो गई। मैं मन कला को जानता हूं, मानो मैं प्राण कला को भी जानता हूं। दोनों कलाओं को जानने वाला हूं। मैं गो मेघ देखो, गो मेघ याग करता रहता हूं और वह गो मेघ याग करता हुआ मैं अपने में सिमट गया हूं प्रभु! मेरे प्यारे! देखो, उस समय गौतम ने कहा कि मैं तुम्हें दीक्षित बनाना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि हे प्रभु! आप ने मुझे दीक्षा दे दी है और वह दीक्षा मानो आपकी आज्ञा का मैंने पालन किया है, तो मुझे चार चार कलाओं का ज्ञान मानो देवताओं ने दिया है। मुझे प्रजापति ने भी चार कलाओं का ज्ञान दिया है और उसी ज्ञान के माध्यम से मैं प्रजापति को वह परमपिता परमात्मा ही प्रजापति है। मानो देखो, अग्नम् ब्रह्मा वह अग्नि देखो, ब्रह्म आभा में रत्त होने वाला जो अग्नि देवता है जो देवत्व माना गया है।

इसीलिए आज मैं तुम्हे यज्ञ देखो, सत्यकाम ने यह कहा कि प्रभु मैं प्रायः यज्ञमान बन गया हूं और मैं याज्ञिक बन करके देखो, देखो, अपने में याग कर रहा हूं। जब मैं यज्ञशाला में विराजमान होता हूं तो उस समय मानो पञ्च महाभूतों की मैं उन देवताओं के समीप जाने के लिए सदैव तत्पर हो जाता हूं, जहां मैं अग्नि को प्रदीप्त

करके, अग्नि में मैं साकल्य को चरू को प्रदान करता रहा हूं तो यह अग्नि की यह पूजा मानो देखो, मुखम् ब्रह्मा वर्णनम् अग्नेः यह अग्नि सर्वत्र देवताओं का मुख कहलाता है। यह मुख होने से मानो देखो, यह अग्नि मुनिवरों! देखो, तेजोमयी है। वेद का आचार्य कहता है, वेद का ऋषि ने यही तो कहा है सम्भूति ब्रह्मा वर्णस्सुतम् मानो देखो, यह वरणीय है। उस समय परमपिता परमात्मा को हम अपना वरणीय स्वीकार करते हुए उसको धारणा करते चले जाएं। जिससे हमारे जीवन में एक महानता का जन्म हो जाए। तो वेद का ऋषि सत्यकाम वेद का अध्ययन करने वाला यह कहता है कि भगवन मुझे चार चार कलाओं का ज्ञान मानो देखो, याग के माध्यम से प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार मैं याज्ञिक हूं और मैं यज्ञम् ब्रह्मा देखो, याग करता रहता हूं। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा गौतम ने कहा क्या हे ब्रह्मचारी! यह तो मैंने तुम्हारा वाक स्वीकार कर लिया है, परन्तु तुम याग में कैसे परणित होना चाहोगे? उन्होंने कहा प्रभु जितना भी संसार का यह क्रियाकलाप हो रहा है और उसमें जितनी भी महानता है, वह सब मानो देखो, मैं याग मैं स्वीकार करता हूं। वह सर्वत्र मानो देखो, यज्ञमयी रूप बनी हुई है, और उसको जो इस प्रकार व्यापक रूप में स्वीकार करता है वह अपने में मानो देखो, याज्ञिक है और याग में यह प्रतिष्ठित अथवा अपने में सिमट करके वह याग बन जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार श्रवण किया तो वह बड़े प्रसन्न हुए। तो उस समय बेटा! देखो, उन्होंने कहा कि मुझे प्रजापति ही मेरा जीवन है और प्रजापति ही मैं बनना चाहता हूं। तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय सत्यकाम ने जब इस प्रकार कहा तो महात्मा गौतम ने कहा कि मैं तुम्हे और दीक्षा देना चाहता हूं। मेरे पुत्रों! उन्होंने दीक्षा दी और दीक्षीत बना करके ब्रह्मचारी से कहा हे सत्यकाम! तुम महान हो तुम अपने में वास्तव में ब्राह्मण हो। ब्राह्मण वही कहलाता है जो सर्वत्र अग्नियों का देवताओं का पूजन करता है, और वह देवता कौन है?

मेखला में जल सिञ्चन

मानो देखो, जब हम जल का पूजन करते हैं यज्ञमान जब मेखला में जल को

मानो परोक्षणा परोक्षणी के द्वारा जल में जल का सिंचन करता है। तो जैसे परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में जब यह संसार रूपी यज्ञवेदी को जन्म दिया अथवा निर्माण किया तो उस समय समुद्र को मेखला को देखो, पृथ्वी के अङ्ग संग में देखो, इस मेखला का निर्माण किया और वह मेखला कहलाती है। इसी प्रकार यज्ञमान अपनी निर्माण किया और वह मेखला में जल का सञ्चय करता है जहां से प्रकाश आता है। तो वह कहता है कि अग्नि देवता तू इस मेरी श्रद्धा को स्वीकार कर। मेरे प्यारे! देखो, वह वरूण से कहता है हे वरूण! मेरी सहानुभूति को स्वीकार कर। सोम कहता है हे सोम! तू मेरे में समाहित हो जा और मैं मानो देखो, सोम सौम्यता को अपने में धारण करना चाहता हूं। मेरे पुत्रों! इस प्रकार जब यज्ञमान अपने में धारण करना चाहता हूं मेरे पुत्रों! इस प्रकार जब यज्ञमान अपने में जल का सञ्चय करता है तो जल का वह पूजन कहलाता है। क्योंकि जल ही वरूण बन करके मेरे पुत्रों! वह अन्न का भण्डार बन जाता है। वही सौम्यता को प्राप्त कराता है। वही मेरे प्यारे! देखो, प्रकाश का द्युतक कहलाया गया है।

अग्नयाधान

उसके पश्चात देखो, अग्न्याधान करता है और अग्नि का ध्यान करता है वह अग्नि ही मानो देखो, पूर्व सः सुतम् ब्रह्मे वह पूर्व दिशा में अग्नि का स्थान माना गया है। उस मानो देखो, अग्नि जब प्रदीप्त करता है, तो वह अग्नि में साकल्य देता है और कहता है यज्ञमान हे अग्नि देवता! तू मेरे से मानो त्रुटि हो जाए क्रिया में तो मुझे क्षमा, मैं क्षमा का देवत्व हूं मानो देखो, उसे चाहता रहता हूं। तू देवताओं का मुख है और देवताओं के मुख में मैं साकल्य दे रहा हूं जिससे परमाणुवाद, परमाणु में परमाणु का देखो, दोनो का सञ्चय हो जाए। और सञ्चय हो जाने के पश्चात देखो, याग अपनी स्थली में महान बन जाए।

इसी प्रकार देखो, अग्नि देवताओं का मुख है, जो साकल्य दोगे वह सर्वत्र मानो जल को पवित्र आपो को पवित्र बनाता है। पृथ्वी के गर्भ में उसकी अमूल्य ज्योति प्रवेश कर जाती है। तो वह पृथ्वी का पूजन और मुनिवरों! इसी प्रकार अन्तरिक्ष

में जब उसकी भव्य तरंगें तरंगित होती हैं, तो वह तरंगे द्यौ लोक तक चली जाती हैं। जितना वेदमन्त्र शुद्ध उच्चारण करने वाला मानो उद्गाता होता है, उतनी ही वह आहुति द्यौ में प्रवेश कर जाएगी जितना यज्ञमान का हृदय जितना भी महान पवित्र होगा उतनी पवित्रता की अग्नि मेरे प्यारे! देखो, द्यौ में प्रवेश हो जाएगी। वह द्यौ में देखो, द्यौ ही एक ऐसा है, जो सूक्ष्म बना करके इस वायुमण्डल को इस संसार को पवित्र बनाता है मेरे पुत्रों!देखो, यह अन्तरिक्ष में अमृतम् दिशाओं में जाने वाला देखो, यह नृत है, जो प्रायः होता रहता है। तो इसीलिए अग्नि देवताओं का मुख है और यज्ञमान सब देवताओं की पूजा करने वाला है। सर्वत्र देखो, सर्वत्र हमारे आचार्यों ने जब सृष्टि के प्रारम्भ में मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनियों ने सबसे प्रथम जितने भी क्रियाकलाप है। संसार के जितने भी मानो देखो, पूजा की स्थली है चाहे वह माता देखो, की पूजा हो चाहे वह पितरों की पूजा हो, परन्तु सबसे प्रथम आचार्यों ने देखो, याग को विशिष्टत्व माना है क्योंकि यह विशिष्ट क्रियाकलाप है। उसी में देखो, यज्ञम् ब्रह्मा क्योंकि यज्ञ ब्रह्म कहलाता है। यज्ञ विष्णु है, वही तो पालन करने वाला है। तो मुनिवरों! देखो, सृष्टि के आचार्यों ने सृष्टि के प्रारम्भ के आचार्यों ने याग को सबसे महान देखो, श्रेष्ठतम क्रियाकलाप माना है। इसीलिए मानो अग्नि देवताओं को मुख है और देवताओं की प्रत्येक देवताओं की क्रियात्माक में पूजा करनी है, तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, हमे याज्ञिक बनना है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय

अब मैं मुनिवरों! देखो, उस स्थली पर तुम्हे ले जाना चाहता हूं जहां बेटा! ब्रह्मचारियों के मध्य में महर्षि मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपनी स्थली पर विद्यमान है और वह मुनिवरों! देखो, अपने में उद्गीत गा रहे हैं और उद्गीत गाते नैतिकता में जब विद्यालय में आचार्य ब्रह्मचारियों को जब नैतिक शिक्षा देता है, तो याग का अवधान करता है और यह कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो। तुम अपनी वाणी को याग में परणित कर दो। तुम अपने नेत्रों को याग में परणित कर दो। मानो यह क्यों कह रहा है प्रत्येक इन्द्रिय के लिए क्या

इन्द्रियां जब तुम्हारी ज्ञान और विज्ञान में सजातीय बन जाती है और याग में परणित हो जाती हैं तो वह प्रत्येक इन्द्रियों से सुदृष्टिपान करता है। सुदृष्टि शब्दों को ग्रहण करता है, सु सुगन्ध लेता है, सु वाणी से उद्गीत गाता है, तो इसी प्रकार प्रत्येक इन्द्रियां उसकी सजातीय बन जाती हैं और जब वह सात्विकता में सजातीय बनती हैं तो इसीलिए आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी! तू मुझे मानो इन्द्रियों के क्रियाकलापों को मुझे प्रदान कर जिससे मैं तुझे महान बना सकूं। तो बेटा! देखो, इस प्रकार जब यज्ञम् देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में इस प्रकार की चर्चाएं कर रहे हैं कि हमारा जीवन यागमय हो जाए तो प्रत्येक इन्द्रिय सजातीय बन जाए।

उस समय मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य जब इस प्रकार का विचार दे रहे थे। तो यज्ञदत्त ब्रह्मचारी उपस्थित हो गए। मैं इससे पूर्व काल में भी यज्ञदत्त की चर्चा कर रहा था। आज मैं देखो, उस सम्बन्ध में नही केवल यज्ञदत्त ने उपस्थित हो करके यह कहा हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूं कि यज्ञ हम कैसे करे, क्या क्या हमे देखो, समिधा देखो, अमृत होना चाहिए, क्या क्या साकल्य होना चाहिए? उसके द्वारा हमे निर्णित कराईये।

मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने विद्यालय में क्योंकि विद्यालय में जब तक देखो, याग नही होता विद्यालय ऊंचे नही बनते हैं, मैं आध्यात्मिक और भौतिक दोनों में मानो देखो, दोनों की प्रतिभा का प्रायः वर्णन किया जाता है और वही विद्यालय ऊंचे बनते हैं।

याग का क्रम

आचार्य ने कहा हे ब्रह्मचारी! तुम याग करना है, तो यज्ञशाला हो यज्ञशाला मानो देखो, यज्ञशाला में अग्न्याधान किया जाए समिधा के द्वारा और नाना प्रकार का चरु होना चाहिए। नाना प्रकार की वनस्पतियां होनी चाहिए। मानो प्रत्येक वनस्पतियों का जब समूह बनाया जाता है तो उसको सामग्री, साकल्य अथवा उसको भिन्न भिन्न रूपों से उसका वर्णन चरू के रूप में कहा जाता है। वही समिधा अन्न के

द्वारा जो प्रकृति हमे देती है। उसी प्रकृति को ले करके जब याग करते हैं। देखो, गो रस, गो घृत को ले करके हम मानो देखो, याग करते हैं तो वह प्रत्येक स्वाहा जब उद्गीत गाता है। जब वेदमन्त्रों का हम उच्चारण करते हैं स्वाहा कहते हैं वही स्वाहा मुनिवरों! देखो, अग्नि की धाराओं पर शब्द विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश कर जाता है। वही शब्द है वही मानो देखो, द्यौ में प्रवेश और द्यौ में ही अकृत बन जाता है।

विचार आता है क्या मुनिवरों! देखो, जितना भी होतागण अपनी यज्ञशाला में स्वाहा, स्वाहा का उच्चारण करते हैं तो स्वाहा का अभिप्राय ही अग्नि है क्योंकि वाणी अग्नि रूप बन करके रहती है। जितनी वाणी तपायमान हो जाती है, उतनी वाणी जानो ज्ञान में विज्ञान में तप जाती है उतनी मुनिवरों! देखो, वाणी में ओज और तेज और अग्नि का अवधान हो जाता है। वह अग्नि रूप बन जाती है और वह जब अग्नि रूप बन जाती है तो स्वाहा कहने से जो साकल्य में रहने वाली अग्नि है, जो समिधा में वास करने वाली अग्नि है, वह अग्नि प्रचण्ड होती है। जितनी अग्नि प्रचण्ड होती है उतना ही मानो याग का व्यापक रूप बन जाता है। वह द्यौ में प्रवेश कर जाती है।

आध्यात्मिक और वैज्ञानिक याग

बेटा! आज मैं सम्बन्ध में विशेषता में नहीं जब ऋषि ने इस प्रकार का वर्णन किया, ऋषि ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम मानो देखो, उच्चारण करो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा कह करके प्रारम्भ करो। क्योंकि अपान और प्राण दोनो ही ऐसे हैं जो संसार को निगल जाते हैं। उत्पति के मूल में विद्यमान रहते हैं। प्राण और प्राण ही मानो देखो, इस संसार का नृत हैं और व्यान की मानो इसके ऊपर पुट लग जाती है। मैंने तुम्हे कई काल में कहा था कि योगीजन जब देखो, यज्ञ के माध्यम से जब प्रत्येक प्राण की आहुति देते हैं। अपान की आहुति देते हैं, व्यान की आहुति देते हैं और व्यान और समान की पुट लगा करके व्यान को उसमें प्रवेश करा देते हैं, वह प्राणी का एक समूह बन करके आचार्यों ने क्या वैज्ञानिकों ने भी यह कहा है क्या

वह हम अन्तरिक्ष में इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण भी प्राणों के द्वारा करते हैं, क्योंकि तरंगें उसमें विद्यमान होती हैं। वही परमाणुवाद मेरे प्यारे! देखो, जब साधको के मध्य में जाता है। वही प्राण मेरे प्यारे! देखो, जब योगियों के मध्य में जाता है। तो योगीजन अपने शरीर को भी पृथक कर लेते हैं और प्राण के माध्यम से वह अन्तरिक्ष में मानो देखो, वह एक तारतम्य प्राण का बना रहता है। आत्मा के साथ में। आत्मा देखो, वह आत्मा द्यौ में प्रवेश हैं, और वहां से प्राणों का समावेश हो रहा है, प्राणो का तारतम्य बन रहा है शरीर शून्यता में है, परन्तु प्राण की प्रतिभा वहां विद्यमान रहती है बेटा! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नही यह साधको का विषय है। मैं बेटा! यह कि वह जैसे वैज्ञानिकजन अपने मानो देखो, परमाणुवाद को जान करके अन्तरिक्ष में वह अन्तरिक्ष में मानो देखो, अपनी स्थली बना लेते हैं जहां चन्द्रमा और और पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का समन्वय होता है वहां यन्त्रों को स्थिर कर देते हैं जहां सूर्य जहां मङ्गल दोनों की प्रतिभा एक दूसरे में मिलान होती है। उसकी जहां स्थली होती है एक दूसरे की आकर्षण शक्ति उसमें विद्यमान वहां भी एक स्थान बनाया जा सकता है। तो वैज्ञानिकजन परम्परागतों से ही मानो नाना प्रकार के विज्ञान में रत्त हो करके और वह अपनी मानो देखो, अन्तरिक्ष में स्थलियों में विद्यमान रहे हैं।

चरू

आज बेटा!मैं इस विज्ञान में जाना नही चाहता हूं। केवल विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, विचार यह चल रहा है कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या तुम मानो देखो, इस प्रकार का प्रकृति का साकल्य पृथ्वी से वसुन्धरा से जो उत्पन्न होने वाला खाद्य और खनिज है, उसका चरु बनाया जाता है और वह अग्नि, अग्नि को प्रदान किया जाता है। क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है और कोई साकल्य ऐसा नही है, जो देवता से भिन्न हो, वह देवताओं से मानो देखो, पञ्च महाभूतों से उसका समन्वय रहता है।

तीन समिधा

मेरे प्यारे! देखो, जब समिधा के द्वारा यह तीन तीन समिधा का अवधान करता है यज्ञमान कहता है, मेरे तीन प्रकार के तप मेरे में मानो उसमें अवरत्त हो जाऊं। मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान, कर्म, उपासना में मैं रत्त हो जाऊं रजोगुण, तमोगुण, मानो देखो, इनको मैं जान करके सागर से पार हो जाऊं। ऐसा मानो देखो, तीन समिधा के द्वारा वह अपनी ओजस्वी विचार धारा वह अग्नि को प्रदान करता है, क्योंकि तीन समिधाओं में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। मेरे प्यारे! वही तीन प्रकार का विचार दे करके जब मानव देखो, राष्ट्रों का निर्माण भी इसी से होता है राष्ट्र में भी देखो, पुनरूक्ति आहुति दी जाती है और वह मुनिवरों! उसी में रत्त रहता है।

मैं राष्ट्र के विचार देने नही आया हूं विचार केवल यह उन्होंने कहा हे यज्ञदत्त! तुम याग करना चाहते हो तो तुम्हारे याग का यही अवधान है, क्या तुम मानो देखो, नाना साकल्य उसमें समिधा ले करके चरू बना करके तुम मानो देखो, अग्नि में प्रदान करो और स्वाहा स्वाहा का उच्चारण करो और कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः और समानाय स्वाहाः कह करके मानो उसमें परिणित कर दो।

चरू न प्राप्त होने पर याग

इस प्रकार जब उन्होंने कहा कि प्रभु यह तो आपका वाक हमने स्वीकार कर लिया है, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं प्रभु यदि हमे कहीं ऐसा हो जाए कि हमे समिधा और चरु न प्राप्त हो तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा समिधा तो तुम्हें प्राप्त अवश्य रहेगीं परन्तु अग्नि का ध्यान करो और अग्नि को प्रदीप्त करके देखो, प्रत्येक समिधा के द्वारा तुम कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहा कह करके तुम हुत करने में तत्पर हो जाओ। मानो देखो, तुम अग्न्याधान करके अग्नि में मानो परिणित करो वही अग्नि तुम्हें देखो, प्रकाश में ले जाएगी। वही अग्नि तुम्हारे अन्तःकरण को प्रकाशमय बना देगी और ज्ञान और विज्ञान में तुम्हारी गति होने लगेगी। परन्तु मौन हो करके याग किया जाए। वह याग देखो, हृदय से किया जाए और हृदय का समन्वय मेरे प्यारे! देखो, सर्वत्र चरू से और संसार से होना

चाहिए। जिसमें व्यापकवाद आ करके तुम्हारे जीवन में एक महानता का जन्म हो जाए।

मेरे पुत्रों! देखो, जब इस प्रकार उन्होंने वर्णन किया कि तुम समिधा को लो समिधा का अभिप्राय यह है क्या जब मुनिवरों! देखो, यह बड़ा विशाल विज्ञान है। देखो, पीपल की समिधा से याग करो उसमें क्या विशेषताएं हैं और अम्बिका में मानो देखो, समिधा के द्वारा याग करो तो उसमें क्या क्या विशेषताएं हैं और जब तुम देखो, अमृता वृति के द्वारा याग करोगे तो उसके रूप में क्या क्या गुण विद्यमान रहते हैं श्वेत के यागों से, समिधा के याग करोगे उसमें क्या क्या गुण विद्यमान हैं चन्दन कि समिधाओं के द्वारा याग करोगे उसमें क्या क्या विशेषता है। यह है बेटा! देखो, एक विज्ञान है, एक धाराएं हैं मैं इस सम्बन्ध में विशेषता में नही ले जाऊंगां। केवल विचार यह कि मानो देखो, कोई औषधि, कोई समिधा इनमें ऐसी है जो विशेष ओर प्रकाश में ले जाती है, कोई ऐसी है जो द्यौ में ले जाती है कोई मानो दिशाओं का हमें दिग्दर्शन कराती है, कोई ऐसी औषध है। जो हमारे रूग्णों को समाप्त करती है। इसी प्रकार देखो, उस प्रकार की समिधाओं के द्वारा जब यज्ञमान इस प्रकार विज्ञान को जानता है और ब्रह्मणत्व भी जानता है।तो वह मानो इस सागर को इस संसार को जान करके इससे पार होने का प्रयास करता है। तो आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल यह कि उन्होंने कहा कि तुम अग्न्याधान करो समिधा के द्वारा। तीन तीन समिधा के द्वारा याग करो और याग में मानो देखो, कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः, मुनिवरों! देखो, व्यान की पुट लगा दो तो तुम्हारा जीवन एक पवित्रता में परणित हो जाएगा।

समिधा, अग्नि प्राप्त न होने पर याग

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! ब्रह्मचारियों ने हे प्रभु! यह तो हमने कई समय स्वीकार किया है परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कहीं ऐसा हो कि हमे समिधा और अग्नि भी कहीं प्राप्त हो तो तुम मानो देखो, हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा

यदि यह भी प्राप्त न हो तो तुम मानो देखो, आपोमयी, देखो, तुम जल को अञ्जलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः क्योंकि जल ही तुम्हारा अमृत है। यह जल ही मानो देखो, तुम्हें अमृतमयी पंहुचा देता है। माता से यह प्रश्न किया जाए हे माता! तेरे गर्भस्थल में जो हम जैसे शिशु विद्यमान हैं उनका ओढ़न क्या है क्या तुम ओढ़न देते हो, क्या तुम्हारा आसन है? तो उस समय मानो देखो, माता नही जानती उस विज्ञान को। मेरे प्यारे! देखो, माता को जानना चाहिए। इस प्रकार का ज्ञान विज्ञान माताओं को होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, जल ही तो देखो, उस समय ओढ़न होता है, जल ही आसन होता है, जल ही मानो पांशे होते हैं और वह जल को अञ्जलि में मानो देखो, जल व्रत ले करके वह मेरे प्यारे! देखो, वह शिशु अपने में पनपता रहता है। देवता अपने में देवत्व का कार्य करते रहते हैं, उसी में निहित रहते हैं तो मानो देखो, हे माता! तेरे गर्भस्थल में मानो देखो, यह आपो ही तो ओढ़न है, आपो ही आसन है और आपो ही मानो देखो, विद्यामान रहता है। इसीलिए आपो को ले करके अञ्जलि में कहो प्राणाय स्वाहा, प्राण तेरे आश्रित रहता है। अपानाय स्वाहाः, अपान भी तेरे आश्रित रहता है, और व्यानाय स्वाहाः व्यान भी तेरे आश्रित रहता है मानो देखो, जब तुम कहो कि समानाय सम मम ब्रहे व्रतम् वह समानाय कह करके स्वाहा कह करके मेरे प्यारे! देखो, वह उदानाय कह देता है। मुनिवरों! देखो, वह कितना महान उस प्रभु का यह विज्ञान है।

आज मैं इस विज्ञान में न जाता हुआ केवल यह कि हे माता! तेरे गर्भस्थल में जो बाल्य पनप रहा है अथवा वह जल के आश्रित रहता है। जल ही उसका आसन है जल ही बिछौना है और मानो देखो, जल ही ओढ़न बन करके पाशे बन करके उसमें पनप रहा है, चन्द्रमा अमृत दे रहा है क्योंकि चन्द्रमा का समन्वय समुद्रों से रहता है वह आपो को उसमें प्रदान करता रहता है। अमृत के द्वारा अमृत देता रहता है। सूर्य का प्रकाश मानो द्यौ से होता है। वह वहां से प्रकाश ले करके प्रकाशित करता है। अग्नि का देखो, अग्नि देवता जो देखो, सर्वत्र देवताओं का

मुखारबिन्द सब देवताओं का अवधान करा देता है। तो इसी प्रकार देखो, अमृतम ब्रह्मा वर्णनम् जल को अञ्जलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः तो बेटा! जल ही हमारा आपोमय अमृत कहलाता है। जब मुनिवरों! देखो, वह परमात्मा से मिलन होता है। तो वह सबसे प्रथम वह अञ्जलि में जल ले करके कहता है अमृताम् भू वर्णनम् मानो देखो, अमृत पान करके उसको ग्रहण करता है, अमृत ही वह कहलाता है जो तुम्हारे शरीरों में वास करता रहता है, वह अमृत ही है। बाह्य जगत में भी वही अमृत है, वह परमाणुवाद में भी अमृतमयी माना गया है। तो बेटा! इस सम्बन्ध में विशेषता न देता हुआ जब आचार्य ने इस प्रकार वर्णन कराया क्या यह आपो ही मानो देखो, तुम्हारा जीवन है।

जल न होने पर याग

उस समय ब्रह्मचारियोंने कहा प्रभु! कहीं ऐसा हो जाए कि यह जल भी हमे प्राप्त न हो तो प्रभु हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम देखो, ऐसी स्थली में चले जाओ, जहां आपो न प्राप्त हो, जल न हो तो उस समय तुम पृथ्वी के कणों को ले करके कहां प्राणाय स्वाहाः जल अग्नि से यज्ञ करो। देखो, वह जो रज है, पृथ्वी की रज को ले करके तुम याग करो क्योंकि पृथ्वी की रज ही तो संसार का पिण्ड एक बनाता है। यह जो संसार पिण्ड रूप में विद्यमान है। एक दूसरा पिण्ड एक दूसरे की आकर्षण शक्ति में लगा हुआ है और वह भ्रमण कर रहा है। मानो लोक लोकान्तरों का कहीं पिण्ड बन रहा है। कहीं माता के गर्भस्थल में मानव का पिण्ड बन रहा है पुत्रियों के रूप में पिण्ड बन रहा है, और वह पिण्ड मानो देखो, उसमें रज विद्यमान होता है। गुरुत्व होता है, और गुरुत्व विद्यमान हो करके वही तो पिण्ड व्रतम् देखो, पिण्डम् ब्रहे व्रत अस्तुतिही वही तो पिण्ड कहलाता है। बेटा! देखो, ग्रहों के निर्माण करता है उसमें जल का अवधान होता है और जल के द्वारा ही ग्रह का निर्माण हो जाता है वह भी पिण्ड रुप बन जाता है मेरे प्यारे! यज जो ब्रह्माण्ड है वह भी पिण्ड रूप विद्यमान है और पिण्डों के देखो, भिन्न भिन्न पिण्डों से ही यह आकाश गंगाएं बनती है। इसी से निहारिका बनती है और इसी से सौर

मण्डलों का निर्माण होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह सर्वत्र जगत मानो देखो, एक पिण्ड रूप गुरुत्व कहलाता है। यह गुरुत्व प्रधान मानो देखो, पृथ्वी मानी गई है। तरलत्व प्रधान आपो माना गया है। तेजोमयी मुनिवरों! देखो, अग्नि का अवधान होता रहता है। इसी प्रकार जब हम इस प्रकार के विचारों को ले करके अपने में याग करते हैं, और वह रज को ले करके कहते हैं प्राणाय स्वाहाः हे प्राण! तू इसी को तो निगलता है। गुरुत्व ही मानो इस पिण्डम् ब्रव्हा इस गुरुत्व को निगल करके ही याग कैसे करें? मानो तू भक्षण करता है। तू प्राण है तू परमाणुओंको ले करके यह परमाणु भी एक पिण्ड के रूप में विद्यमान है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है ऋषि मुनियों ने एक पिण्डम् देखो, एक श्वांस के द्वारा जब परमाणु गति करता है वृश्चित नाम एक परमाणु है, जब उसका विभाजन करते हैं तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो देखो, उसी परमाणु में दृष्टिपात आने लगता है। वह ब्रह्माण्ड का पिण्ड है और ब्रह्माण्ड एक एक परमाणु में विद्यमान रहता है।

बेटा! आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नही वह जो रज है जिन रजों को ले करके तुम पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः हेप्राण! तू इसी में रत्त है। अपानाय स्वाहा जिसका पृथ्वी से समन्वय रहता है और व्यानाय स्वाहा जिसका सम्बन्ध देखो, वायु अग्नि को ले करके गमन करता रहता है और जब वह कहता है समानाय सब में विचरण करने वाला है। इसी प्रकार जब वह उदानाय कहता है तो मुनिवरों! देखो, जब इस शरीर को त्यागता है जिज्ञासु तब उस समय मुनिवरों! देखो, वह उदानाय कह करके मुनिवरों! मन का चित्त का जो मण्डल है, वह मन में है और मन मुनिवरों! देखो, यह आत्मा को अपने में आशवस्त करके देखो, शरीर को त्याग देता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह पिण्डम् सुवर्णस्सुतो वेद का आचार्य कहता है, इस प्रकार तुम याज्ञिक रज के द्वारा याग करो।

रज ने प्राप्त होने पर याग

मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी यज्ञदत्त ने कहा प्रभु यह भी हमने स्वीकार कर लिया परन्तु हम यह जानना चाहते हैं प्रभु कहीं रज भी प्राप्त न हो तो प्रभु हम याग कैसे करें?

उन्होंने कहा कहीं तुम्हे रज भी प्राप्त न हो तो शान्त मुद्रा में मुद्रित हो जाओ, और शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके तुम्हारे हृदय में जो एक अग्नि प्रदीप्त हो रही है उस अग्नि को जागरूक करो वह ज्ञान रूपी अग्नि के द्वारा मानो देखो, तुम याज्ञिक बनो। जब तुम यज्ञवेदी पर विद्यमान हो करके और मानो तुम हृदय रूपी यज्ञशाला में याग करोगे और वेदमन्त्रों का उद्गीत गाओगे कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः कह करके मेरे प्यारे! देखो, उसमें प्रत्येक वेदमन्त्र को उसमें उद्गीत गाने वाले बनो जिससे तुम्हारा हृदय, हृदय का समन्वय वेद की पवित्र विद्या से हो जाए और तुम्हारा जो मन, मस्तिष्क है वह सदैव प्रकाश में रत्त हो जाए। इस प्रकार मुनिवरों! देखो, ऋषि ने कहा क्या तुम शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके याज्ञिक बनो और तुम अपने में यज्ञशाला अपने हृदय को यज्ञशाला बनाओ। आत्मा मानो होता बना करके और प्राण को मुनिवरों! देखो, उद्गीत वाला बना करके तुम अपने में मौन हो करके याज्ञिक बनो। इस प्रकार मुनिवरों! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन किया तो महर्षि, महर्षि ने ब्रह्मचारियों के चरणों का चुम्बन किया। उन्होंने कहा प्रभु धन्य है आप ने हमें प्रकाश में पंहुचाया है हम बड़े प्रसन्नता में मानो हम इसी प्रकार अपने जीवन को क्रियात्मक बनाएंगें। मेरे प्यारे! इस प्रकार जब उन्होंने वर्णन किया उनकी वर्णन शैली बड़ी विचित्र रही है। मेरे प्यारे! मैं भी केवल इनको परिचय के रूप में तुम्हे दे रहा हूं, उनकी विचार धारा तो बड़ी विचित्रता में रत्त रही है आज का विचार केवल यह कि हमारा याग पवित्र हो यागम् ब्रह्मे। वेद का मन्त्र, प्रत्येक वेद का मन्त्र बेटा! याग के लिए प्रेरित कर रहा है और हमे प्रेरणा दे रहा है। हम प्रेरित बन करके जब इस प्रकार देखो, यज्ञमान, होतागण, ब्रह्मचारीजन अपने में याज्ञिक बन करके हुत करते हैं तो उनका जीवन पवित्र हो जाता है। तो मेरे प्यारे! यज्ञदत्त इन वाक्यों को पान करके शान्त हो गए। तो विचार क्या, आज का हमारा विचार अब सम्पन्न होने जा रहा है अब मेरे प्यारे महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवम् भूवर्णानं ब्रह्मा वाचन्नमा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव!

अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव की यह इच्छा बनी रहती क्या मैं सूक्ष्म से समय में सर्वत्र ब्रह्माण्ड की वार्ता को एक माला के रूप में परणित कर सकूं। यह जगत बड़ा विचित्र जैसा पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी वर्णन कराया। यह विज्ञान और ज्ञान की प्रतिभा कहलाती है। आज का यह हमारा वाक जिस स्थली पर जा रहा है, वहां एक याग का आयोजन हुआ और मेरा जो हृदय है वह याग में प्रसन्न और यज्ञमान के साथ में रहता है। मैं यज्ञमान से कहता रहता हूं हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे।मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी याग के सम्बन्ध में मानो ऋषि मुनियों की वार्ता प्रगट की और गागर में सागर की कल्पना की है। क्योंकि गागर में सागर ही एक अप्रतम् कहलाता है जो देखो, पिण्ड और ब्रह्माण्ड जैसे परमपिता परमात्मा ने रचा है तो इसी प्रकार आज मेरा जो केवल उद्देश्य है ये केवल विचारों का क्या हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुयपयोग होता रहे। क्योंकि यह जो काल है यह बड़ा विचित्र काल है। यहां वाममार्गियों का देखो, नृत कहलाता है, नृत हो रहा है वह नही होना चाहिए। गृह में देखो, द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए और यज्ञमान के सदैव हृदय में एक द्रव्य का सदुपयोग होना ही मानवीयता कहलाती है। इस मानवीयता के क्षेत्र में मानव को, प्रत्येक मानव को आना ही होता है चाहे कोई भी मानव हो वह उसी क्षेत्र में जाने के लिए सदैव उत्सुक रहता है और यहां उसकी पराकाष्ठा मौन हो जाती है।

राजा याग को अपनाये

विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के सम्मुख कोई विशेष चर्चा तो आज मैं प्रगट नही करूंगा केवल यह कि हमारे इस प्रकार के याग यदि राजा अपना ले तो यह संसार मानो राष्ट्र में किसी प्रकार की सूक्ष्मता नही रह पायेगी। देखो, जब से हमारे राष्ट्र में राजवेत्ताओं ने देखो, याग को अपने से दूरी किया है उस समय से मानो देखो, यह वाममार्गी बन गया है। राजा भी और प्रजा भी दोनों ही वाममार्गी और पूज्यपाद गुरुदेव ने कुछ समय हुआ यह कहा था क्या देखो,

जैसा राजा अपनी प्रजा को बनाना चाहता है अपने जीवन को स्वतः बना ले, तो यह समाज उसी प्रकार का बनता चला जाएगा और जब राजा नही बनेगा राजा का विचार कुछ है प्रजा देखो, उसके साथ बरतती रहती है यह मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बड़े सुन्दर वाक्यों में अपने वाक प्रगट किए हैं। मैं यह कहता रहता हूं कि इन वाक्यों में एक महानता विद्यमान होती है। तो राजा को चाहिए जब से याग में राजाओं ने याग को त्यागा है, प्रजा ने त्यागा है उस समय से वाममार्ग एक बलवती हो गया है और वाममार्ग के आने से देखो, दुरा, दुष विचार बन गये हैं।देखो, वह अमृत नही रह करके अनवरत हो गया है। उस अनवरत के हो जाने से देखो, राष्ट्रीय प्रणाली समाप्त होने जा रही है। तो विचार आता है कि राजा के राष्ट्र में जो नाना प्रकार की हिंसा हो रही है, इन हिंसा का परिणाम यही है क्योंकि राजा नही रहे हैं। जब राजा नही रहे तो हिंसा प्रायः बलवती हो जाती है हिंसा का परिणाम है मानव का स्वार्थवाद और जब वह स्वार्थ हो करके राजा अपने राष्ट्र का पालन करता है तो प्रजा उसके अनुसार बरतती है। बरत करके देखो, हिंसा नही हो सकती। हिंसा का हिंसा से मानव दमन नही कर सकता, दमन करेगा तो हिंसा प्रचण्ड हो जाएगी यदि हिंसा को नम्रता से, ज्ञान से और विवेक से मानो देखो, हिंसा को विवेक में परणित कर दिया जाए तो हिंसा हिसा नही रहेगी, वह अहिंसा में परणित हो करके ही मानो देखो, संसार और समाज का राष्ट्रवाद अपने में महानता को प्राप्त कर सकता है। मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव से यही कहा था क्या देखो, जब तक राजा ज्ञानी ब्रह्मवेत्ता राजा नही होगा, विवेकी नही होगा तब तक देखो, समाज को महानता नही प्रदान कर सकेगा। क्योंकि महानता का आ जाना बहुत अनिवार्य है, परन्तु स्वयं वह महान बन जाए तो प्रजा में महानता स्वतः आ जाएगी। यह नियम मानो प्रकृति और देखो, चेतना का नियम कहलाता है।

राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर रूढ़ि नही रहनी चाहिए

विचार आता रहता है मैंने बहुत पुरातन काल में यह भी कहा था कि राष्ट्र को यदि

ऊंचा बनाना है तो राजा मध्यस्थ बने और यह नाना प्रकार के जो ईश्वर के नाम पर जो रूढ़ियां हैं इन रूढ़ियों का विनाश होना चाहिए। जब तक रूढ़ियों का विनाश नही होगा तब तक देखो, राजा का राष्ट्र प्रजा में सुखद अनुभव नही कर सकेगा और प्रजा सुखी नही बन सकेगी। सुखद जब होता है जब नाना प्रकार की जो रूढ़ियां हैं, ईश्वर के नाम पर क्योंकि ईश्वर के नाम पर जब रूढ़ि होती है तो एक रूढ़ि दूसरे को नष्ट करना चाहती है, एक रुढ़ि दूसरे का रक्त बहाना चाहती है जब रक्त बहानी यह रूढ़ियां हैं तो इन रूढ़ियों को क्यों नष्ट कर देना चाहिए। राजा ब्रह्मज्ञानी हो और उनकी विचार धारा, प्रत्येक रुढ़ियों के आचार्यों की विचारधारा को श्रवण किया जाए और जिस विचारधारा पर विज्ञान और मानवता स्थिर हो जाए उसी को राजा को अपना करके अपने राष्ट्र में उसे मानो देखो, उसका प्रसार करना चाहिए। यह राजा का कर्तव्य है। राजा यदि इस प्रकार के नियम नही बनाता है केवल देखो, दमन में लगा रहेगा, तो दमन अन्त में प्रचण्ड होती है वह अग्नि और प्रदीप्त हो जाएगी। देखो, जिस कारणों से अग्नि प्रचण्ड होती है उन कारणों को देखो, राजा को अपने में विचार करना चाहिए। बुद्धिमान, विवेकी हो करके उन कारणों को विचारे, कारण क्या है, रुढ़ि है। जब ज्ञान से मानव दूरी चला जाता है विवेक से दूरी चला जाता है और धर्म और मानवीयता से दूरी चला जाता है तो वहां अग्नि प्रायः प्रचण्ड हो जाती है और वह अग्नि देखो, एक समय वह आता है क्या एक एक गृह में अग्नि प्रदीप्त हो करके अग्नि के काण्डों का एक राष्ट्र बन जाता है।

आज मैं मानो इस सम्बन्ध में विशेषता ने दे करके राजा ज्ञानी न हो करके स्वार्थी बन गये हैं, द्रव्य चाहते हैं। जितना द्रव्य को एकत्रित करने लगो उतना अज्ञान आता चला जाएगा। जितना देखो, द्रव्य को त्यागोगे, द्रव्य को सदुपयोग में लगाओगे उतना ही मानो देखो, द्रव्य तुम्हारी ममतामयी बन करके तुम्हारे मानो देखो, तुम्हारे मानो देखो, हृदय से आलिंगन करती रहेगी। इसी प्रकार देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में इन वाक्यों को कहा आज भी मुझे पुनः से स्मरण आ रहे हैं। आज मैं

विशेषता में न ले जाता हुआ केवल यही क्या रूढ़ियां नष्ट होनी चाहिए और द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। जितना द्रव्य का दुरूपयोग होगा उतना द्रव्य तुमसे दूरी चला जाएगा। मानो देखो, इस प्रकार और देखो, द्रव्य को जितना भी दूरी देखो, सदुपयोग करोगे द्रव्य तुम्हारे समीप आयेगा। जब सदुपयोग नही होगा तो द्रव्य नही आ सकेगा। दुरुपयोग जितना होगा उतना द्रव्य तुमसे दूरी चला जाएगा। तो इसीलिए जितनी रूढ़ियां हैं इनके मूल में रूढ़ियां विद्यमान रहती हैं ......शेष अनुपलब्ध।

4. 920209-यज्ञोमयी स्वरूप पुस्तक ब्रह्म की ओर

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां ये पाठ्यक्रम परम्परागतों से ही, प्रायः मानवीय मस्तिष्कों में समाहित हो रहा है। क्योंकि हमारे यहां वेदों का जो उद्गीत गाया जाता है और यह भिन्न भिन्न प्रकार इसके उच्चारण करने के माने गए हैं। जैसे हमारे यहां जटा पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में जब वेदों का गान गाते हैं तो हमारी अन्तरात्मा में एक प्रसन्नता की तरंगे ओत प्रोत हो जाती हैं। तो आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन कर रहा है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और यह जो ब्रह्माण्ड प्रायः हमें दृष्टिपात आ रहा है, उसकी नाभि का वर्णन होता रहा है। वेद का वाक कहता है नाभ्यां भवितं ब्रह्मा वेद का वाक कहता है कि ब्रह्माण्ड की नाभि क्या है? तो वेद का उत्तर कहता है हे सम्भव ब्रहे यज्ञाः मानो यह जो याग है इस संसार की अथवा इस ब्रह्माण्ड रूपी भवन की नाभि मानी जाती है। जैसे मानव के शरीर में नाभि है और वह शरीर का प्रायः मध्य में ही रूप माना जाता है। इसी प्रकार यह जो यज्ञ है, यह संसार की नाभि है और ब्रह्माण्ड का मानो इसमें नृत होता रहा है। क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों ने इस याग के ऊपर बेटा! बहुत अनुसन्धान किया और इसके ऊपर बहुत ही अपने अपने विचार विनिमय देने का प्रयास किया है।

परमपिता परमात्मा का याग

आज का हमारा वेदमन्त्र यह उच्चारण कर रहा था यजनं ब्रह्मा यजनं प्रव्हा कृतं देवाः क्या वह जो परमपिता परमात्मा है वह यज्ञोमयी स्वरूप रहता है और परमपिता परमात्मा का यह याग ही आयतन है, यह गृह है यही सदन माना गया है और वह उसी में वास करने वाला है। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप कहा करते हैं। तो वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है याग

उसका आयतन है मानो देखो, उसमें वह वास कर रहा है। याग उसका गृह है वह उसी में वस रहा है और याग मानो देखो, ब्रह्मणे मानो देखो, आयतनं ब्रह्मा सदनं ब्रह्मा वह सदनं ब्रह्मा मानो देखो, उसी को वह अपने में धारण करता रहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है ओर भी नाना ऋषियों ने इसके ऊपर अपना मन्तव्य दिया है। उन्होंने मन्तव्य देते हुए कहा है क्या यह जो संसार रूपी मानो जो एक जगत है, ब्रह्माण्ड है। इस ब्रह्माण्ड में मानो ये जो देखो, यह ब्रह्माण्ड एक प्रकार की यज्ञशाला है और परमपिता परमात्मा का जो जगत है यह यज्ञशाला है और उसमें मानो परमपिता परमात्मा स्वयं इस यज्ञशाला के ब्रह्मा है और आत्मा यज्ञमान है और मुनिवरों! देखो, कोई उनमें से कोई होता है, कोई उद्गाता है और अध्वर्यु बन करके मुनिवरों! देखो, याग का चलन हो रहा है। तो विचार आता रहता है कि यह परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी जगत है। यह आत्मा बेटा! यज्ञमान है क्योंकि जब भी संसार का निर्माण होता है, इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया अथवा उस निर्माणवेत्ता ने यज्ञमयी स्वरूपवादी वह यज्ञ का वर्णन किया, निर्माण किया। तो बेटा! देखो, आत्मा के लिए संसार रूपी भवन का निर्माण किया है। यह मानो एक प्रकार की यज्ञशाला है और मानव शरीर को मानो देखो, उसी का नृत्त करके यह सूक्ष्म सा ब्रह्माण्ड का उन्होंने निर्माण किया जो देखो, मानव शरीर के रूप में विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो, इसमें अग्नि देवताओं का मुख है और मुनिवरों! देखो, वायु प्राणवर्धक है, प्राणों को देने वाला है, अग्नि तेजोमयी बनाने वाला है और देखो, यह आपो पिण्डों का निर्माण करता रहता है। तो विचार आता रहता है कि यज्ञं भूतं ब्रह्मा यजनं ब्रहे क्या वह परमपिता परमात्मा बेटा! यज्ञोमयी स्वीकार किया जाता है। तो आज हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वीकार करते हुए अपनी विचारधारा को मानो देखो, अपने में धारण करके अपनी धारयामि अकृतियों को अपनाए।

विचार आता रहता है बेटा! आज मैं तुम्हें इस सम्बन्ध में कोई विचार देने ही आया

हूं कि मैं परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन करूं परन्तु विचार केवल यह कि यह जो भवन है, परमात्मा का जगत यह नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों वाला जगत है। आकाश गंगाओं वाला जगत है, यह नाना निहारिकाओं वाला जगत है। और अवन्तिकाओं वाला जगत है। बेटा! यह उस परमपिता परमात्मा का एक याग हो रहा है और वह स्वयं ब्रह्मा बन करके बेटा! इसका संचालन कर रहे हैं और आत्मा मानो देखो, आत्मा के लिए वह संचालित हो रहा है। तो विचार आता है कि परमपिता परमात्मा एक एक परमाणु में निहित हैं। एक एक अणु में निहित माने जाते हैं क्योंकि परमात्मा विभु हैं और यह संसार का जितना भी है यह परमाणु के रूप में प्रायः हमें दृष्टिपात आते हैं और वह परमपिता परमात्मा विभु है। वह सर्वत्रता में ओत प्रोत है, एक एक कण कण में मानो उसका वास हो रहा है इसीलिए यज्ञोमयी मानो देखो, वह यज्ञमयी स्वरूप माना गया है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूं क्योंकि महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां प्रातः कालीन बेटा! अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके वह नाना प्रकार के यागों का चयन करते रहे हैं। नाना प्रकार के यागों का चलन प्रायः उनके यहां होता रहा है। तो आओ आज मैं बेटा! तुम्हें देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के उस विद्यालय में ले जाना चाहता हूं, जहां प्रातःकालीन ब्रह्मचारी अपने अपने आसनों पर एक पंक्ति में यज्ञशाला के मध्य मे विद्यमान है और आचार्य का ऊर्ध्वामयी आसन है और वह न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन करते हुए उन्होंने अपनी आख्यिका प्रारम्भ की। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम मानो देखो, अपने में यागिक बनो और यागिक बन करके प्रातःकालीन याग करो जिससे तुम्हारा विद्यालय सुगन्धित हो जाए। क्योंकि विद्यालय जब सुगन्धित विद्यालय होने लगता है तो आचार्य और ब्रह्मचारी दोनों देखो, महानता का उद्गीत गाते हैं। वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके परमात्मा को यशो का गान गाने लगते हैं उनका आहार और व्यवहार

पवित्रता की आभा में परणित हो जाता है।

ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा

तो मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक उन्होंने कहा तो ब्रह्मचारी अमृतं ब्रह्मे लोकां हे ब्रह्मचारियों! तुम एक याग के द्वारा एक एक लोक को विजय कर सकते हो। मानो जैसे भू भुवः स्वः इन सर्वत्रता को तुम विजय कर सकते हो। जब तुम यागिक बनोगे तो एक एक लोक को विजय करके तुम इस संसार को जानते हुए मानो देखो, अपने में इसे अपने में ही इस दृष्टिपात करने लगोगे। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज जब इस प्रकार का उपदेश दे रहे थे। वह उच्चारण कर रहे थे, चक्षुम्मे पाहि, श्रोत्रम्मे पाहि, घ्राणम्मे पाहि अमृतम् देखो, वह अरस्सुताः त्वचा में पाहि। हे ब्रह्मचारियों! तुम अपनी इन्द्रियों में परमात्मा को जानना चाहते हो, परमात्मा को मानो देखो, एक एक इन्द्रिय के विषय को जान करके और वह परमात्मा प्रत्येक इन्द्रिय को देखो, आयतन माना गया है। इसीलिए आयतन होने से वह परमपिता परमात्मा उनका संचालन कर रहा है। इसीलिए वह इन्द्रियों से नही पाया जाता वह परमपिता परमात्मा मानो देखो, इन्द्रियों के साकल्यों का विषयों का साकल्य बनाने से ब्रह्माण्ड को मापने से और ब्रह्माण्ड को मापते हुए बेटा! उनका साकल्य बना करके मेरे प्यारे! देखो, जब उसको हुत करोगे अपने हृदय में हुत करना प्रारम्भ करोगे तो बेटा! वह परमपिता परमात्मा का तुम्हें दर्शन होने लगेगा।

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! वेद का ऋषि कहता है यजनं ब्रह्मा यजनम् विष्णु ब्रव्हे देवत्वाम् वाक कहता है कि वह परमपिता परमात्मा ब्रह्म है और उसका जो क्रियाकलाप है वह सर्वत्र मानो देखो, ब्रह्म तुल्य माना गया है। तो विचार आता है जब बेटा! देखो, इस प्रकार महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रत्येक इन्द्रियों का वर्णन कर रहे थे। चक्षुम्मे पाहि मानो तुम चक्षु के द्वारा जानना चाहते हो। तुम्हे मृत्यु से पार होना है तो मानो देखो, उस अग्नि, चक्षु अग्नि ब्रह्मे देखो, उसको अग्नि स्वरूप बनाओ। अग्नि ही मानो जब अग्नि से उल्लांघ जाओगे, तुम मृत्युञ्जय बन जाओगे। मृत्यु तुम्हारे समीप न आयेगी। मानो देखो, घ्राणम्मे पाहि तुम घ्राण से

पृथ्वी को विजय करने वाले बनो और ज्ञान करके पृथ्वी के विज्ञान को जानो। ज्ञान में प्रवेश हो जाओ। यदि अन्तम् ब्रव्हे देखो, वह शब्दम्मे पाहि मानो देखो, अन्तरिक्षम्मे पाहि, अन्तरिक्ष से ही श्रोत्रों का समन्वय रहता है। मानो देखो, उसी को पाना चाहते हो तो इसे तुम मानो देखो, उल्लांघ जाओ। शब्द ही वहां अपने में क्रियाकलापों में नही आता है। तो इसीलिए प्रत्येक इन्द्रिय के विषयों को तुम उल्लांघ करके और इन्द्रिय जिससे निर्माणित है और जिन देवताओं का वह वाहन है मानो देखो, उसे देवता के समीप तुम चले जाओ तो तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। बेटा! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारियों को इस प्रकार नैतिक शिक्षा देते रहे। तो इतने में बेटा! एक यज्ञदत्त नाम का ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ।

चौबीस होताओं से याग

यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! एक यज्ञमान मेरे समीप विद्यमान है वह यज्ञमान याग करना चाहता है तो वह याग कैसे करें? उन्होंने कहा यज्ञं कितने होताओं के द्वारा याग करे? जब यज्ञदत्त ने यह प्रश्न किया तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या अमृतं ब्रह्मे मानो देखो, परमपिता परमात्मा ने वेद की आख्यिका में ब्रह्माण्ड को मानो देखो इन शब्दों में भरण कर दिया है। अमृतं देखो, यागां आध्यात्मिक याग और भौतिक याग दोनों से उसका समन्य किया है। उन्होंने कहा कि यागां भूतं ब्रह्मा व्रतम देवाः मानो तुम याग में परणित हो जाओ। अमृतं देखो, वृत्ति देवाः कितने होताओं के द्वारा याग करे? तो वेद का वाक कहता है चतुष्म ब्रह्मा देवाः क्या चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! जब यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता है तो वह चौबीस होताओं के द्वारा याग करे और चौबीस होता कौन से हैं? बेटा! देखो, दस प्राण है और दस इन्द्रियां हैं और मन, बुद्धि, चित्त अहङ्कार यह मानो चतुष अन्तःकरण कहलाता है। मेरे प्यारे! इनको एकाग्र करते हुए इनको अपने में धारयामि बनाते हुए यागिक बने। मानो दखो दस प्राणों को जानने वाले बनो। दस प्राणों को जानने वाला बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड को माप लेता है। इन प्राणों के द्वारा देखो, प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान नाग

देवदत्त, धनञ्जयत, कुरु और कृकल यह दस प्राण कहलाते हैं, जो बेटा! देखो, एकाग्र करके जब साधक अपने में देखो, यागिक बनता है तो आत्मा के मानो देखो, प्रकाश में रत्त होता है। मेरे प्यारे! देखो, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां हैं। कर्मठ बन करके ज्ञानेन्द्रियों में रत्त हो जाओ और अमृतम् देखो, विज्ञान में देखो, वह प्रत्येक पदार्थ को जानने की इच्छा करते हुए क्रियात्मकता में अपने जीवन को बनाने का प्रयास करो और मन, बुद्धि, चित्त अहङ्कार यह चतुष अन्तःकरण कहलाता है। इस अन्तःकरण के माध्यम से मानो देखो, बेटा! आध्यात्मिकवादी बन करके परमपिता परमात्मा की वृत्तियों को जानने वाला बनता है। तो विचार आता है।

तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, मैं व्याख्या नहीं दूंगां केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूं। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे यज्ञदत्त ब्रह्मचारी! यज्ञमान यदि याग करना चाहता है तो चौबीस होताओं के द्वारा वह याग करने वाला बने और देखो, यह पांच श्रोत्रम् मानो देखो, उनका पठन पाठन करता रहे और कहे प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, समानाय, उदानाय, व्यानाय इस प्रकार उदानाय कह करके हूत प्रारम्भ करो जिससे मेरे प्यारे! देखो, उनका यज्ञ सफलता के आंगन में प्रवेश हो जाए। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! हमारे आचार्यों ने भौतिक और देखो, आध्यात्मिकवाद का दोनों का विश्लेषण किया है और दोनों की विभिन्न रूपों से विवेचना करते उन्होंने कहा व्रतम् ब्रह्मा क्या मानो देखो, ब्रह्म का आह्वान किया जाए।

सत्रह होताओं से याग

मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार का वर्णन किया उन्होंने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग करे? तो उस समय याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं क्या सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। सत्रह होता कौन से होते हैं? बेटा! सत्रह होताओं में मुनिवरों! देखो, दस प्राण और पांच मानो देखो, प्रकृति की धाराएं और मन बुद्धि, यह सत्रह होता कहलाते हैं। जिनके द्वारा यागिक मुनिवरों! देखो, याग करने के लिए तत्पर होता है और वह याग करने लगता है।

जैसे अमृतं ब्रह्मा व्रतं देवाः वह अपने में यागिक बन करके बेटा! सत्रह होताओं के द्वारा याग करे। दस प्राणों को बेटा! देखो, प्राण को अपान में, अपान को व्यान में, व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करके बेटा! योगाभ्यास में परणित हो जाए और मुनिवरों! देखो, नाग, देवदत्त, धनञ्जय उसके स्वरूप को जान करके, हम सब में सम बन करके और मुनिवरों! देखो, प्रकृति की तन्मात्राएं जो पांच हैं इनमें जब समावेश करना जानता है तो मेरे प्यार देखो, यह अश्व पर आश्वस्त हो करके योगी लोक लोकान्तरों का बेटा! वह भ्रमण करने लगता है। क्योंकि मन और बुद्धि उसके समीप हैं। वह दोनों वाहन बन करके मेरे प्यारे! देखो, चित्त के मण्डल के साथ में रमण करने लगता है। तो वह हमारे यहां जब इस शरीर को त्याग करके आत्मा जाता है तो बेटा! सूक्ष्म शरीर का यह मुनिवरों! देखो, सत्रह होताओं की यह एक यज्ञशाला मानी जाती है जहां हुत होता है और यह प्राणाय, समानाय, अपानाय, उदानाय, व्यानाय कह करके हुत करना प्रारम्भ करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा है क्या जो इस सूक्ष्म शरीर के अव्ययों को जानता है वह मेरे प्यारे! देखो, मृत्यु से विजय हो जाता है, वह मृत्युञ्जय बनने का प्रयास करता है।

ग्यारह होताओं से याग

इस प्रकार बेटा! देखो, ऋषि ने वर्णन किया, वर्णन करने के पश्चात उन्होंने पुनः यह प्रश्न किया यज्ञदत्त ने हे प्रभु! देखो, यज्ञमान की सन्तुष्टि नही हुई है। यज्ञमान याग करना चाहता तो कितने होताओं के द्वारा याग करें? उन्होंने कहा यज्ञं ब्रह्मा अव्रतम् देखो, ग्यारह होताओं के द्वारा याग करे। बेटा! ग्यारह होता कौन से होते हैं? मानो दस इन्द्रियां हैं और ग्यारहवां मन कहलाता हैं। इनके द्वारा जब याग किया जाता है, इनके विषयों का साकल्य बनाया जाता है इन्द्रियों के विषयों का जो साकल्य बनाया जाता है मेरे पुत्रों! देखो, वह मनस्तव को जानता है और मनस्तव को एकाग्र करने की उसमें देखो, युक्तियां विद्यमान होती हैं। तो वह मंगलं ब्रह्मा वर्णनं ब्रव्हे कृतं देवाः तो मुनिवरों! देखो, वह देवता बन जाता है। मुनिवरों!

देखो, इन्द्रियों को एकाग्र करके मन देखो, जैसे एक रथ है और रथ में मुनिवरों! देखो, दस घोड़े विद्यमान है, दस अश्व हैं और मानो देखो, एक सारथी विद्यमान है और मुनिवरों! देखो, वह उसमें विद्यमान होने वाला कोई स्वामी है। इसी प्रकार देखो, आत्मा स्वामी है और मुनिवरों! देखो, ये दस इन्द्रियां उसके अश्व हैं और मुनिवरों! देखो, यह मन सारथी बनता है और गमन करता रहता है यदि मन में ज्ञान है आत्मा के प्रकाश में एकाग्र हो करके मानो गमन करता है इस रथ को तो बेटा! यह रथ मानो देखो, मोक्ष के मार्ग पर चला जाता है उसकी पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है। लोक लोकान्तरों को अपने में धारण करता हुआ विज्ञान की प्रतिष्ठा में वह प्रतिष्ठित हो जाता है। जब बेटा! देखो, ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, क्या देखो, ग्यारह होताओं के द्वारा याग करे, ग्यारहम् ब्रह्मा व्रतम् देखो, प्राणाय, अपानाय, व्यानाय, उदानाय, समानाय इस प्रकार देखो, हुत करने वाला बनेगा तो बेटा! वह इस लोक को विजय कर लेता है अपने मानवीयत्व को विजय कर लेता है।

नौ होताओं से याग

मेरे पुत्रों! देखो, अमृतं ब्रहे यज्ञदत्त ने कहा हे प्रभु! यज्ञमान की सन्तुष्टि नही हुई है यह यज्ञमान यह कहता है कि अमृतम् मैं कितने होताओं के द्वारा याग करूं? यज्ञमान याग करना चाहता है। उन्होंने कहा यज्ञमान याग करना चाहता है तो मानव ब्रह्मे देखो, वह नौ होताओं के द्वारा याग करे। इस मानव शरीर रूपी यज्ञशाला में बेटा! नौ द्वार कहलाते हैं। और एक एक द्वार पर एक एक देवता, ऋषि विद्यमान रहता है और वह मुनिवरों! देखो, नौ द्वारों में ब्रह्मे देखो, नासिका के छिद्र है दो नेत्रों के छिद्र हैं, और दो श्रोत्रों के छिद्र हैं और एक मुखारबिन्द कहलाता है एक उपस्थ और एक गुहा यह मानो देखो, नौ द्वार कहलाते हैं यह एक ऐसी अयोध्यापुरी है। अरे, जिसके ऊपर मानव विचार विनिमय करता है और यह कहता है अयोध्यां भूतं नौ द्वारम् वृति देवाः यह नौ द्वारों और चक्रों वाली मानो एक पुरी है जिसको अयोध्या कहते हैं। जो विजय नही हो पाती है। परन्तु देखो,

उसी का निर्माण उस परमदेव ने किया है, आनन्दवत ने किया है तो हमे विचारना है कि इन नौ द्वारों को अपने में जानते हुए नौ द्वार पर नौ ऋषि विद्यमान रहते हैं किसी पर कश्यप है, तो किसी पर जमदग्नि है किसी पर वशिष्ठ है तो किसी पर मानो देखो, अवरति कहलाया जाता है। किसी पर मानो देखो, कश्यप अव्रहे अवृति मङ्गलम् ब्रह्मे व्राहा। मेरे प्यारे! देखो, सप्त ऋषियों की यह पुरी कहलाती है। तो विचार आता रहता है कि हम इस पुरी को विजय करने वाले बनें और इन द्वारों पर जो देवता विद्यमान हैं उन देवताओं को जान करके हम ब्रह्माण्ड को जान सकते हैं और ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में प्रतिष्ठित हो सकते हैं।

सप्त होताओं से याग

मेरे प्यारे! देखो, यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग करे? उन्होंने कहा सप्त होताओं के द्वारा याग करे। मेरे प्यारे! देखो, सप्त होता कौन से हैं जो देखो, मुखारविन्दं ब्रव्हा इसी में रत्त रहते है। बेटा! देखो, अत्रि वाणी को कहते हैं जो अति आहार करने वाली है। मानो देखो, उसका उदर शान्त नही होता है, इसे अत्रि कहते हैं। और मुनिवरों! देखो, दो नेत्रों के छिद्र हैं, दो श्रोत्रों के और दो मानो घ्राण और मुखारबिन्द में देखो, दशं ब्रह्मे यह मानं ब्रही सप्तं होताः। यह होताओं को जान करके अग्रय करके बेटा! याग करना चाहिए। यागां भूतं ब्रह्मा यागां देवत्वं ब्रह्मे वाचा सम्भवही व्रतं यागा हिरण्यों सत्यं देवत्वाः मेरे प्यारे! देखो, सप्त होताओं के द्वारा याग करने वाले बनो।

पांच होताओं से याग

जब यह वाक यज्ञदत्त ने श्रवण किया तो यज्ञदत्त ने पुनः प्रश्न किया कि महाराज यज्ञमान याग करना चाहता है कितना होताओं के द्वारा याग होना चाहिए? उन्होंने कहा कि यज्ञमान याग करना चाहता है तो मानं ब्रह्मा वर्णस्सुतं ब्रह्मे मानो पंचं ब्रहे पांच होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। यह पांच मानो देखो, पञ्च महाभूत समाहित रहते हैं। बेटा! गुरुत्व, तरलत्व, तेजोमयी और मुनिवरों! देखो, प्राणस्वरूप अग्नि

और देखो, वायु अन्तरिक्षं ब्रव्हे मानो देखो, वह पञ्च होता कहलाते हैं। पांच इन्द्रियां मानो देखो, सर्वत्र विषयों को अपने में धारण किए रहता है। मानो देखो, यह पञ्च महाभूतों का जगत है, पञ्च महाभूतों का यह पिण्ड है जिसमें आत्मा वास करता है। मेरे प्यारे! देखो, इसमें यह वृत्त रहता है। यह संसार भी पञ्च महाभूतों का है जहां परमपिता परमात्मा मानो एक एक कण कण में विद्यमान रहता है। तो हमे उस यज्ञमयी स्वरूप के ऊपर हमें अन्वेषण करना चाहिए। यह अन्वेषण का विषय है। यह आज मैं तुम्हे परिचय देने आया हूं। व्याख्याता नही हूं। व्याख्यान देने नही आया हूं केवल परिचय देने आया हूं। तो मेरे प्यारे! देखो, पञ्च होताओं के द्वारा याग करो।

तीन होताओं से याग

याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब इस प्रकार का वर्णन किया। मेरे प्यारे! देखो, यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? मेरे प्यारे! देखो, तीन होता कौन से हैं? रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण। इन तीनों का मानो साकल्य बना करके तुम याग करो और इनको विजय करने वाले बनो। मेरे प्यारे! देखो, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण या सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण इस प्रकार उद्गीत गाईये परन्तु देखो, यज्ञ के ऊपर विश्लेषण करोगे तो वही सतोगुण है वही रजोगुण है वही तमोगुण माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, माता की इच्छा पितर की इच्छा है क्या मैं सन्तान को जन्म देना चाहता हूं। माता कहती है कि आओ हम पुत्रेष्टि याग करेंगे। पितर भी कहता है तो बेटा! उसमें तमोगुण है परन्तु भावना सतोगुण की पुट लगी हुई है और रजोगुण की अनुशासन की पुट लगी हुई है तो बेटा! वह एक मनका हुआ। परन्तु रजोगुण में देखो, धारण होना चाहते हैं। अनुशासन में रजोगुण कहते हैं। बेटा! जो अनुशासन में मानो रत्त रहना चाहता है नृत कर रहा है और वह कहता है कि मैं अनुशासित बनूं प्रत्येक इन्द्रियों पर मेरा अनुशासन होना चाहिए। और इस संसार में मैं अनुशासन में जीवीत रहूं। तो बेटा! देखो, यह अनुशासन का नाम रजोगुण है और रजोगुण में तेजोमयी रहने

वाला है तो वह एक मनका वह हुआ। एक सतोगुण है जो पालना में लगा हुआ है। वह माता अपने प्यारे पुत्र का आलंगन कर रही है, अपने में लोरियों का पान कर रही है, और माता कहती है बुद्धोसि, शुद्धोसि, निरंजनोसि। हे आत्मा! हे शरीर में रहने वाला आत्मा! तू शुद्ध है, पवित्र है और निरञ्जन है मानो तू अखण्ड रहने वाली ज्योति शरीर में वास कर रही है। हे आत्मा! ज्ञान और ब्रह्म ज्ञान तेरा लक्ष्य है। जब इस प्रकार माता मानो सतोगुण में प्रवेश होती है तो सत्य में ही उसे उपदेश देती है और सत्य में उपदेश देती हुई उसके उदर की पूर्ति करती है, लोरियों का पान करा देती है तो मेरे प्यारे! देखो, वह सतोगुण कहलाता है इसी प्रकार राजा भी तीन गुणों से प्रजा का पालन करता है सबसे प्रथम सतोगुण में, द्वितीय मानो देखो, रजोगुण में और तृतीय तमोगुण की प्रवृतियों में मानो वह अकृत हो जाता है राष्ट्र का पालन करता है। इसी प्रकार देखो, आचार्य दो गुणों से पालन करता है सतोगुण व रजोगुण के द्वारा मानो तमोगुण की भावना नही उत्पन्न होनी चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार जब पालना के मूल में यह रजोगुण, तमोगुण यह तीन मनके हैं और एक ही सूत्र में पिरोये जाते हैं। तो बेटा! देखो, यह त्रैतवाद कहलाता है तीन प्रकार के पदार्थ है आत्मा, परमात्मा, प्रकृति मानो देखो, यह तीन देखो, एक संसार का निर्माण करने वाला एक मानो जिससे वह निर्माण करता है और जिसके लिए निर्माण करता है बेटा! तीन पदार्थ बन जाते हैं इसी प्रकार ओ३म् की तीन मात्राएं हैं अ,उ,और म् यह तीन मात्राओं में बेटा! जितना भी मानव की शिक्षा पद्धति है वह तीन ही अक्षरों में बेटा! देखो, उसमें निहित रहती है। उसी में अ है उसी में उ, है और उसी में म् है मानो देखो, यह सर्वत्र जगत निहित रहता है मेरे प्यारे! देखो, उ में मानव सिमट जाता है और उ में मानव वास करने लगता है, तो विचार विनिमय क्या है, मेरे पुत्रों! अमृतम् देवव्रतं ब्रव्हा ये तीन होताओं के द्वारा जब याग होता है तीन मात्रा बेटा! भू भुवः स्वः में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के मानो परमाणु होते हैं गुरुत्व, तरलत्व, और तेजोमयी जिनके द्वारा बेटा! सर्वत्र विज्ञान उनके आश्रित

रहता है। इस प्रकार मेरे प्यारे! जब मानव अपने में रत्त होने लगता है तो अपनी आभाओं में रमण करने लगता है। आओ मेरे प्यारे! देखो, जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने व्याख्या के लिए कहा ब्रह्मचारियों तुम्हे मैं इसकी व्याख्या नहीं दूंगां। आज बेटा! मैं भी तुम में व्याख्याता नही बनना चाहता हूं केवल यह कि मानो देखो, तीन होताओं के द्वारा जब याग होता है तो मेरे प्यारे! देखो, यह संसार अपने में अपनेपन को दृष्टिपात कर लेता है।

दो होताओं के द्वारा याग

मेरे प्यारे! देखो, जब यज्ञदत्त मौन होने लगे और याज्ञवल्क्य जैसे मौन हुए तो यज्ञदत्त पुनः उपस्थित हो करके नतमस्तिष्क हो करके बोले प्रभु! आप जैसे हमारे आचार्य है आपको धन्य है हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूं कि यज्ञमान याग करना चाहता है यह याग कैसे करें, कितने होताओं के द्वारा याग करे? उन्होंने कहा कि यज्ञमान याग करना चाहता है तो मानो देखो, दो होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। प्रकृति और ब्रह्म दोनों ही दोनो को मानो सम्मिलन हो करके यह संसार की रचना होती है। मेरे प्यारे! देखो, जब दोनों एक सूत्र में सूत्रित हो जाते हैं तो मानो देखो, रचना का एक मूलक बन जाता है। तो विचार आता रहता है विचारम् बहु अमृतं देवत्वं भूतम् ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, उसको चरी कहते हैं परमात्मा को ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्म और चरी दोनों का मिलान हो करके बेटा! यह बेटा! देखो, सृष्टि का व्यवधान चल रहा है यह गतिवान हो रहा है। विचार विनिमय क्या वेद का ऋषि कहता है आचार्य याज्ञवल्क्य ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम देखो, ब्रह्म को इस चरी को जानो और देखो, ब्रह्म में इसको सिमट करके जानते रहो। इसमें जब समावेश कर दोगे तो बेटा! देखो, यह होता अपने में यागिक बन जाते हैं।

एक होता से याग

एक होता के द्वारा याग करो, तो एक ब्रह्म को अपने में समेट लो। एक ब्रह्म को ही मानो देखो, अपने हृदय में हृदय से हृदय की आभा में प्रवेश कर जाओं तो मानो देखो, इस प्रकार तुम यागिक बन करके अपने जीवन को ऊंचा बनाओ। तो

मेरे प्यारे! देखो, इसमें राष्ट्रवाद, इसमें मानववाद, इसमें दार्शनिकवाद और मुनिवरों! इसमें क्रियाकलाप भी सब निहित रहते हैं। तो विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए अथवा उसमें देखो, यागों का व्यवधान करते हुए दार्शनिकता से विचार विनिमय करते रहें और देखो, उसको अपने में धारण करते हुए अपने मस्तिष्क में देखो, मन मस्तिष्क को एकाग्र करके और तुम परमात्मा के इस संसार रूपी यज्ञशाला को जानने का प्रयास करो।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूं। मैं कोई व्याख्याता नही हूं। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूं। यदि इनकी व्याख्या करने लगे तो बहुत समय की आवश्यकता है। विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा हे ब्रह्मचारी! तुम याग करो तो इस प्रकार करो। तो मेरे प्यारे! देखो, उन दोनों ने ब्रह्मे यज्ञदत्त ने और श्वेत ब्रह्मचारी ने दोनों ने कहा ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और यह कहा कि प्रभु धन्य है। आपका जो अध्ययन है इस सम्बन्ध में बड़ा गम्भीर है। उन्होंने कहा आप ने आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय करने का प्रयास किया है। इसी को जान करके मानव विज्ञान में प्रवेश करता है और इसी को जान करके देखो, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाता है। परमात्मा के जगत में रहना है तो परमात्मा के राष्ट्र में हमें अपने को स्वीकार करना होगा और अपने में मानो देखो, अपनेपन को उसी में निहित हो करके अपने में शान्त हो जाएं। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो बेटा! देखो, वह मौन हो गए। तो आज के हमारे वाक उच्चारण करने का अभिप्राय क्या है हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, परमात्मा के इस अमूल्य जगत को विचारते हुए अपने में मानो देखो, रजोगुण, तमोगुण सर्वत्रता को धारण करते हुए अपने मानव जीवन को ऊंचा बनाए। आज का यह हमारा वाक समाप्त अब मेरे प्यारे महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवां भूतं भविवर्णनमाः देवां भविताः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव

अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने नाना प्रकार की वार्ताएं प्रगट की हैं। परन्तु गागर में सागर की कल्पनाएं की हैं। यह जो जगत है यह गागर में ही सागर का जगत माना गया है। परन्तु देखो, इन्होंने अपना एक वाक प्रगट किया याग के ऊपर उन्होंने आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का विश्लेषण किया है। आज जहां हमारी यह वाणी जा रही है वहां एक याग का आयोजन हुआ है। यागां भूतं ब्रह्मा मानो देखो, हमारी वाणी वहां जा रही है। और मैं केवल यह कि देखो, यह जो काल है यह बड़ा विचित्र काल है। यह वाम मार्ग का काल कहा जाता है जिसमें देखो, मानव उल्टे मार्ग पर चल रहा है। मानव जो उल्टे मार्ग पर चल देता है उसका आहार और व्यवहार दोनों दूषित हो जाते हैं और जिस मानो राजा के राष्ट्र में आहार और व्यवहार दूषित हो जाते हैं, उस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, रक्तोमयी क्रान्ति का सञ्चार होता रहता है। जहां ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियां बन जाती हैं वह रूढ़ियां एक दूसरे को नष्ट करना चाहती है, इसीलिए वह रूढ़ि होती है। तो आज का विचार कि हे यज्ञमान! जहा यह याग हुआ है मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न है और मैं यह कहता रहता हूं। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे गृह में द्रव्य का समय समय पर सदुपयोग होता रहे क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग होना ही, क्योंकि देखो, मानव को ऊर्ध्वा में ले जाता है और वही द्रव्य का जब दुरूपयोग होता है तो मानव को देखो, निकृष्ट बना देता है। इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से दो ही शब्द उच्चारण करूंगा हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। वह देवत्व को प्राप्त होता हुआ, इसके साथ ही मैं अपने विचारों को शान्त कर रहा हूं। अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कोई वाक और प्रगट कराना नही चाहता हूं। आज का विचार समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने याग के ऊपर देखो, अपनी सहवृत्तियों को उन्होंने अपनी शुभ कामना शुभ वाणी से हृदय

से अपनी वार्ता प्रगट की इसके साथ ही हमारा आज का विचार समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा को जानते हुए देखो, इस यज्ञ विज्ञान में प्रवेश हो करके ज्ञान और कर्म दोनों को अपने में धारयामि बना करके इस सागर से पार हो जाए। यह है आज का वाक समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मनाः प्राची गायाम्। ओ३म् मं गायन्त्वा रेवं आपाम्। अच्छा भगवन्। आज्ञा शान्ति शान्ति शान्तिः।

5. 920211-ब्रह्म की ओर

परमपिता परमात्मा की महिमा एक एक कण कण में व्याप्त

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी है और उसकी महिमा एक एक कण कण में व्याप्त है। जब हम उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करने लगते हैं अथवा वह स्मरण आने लगती है तो अन्तरात्मा गद गद हो जाता है। हमारा वेदमन्त्र कहता है मनम् ब्रह्मा मना वासुतम् वेदमन्त्र कहता है हे मानव! तू उस परमपिता परमात्मा की आनन्दमयी ज्योति को जानने का प्रयास कर क्योंकि वह परमपिता परमात्मा ज्योतिवान है। उस परब्रह्म की ही ज्योति मानो चहुं ओर ओत प्रोत हो रही है और उसका ज्ञान और विज्ञान भी नितान्त माना गया है। परन्तु जब हम यह विचारते रहते हैं कि अम्रतं ब्रह्मा हमारे यहां नाना प्रकार के कथानक विचार आते रहते हैं।

प्रजापति

बेटा! हमारे यहां प्रजापति का नामोकरण आता रहा है। वैदिक साहित्य में प्रजापति नाम राजा का भी है और परमात्मा को भी प्रजापति कहा जाता है जो प्रजा का स्वामी है। मानो देखो, जो उसको गृह बनाए रहता है। तो उस परमात्मा का नाम प्रजापति है। प्रजापति नाम राजा का भी है जो प्रजा का पालक है मानो देखो, राजन मम् ब्रव्हा प्रजा वह प्रजापति कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह जो परमपिता परमात्मा प्रजापति है वह प्रजा का नेतृत्व करने वाले हैं प्रजा का पालन करने और वह पालना में सहयोगी बने रहते हैं परन्तु यह विचार आता रहता है कि केवल ब्रह्मा अस्सुतम् यह कल्याण के लिए नाना प्रकार की वार्ताएं प्रगट करते रहे हैं। तो एक समय बेटा! प्रजापति के द्वार पर प्रायः देवताजन जाते थे और वह

देवत्म ब्रव्हा देवत्व की आभा और देवत्व को प्राप्त करके मानो अपने अपने आसनों पर विद्यमान होते रहे हैं।

देवताओं को उपदेश

मेरे प्यारे! एक समय यह तीन प्रकार की जो वृत्तियां है, सबसे प्रथम देवता, मानव दानव यह तीनों मुनिवरों! देखो, प्रजापति के द्वार पर पंहुचेंऔर प्रजापति से कहा हे प्रभु! हम अपने कल्याण के लिए आप से कुछ उपदेश पाना चाहते हैं जिससे हमारा कल्याण हो। ऐसा मुनिवरों! देखो, स्मरण है कि प्रजापति ने कहा आओ विराजो, वह विराजमान हो गए, तो प्रजापति ने कहा प्रव्हा कृतम् देवताजन जब देवताओं के समीप आए तो उन्होंने द,द,द एक उपदेश दिया और उन्होंने जब द का उपदेश दिया देवताजन गमन करने लगे, तो प्रजापति ने कहा कि तुमने द से क्या प्राप्त किया है? उन्होंने कहा कि द से मानो दमन। तुम जो भी मानव संसार में दमनशील रहेगा वही देवता है और दमनशील किसे कहा जाता है? जो मानव इन्द्रियों का दमन करता है इन्द्रियों पर जय रखने वाला है वह देवता है और वह दमनशील है। मानो देखो, इन्द्रियों पर जो जय विजय करने वाला है अथवा उसको दमन करता है वह देवता कहलाता है तो देवताओं को प्रजापति ने यह उपदेश दिया, कि द,द,द क्या तुम द को लेकर के अपने जीवन को ऊंचा बनाओ।

मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक मन्त्रणा की और यह कहा कि देवां भूतं देवत्वां ब्रह्मा। वेदमन्त्र भी यह कहता है कि देवता वही है जिसकी मानसिक प्रवृत्ति मन मस्तिष्क मानो एकाग्र रहने वाले हैं और मन व मस्तिष्क के द्वारा ही मुनिवरों! देखो, परमात्मा का मनन और चिन्तन करता है। वह देवत्व में देवता है और देवता मुनिवरों! देखो, वह जो देवं ब्रह्मा जैसे देखो, वह याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है, शतपथ ब्राह्मण की रचना करते हुए उन्होंने कहा कि देवं ब्रह्मा देखो, वह जब यह याग और देखो, अपनी आभा पर सुगन्धि मुनिवरों! मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् वह यज्ञ के दस पात्रों में समा ही जाती है। और वह जो धर्म है वह धर्म ध्वनि कहलाती है जिस ध्वनि को अपना करके मुनिवरों! देवता बने हैं और मन पवित्र बनता है,

मस्तिष्क ऊर्ध्वा में गमन करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह द,द,द, कहलाता है। देवता कौन है जो दमनशील रहने वाले हैं देखो, जो दमन ब्रह्मा व्रतम् इन्द्रियों पर दमन करते हैं।

मानव को उपदेश

मेरे प्यारे! देखो, इतने में मानव आये और मानव ने कहा प्रभु! हमारे कल्याण के लिए कोई मार्ग दीजिए। तो उन्होंने कहा कि द,द,द, जब द का उपदेश दिया तो जब वह गमन करने लगे मानव तो प्रजापति ने कहा हे प्रजाओं! तुमने क्या जाना है? तब मानव ने कहा हे प्रभु! आप ने कहा कि देखो, देवत्म ब्रह्मा दमन दम ब्रहे देखो, द से दान है क्या प्रत्येक मानव को संसार में दानी बनना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, दान की जो प्रवृतियां है वह मानव के हृदय में ही उत्पन्न होती हैं और वह कहता है कि जो दानाः दाप्तां देवः जो देखो, दानम् अपने हृदय से कोई ब्रह्मज्ञान दे रहा है वह ब्रह्म दान सर्वदानम् कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, कोई अन्नाद दानं ब्रह्मे ब्रह्मज्ञान को जो उपदेश देता है अथवा ब्रह्मज्ञान देता है वह दानी है और वह दान दे करके ही मुनिवरों! देखो, अपनी प्रवृत्तियों को ऊंचा बनाता है।

महाराजा बलि का दान

मेरे प्यारे! देखो, वह मानव दानी है और दान के द्वारा ही जैसे मुनिवरों! देखो, जैसे महाराजा बलि ने महाराजा बलि ने जब दान की प्रतिभा अवरणम् हमारे यहां बलि नाम मेरे प्यारे! देखो, वह वामन अवतार को उन्होंने मुनिवरों! देखो, अमृतं ब्रव्हे वह सर्वत्र देखो, भु र्भुवः स्वः दान कर दिया था। मेरे प्यारे! वामनावतार को तो महाराज देखो राजा बलि कौन है जो दानम् है मेरे प्यारे! देखो, जो दान देने वाला देखो, वह प्रजापति ब्रह्मणा और राजा बलि जो मेरे प्यारे! देखो, वामन अवतार को दान देता है। मेरे प्यारे! देखो, बलि अमृतम् राजा बलि को कहा जाता है। राजा बलि मुनिवरों! देखो, उनकी पत्नी का नाम विध्यांचल था और विध्यांचल ने उनकी प्रेरणा से देखो, सर्वत्र दान प्रदान कर दिया। याग किया तो मुनिवरों! देखो, जब दान देने लगे तो उन्होंने दान में सबसे प्रथम मानो देखो, त्रिवाम् ब्रह्मा

तीन पगों में मुनिवरों! देखो, ब्रह्माण्ड को माप लिया। सबसे प्रथम एक पग में भू मण्डल को मापा द्वितीय में भुवः को और तीसरे में मुनिवरों! देखो, स्वः मण्डल को माप लिया। तो विचार आता है बेटा! यह चाहे अलंकारिक वार्ता है क्योंकि अलंकार हमारे यहां एक विशिष्टता में परणित किया गया है। देखो, राजा बलि नाम बलि नाम मेरे प्यारे! वर्णस्सुतम् ब्रह्मा व्रतम्। रात्रि को बलि कहा जाता है और मुनिवरों! देखो, उसका जो अन्धकार है वह है विध्यांचली है और मुनिवरो देखो, प्रातःकाल में यह जो सूर्य हे इसका नाम वामन अवतार है जब यह वामन प्रातःकाल में यह जो सूर्य उदय होता है तो उदय होते ही मुनिवरों! देखो, रात्रि अध्यानं सबसे प्रथम देखो, प्रकृति को अपने कणों से माप लेता है और द्वितीय पग में बेटा! देखो, वह अमृतं ब्रह्मा वर्णनम् वह भू मण्डल को माप लेता है और तीसरे में मुनिवरों! देखो, स्वः को माप लेता है। मेरे प्यारे! देखो, उनको माप करके इसको सबको प्रकाश में रत्त कर देता है। हमारे यहां जब विज्ञानवेत्ता अपने में विद्यमान हो करके बेटा! तीन प्रकार के परमाणुओं को मापने लगते हैं सबसे प्रथम गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी परमाणुओं को माप करके बेटा! नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते हैं अथवा लोक लोकान्तरों की उड़ाने भी उड़ते रहते हैं तो विचार आता है मुनिवरों! देखो, इस सम्बन्ध में मैं विज्ञान में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूं। विचार केवल यह कि हमारे यहां बहुत सी वार्त्ताएं अलंकारिक हैं और उनको अलंकार के रूप में हमे सदैव उद्गीत गाना चाहिए। अब अलंकार और देखो, साहित्य की दोनों कि सन्तुलना करते हैं तो बेटा! देखो, उसमें धृष्टता आ जाती है तो हम इतिहास को इतिहास में ही परणित करते चले जाएं और अलंकार को अलंकारों में परणित करेंगें तो यह दोनों भिन्न भिन्न रहेंगें। तो विचार आता है बेटा! देखो, बलि नाम रात्रि का है और विध्यांचली उसके अन्धकार का है वामन मेरे प्यारे! देखो, सूर्य का है जो सबसे प्रथम देखो, पूर्वांचल से इस भू मण्डल को माप लेता है और द्वितीय मानो देखो, किरण से भुवः को और तीसरे में स्वः को नाप करके बेटा! देखो, यह अपने में प्रकाश देता रहता है और यह संसार प्रकाशित हो

जाता है।

मानव को दानी बनने की प्रेरणा

मेरे प्यारे! देखो, यह दानं ब्रह्मा अलंकार तो है परन्तु देखो, यह विचार किया कि मानव को दानी बनना हे जैसे मानो देखो, बलि ने त्रिन्नम् ब्रह्मा देखो, सर्वत्र दान कर दिया था इसी प्रकार तू दान में परणित हो जा। मेरे प्यारे! देखो, दानं भूतं महाभारत के काल में दान की बड़ी विशेषता आई है। देखो, वह महाराजा कर्ण ने अपनी माता को सर्वत्र मानो अस्त्रों शस्त्रों का दान दे दिया था और वह दान दे करके अपने में प्रसन्न युक्त हो गए थे। मृत्यु हो जाती है परन्तु अपने कर्तव्य से मानव को विहीन नही होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, अमृतं ब्रह्मा यह दानतत्वा। तो कहते हैं कि हे मानव! तू दानी बन और दान से क्योंकि राष्ट्र और समाज ऊंचा बनता है, मानव की प्रवृत्ति ऊँची बनती है। मेरे प्यारे! देखो, प्रजापति ने जब यह श्रवण किया तो प्रजापति प्रसन्न हो गए और प्रजापति ने कहा धन्य है मानव तो बेटा! देखो, मानव को द,द,द, का उपदेश दिया।

दैत्यों को उपदेश

अब मुनिवरों! देखो, दैत्यजन आये और दैत्यों ने कहा प्रभु! हम भी अपने कल्याण का मार्ग चाहते हैं। उन्होंने उनको द का उपदेश दिया और द,द,द, ब्रह्मे तो जब वह गमन करने लगे तो प्रजापति ने कहा कहो हे दैत्यराजों! तुमने क्या श्रवण किया? उन्होंने कहा कि प्रभु आप ने कहा कि द,द,द, तो दत्र का अभिप्राय यह है कि मानव को दयावान रहना चाहिए। देखो, दैत्य प्रवृति का प्राणी जितना दया करता रहेगा, दया में निहित रहेगा तो मेरे प्यारे! देखो, वह द,द,द, का उपदेश देखो, उदगादम् ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, उसका कल्याण होता रहेगा। दैत्योम का कल्याण दया से है, मानव का कल्याण दान से है और दैत्यों का कल्याण दानशील रहने से है। तो बेटा! देखो, इसको विचारते हुए द,द,द, ब्रह्मा देखो, हमारे यहां दया करते रहो दयाम् ब्रह्मणां ब्रहे हमारे यहां बेटा! नाना प्रकार सम्प्रदायों का अथवा नाना प्रकार के विचारों का परम्परागतों से भी प्रायः वर्णन रहा है। परन्तु देखो,

जब दैत्यजन आते हैं। तो दैत्यों का एक क्रियाकलाप है जिससे यह दया करते रहें। और दया करके मुनिवरों! प्रत्येक मानव को दया की दृष्टि से दृष्टिपात करें और दया करके मुनिवरों! प्रत्येक मानव को दयावान बनता रहेगा। तो इसीलिए देखो, दमनं ब्रह्मा दमनं देवत्वां लोकाः तो मानव को दमनशील रहना चाहिए। मेरे पुत्रों! दानशील रहना चाहिए और दैत्यों को मुनिवरों! देखो, अपने में मानो दयावान रह करके अपने कल्याण का मार्ग प्राप्त करना चाहिए। तो इस प्रकार का बेटा! प्रजापति ने यह उपदेश दिया।

इन्द्र और विरोचन को एक साथ उपदेश

बेटा! जब प्रजापति ने विरोचन और इन्द्र दोनों विद्यमान थे जब महाराजा इन्द्र को मुनिवरों! देखो, विरोचन को दोनों को उपदेश दिया। उन्होंने कहा उन्हे भी इसी प्रकार का उपदेश दिया उन्होंने प्रजापति से कहा हे ब्रह्मे। भगवन! हमारे कल्याण का इन्द्र ने कहा क्या मैं देवताओं का दूत हूं मैं देवताओं का मानो देवता हूं इन्द्र हे प्रभु! मानो मुझे देवताओं के लिए कुछ कल्याण का मार्ग दीजिए। महाराजा विरोचन ने कहा प्रभु! मैं भी विद्यमान हूं। तो विरोचन से कहा इन्द्र को दोनों को एक दूसरे को उपदेश दिया ब्रह्मणे देखो, इस मानव शरीर को ब्रह्म स्वीकार करो। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी से तुम्हारा कल्याण होगा, इसके ऊपर अध्ययन करो। तो मेरे प्यारे! देखो, मानव शरीर की आभा को ले करके महाराजा विरोचन तो देखो, दैत्यों की सभा में चले गए और दैत्यों ने कहा कि प्रजापति ने कहा है क्या यह शरीर ही ब्रह्म है, इसकी उपासना करो। तो मानो देखो, जो दैत्य प्रवृति के हैं। वह शरीर के पालन पोषण में लगे रहते हैं और पालन पोषण में लगे रहते हैं तो उसी को देखो, वह ब्रह्म स्वीकार करते हैं, इसी में रत्त रहते हैं।

महाराजा इन्द्र का चिन्तन व तप

परन्तु महाराजा इन्द्र ने यह विचारा कि प्रजापति ने ये कहा है को देव वृत्तम देवृत्ति मानो देखो, शरीर को द मानो। परन्तु जब मैं देवताओं की सभा में जाऊंगा तो देवता मेरे से यह प्रश्न करेंगें क्या इसमें तो यह तो रचना का गृह है यह शरीर

देखो, पञ्च महाभूतों का पिण्ड कहलाता है और इसमें आत्मा अपना वास कर रहा है जब आत्मा इसमें वास करता है पञ्च महाभूतों का पिण्ड बना हुआ है तो यह पिण्ड ब्रह्म कैसे हो सकता है। तो मेरे से कोई उत्तर नही बन सकेगा। तो वह पुनः प्रजापति के द्वार पर पंहुचें और प्रजापति से कहा हे प्रभु! देखो, मैं इस शरीर को ब्रह्म स्वीकार नही कर सकता हूं क्योंकि यह तो आत्मा का गृह है और गृह तो देखो, कदापि भी ब्रह्म नही होता। वह तो आत्मा के विश्राम करने का गृह है। वह ब्रह्म की आभा में रत्त रहने वाला है। मेरे प्यारे! प्रजापति ने कहा हे इन्द्र! तुम मेरे यहां इक्कतीस वर्ष तक ब्रह्मचारी रहो। तो मुनिवरों! देखो, वह तपस्वी बनने लगे। इक्कतीस वर्ष तक जब उन्होंने तपस्या की।

मन की दशा

तपस्या के पश्चात पुनः प्रजापति के द्वार पर पंहुचें और प्रजापति से कहा हे प्रभु! मानो ब्रह्म का ज्ञान कराईये। उन्होंने कहा जाओ मानो देखो, अमृतं ब्रह्मणां व्राताः तुम ब्रहे वृत्ति हो मन को ही ब्रह्म स्वीकार करो। मेरे प्यारे! देखो, वह वहां से गमन किया और देखो, विचारने लगे कि जब मैं देवताओं के द्वार पर पंहुचूंगा तो देवता यह प्रश्न करेंगे क्या यह मन कैसे ब्रह्म हो सकता है क्योंकि वह जो मन आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होता है और उस मानो चित्त के मण्डल में जो संस्कार हैं उनको दृष्टिपात करके वह नवीन जगत का निर्माण करता है। मानो स्वप्न में सर्वत्र हमारे शरीरों मे मानो देखो, पत्नियां नही होती पत्नियों का निर्माण हो जाता है और पत्नियों से शरीरों में पति नही होता परन्तु पतियों का निर्माण हो जाता है वर्णास्सुतम, निर्माण हो जाता है द्रव्यहीन बन जाते हैं, द्रव्यहीन द्रव्यपति बन जाते हैं मानो स्वप्नवत में तो यह स्वप्नावस्था मानो यह तो मन की दशा है मैं स्वप्नावस्था को ब्रह्म कैसे स्वीकार करूं? मानो देखो, यह ब्रह्मणां व्रव्हा स्वस्ति नही हो सकता। जब बेटा! देखो, प्रजापति के वाक्यों का मन्थन किया तो उन्होंने कहा कि ये ब्रह्म नही होगा मानम् ब्रव्हे। बेटा! वहां से गमन करते हैं और प्रजापति के द्वार पर पंहुचें । उन्होंने कहा प्रभु! यह जो आपने कहा है कि स्वप्नावस्था जो मन की दशा है इसी

को ब्रह्म स्वीकार करो तो भगवन! मैं स्वीकार नही करता। क्योंकि देवताजन जब यह प्रश्न करेंगें क्या स्वप्न में तो मानो देखो, यह मन आत्मा के प्रकाश में सर्व जगत का द्रष्टा बन जाता है। शरीर में नद नदियों नही होती उसका निर्माण कर लेता है। पत्नी नही होती पत्नियों का निर्माण कर लेता है पति नही होते निर्माण हो जाता है परन्तु देखो, द्रव्यपति और देखो, सर्वद्रष्टा बन जाता है। तो हे प्रभु! मैं इसको स्वीकार नही करूंगा क्योंकि देवता तो यह प्रश्न करेंगें। मेरे प्यारे! देखो, वहां से उन ब्रह्मण से कहा जाओ तुम मानो देखो, यह जागतं ब्रह्मा वर्णास्सुतम् मानं ब्रही चित्तं देवो कृतं देवाः वेद की आख्यिका प्रगट करते हुए प्रजापति ने कहा क्या हे इन्द्र! जाओ तुम इक्कतीस वर्षों तक तपस्या करो।

सुषुप्ति अवस्था

बेटा! यह इक्कतीस वर्ष की पुनः तपस्या करने लगे। उन्होंने कहा कि यह जो मानो सुषुप्ति अवस्था है उसका नाम ब्रह्म है। ऋषि ने जब देखो, अमृतम् शान्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सबसे प्रहे जब वह सुषुप्ति में चले गए तो देखो, इन्द्र ने विचारा क्या देवता जब यह प्रश्न करेंगें क्या सुषुप्ति को ब्रह्म कैसे है यह तो मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार की साम्यावस्था का नाम है। यह मन मानो देखो, उसके गर्भ में प्रवेश हो जाता है मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार यह साम्यावस्था में चले जाते हैं तो बेटा! उसको सुषुप्ति कहते हैं, इन्द्रियां अपने क्रियाकलापों को शान्त कर देती हैं मन अपने क्रियाकलापों को शान्त करता है तो यह ब्रह्म नही हो सकता मेरे प्यारे! देखो, यह वाक श्रवण करते हुए प्रजापति तो अमृतम् मानो इन्द्र, इन्द्र ने पुनः जब यह विचारा। पुनः प्रजापति के द्वारा पर पंहुचें और प्रजापति से कहा प्रभु! ये जो आपने कहा है मैं इसको ब्रह्म स्वीकार नही करूंगा। हे प्रभु! यह जो सुषुप्ति अवस्था है मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार अपने साम्यावस्था में प्रवेश कर जाते हैं और साम्यता का नाम ही मानो देखो, निन्द्रा में निद्रित हो जाता है। एक दूसरा गुणगान करना शान्त कर देता है वह अप्रिया रत्तों में रत्त हो जाता है। हे प्रभु! देवता मुझसे यह प्रश्न करेंगे तो मैं उत्तर नही दे सकूंगां।

जाग्रत अवस्था

मेरे प्यारे! देखो, प्रजापति ने कहा हे इन्द्र! तुम जाग्रत अवस्था को ही ब्रह्म स्वीकार करो और प्रजापति इन्द्र बेटा! यह विचारने लगे कि जाग्रत में तो विभाजन होता रहता है। मानो देखो, नेत्रों के साथ में जब आत्मा का प्रकाश आता है तो देखो, यह विभाजन करता रहता है यह माता है, यह पिता है, यह पुत्र है, ये पुत्र वधु है, पुत्रियां हैं मानो देखो, यह संसार का विभाजन करता रहता है। नेत्रों से दृष्टिपात करता मन उसके साथ रहता है तो यह तो विभाजन क्रिया है। मानो देखो, मैं जागृत को ब्रह्म स्वीकार नही कर सकता।

आत्मा से चेतना

मेरे प्यारे! देखो, महाराजा इन्द्र उस समय चिन्तन करने लगे, जब मनन करने लगे, जब उनसे ब्रह्म स्वीकार नही किया गया तो बेटा! वहां से पुनः गमन किया और प्रजापति से कहा प्रभु! जब मैं देवताओं के द्वार पर पंहुचुंगा तो देवता जब यह प्रश्न करेंगें। ब्रह्मज्ञानी कौन है तो प्रभु मैं इसका उत्तर नही दे सकूंगां। यह जाग्रत और विभाजन क्रिया है। संसार में जितना भी विभाजनवाद है वह सब जागरूकता में नेत्रों से देखो, आत्मा होता है अथवा नेत्रों के साथ में मन होता है और बुद्धि होती है वह द्रष्टा बन करके मानो देखो, नेत्रों से दृष्टिपात करते रहते हैं। और नेत्रों के पिछले विभाग में एक गोलक सा बना हुआ है। यह गोलकने के पिछले विभाग में एक पीला पटल है पीले पटल के पिछले विभाग में कहीं से चेतना आ रही है और वह चेतना आत्मा की है तो हे प्रभु! जब यह चेतना आत्मा की है तो मैं इसको जाग्रत में इसको मैं कैसे स्वीकार करूंगां? क्योंकि यह तो आत्मा का प्रतिबिम्ब है, आत्मा का गोलक है जिसमें यह वास करता है। जैसे गृह में गृहस्वामी और गृहपति रहते हैं और गृहस्वामिनी रहते हैं तो बेटा! यह गृह अद्भुत कहलाता है तो मानो इसी प्रकार मैं इसको स्वीकार नही कर सकता।

ब्रह्म का स्वरूप

वह जब पुनः प्रजापति के द्वार पर पंहुचें तो प्रजापति ने कहा हे इन्द्र! तुम पांच

वर्ष की तपस्या और करो। तो बेटा! उन्होंने पांच वर्ष का तप किया। एक सौ पांच वर्ष तक बेटा! उन्होंने इन्द्र ने तप किया और तप करने के पश्चात उन्होंने कहा हे इन्द्र आओ, विराजो। वह विराजमान हो गए। तो उन्होंने कहा क्या यह जो संसार है जो इसका आयतन कर रहा है वही ब्रह्म है। मानो जैसे नेत्र हैं, नेत्रों के पिछरले विभाग में और नेत्रों का नियमन कर रहा है उसी का नाम ब्रह्म है। जो मानो देखो, श्रोत्रों से शब्दों का श्रवण करता है और शब्दों के द्वारा जो देखो, इन श्रोत्रों का नियमन कर रहा है उसी का नाम ब्रह्म है मानो देखो, इसी प्रकार घ्राण है जो घ्राण का नियमन कर रहा है उसी का नाम ब्रह्म है, तुम इसको स्वीकार करो। मेरे प्यारे! देखो, वह प्रसन्न हो गया और उन्होंने कहा कि यह तो आयतन माने जाते हैं मानो देखो, वह परब्रह्म परमात्मा एक अमूल्य वस्तुतः वह हमारे को चेतनित बना रहा है। आत्मा का भी जो नियमन कर रहा है आत्मा इन पांच महाभूतों के बीच में रहता है।

आत्मा का लोक

मेरे प्यारे! जैसे महात्मा जालवी से ये प्रश्न किया गया क्या महाराज आत्मा का लोक क्या है? तो यह कहता है कि आत्माम् भूतम् लोकाम् पञ्चम् ब्र्व्हा यह पञ्च महाभूतों के लोक में वास करने वाला है और यह शरीर पञ्च महाभूतों का लोक है परन्तु इसमें आत्मा वास करता है और आत्मा मानो देखो, ब्रह्म है और आत्मा को भी देखो, जो आयतन में ला रहा है आयतन कर रहा है परब्रह्म परमात्मा है वह परब्रह्मे जो आत्मा को भी मानो गतिवान बना रहा है। वह विभु है क्योंकि यह संसार अणु में निहित हो रहा है और देखो, परमात्मा विभु है जो उसे अपने में उसका आयतन कर रहा है अथवा उसका निर्माण कर रहा है। तो आओ मेरे प्यारे! ब्रह्म के ऊपर विचार विनिमय विशेष नहीं परन्तु महाराज इन्द्र बड़े प्रसन्न हुए और इन्द्र ने कहा प्रभु! आप को धन्य है। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म का ज्ञानी वह बनता है, जो तपस्वी होता है जो एक एक वस्तु को जान करके द्वितीय वस्तु में वह संलग्न होता है।

ब्रह्म की ओर

मेरे प्यारे! एक दूसरा प्राणी प्राणी में ओत प्रोत हो करके परब्रह्म को जानने में बेटा! वह लगा रहता है। तो विचार आता रहता है कि जैसे गृहस्वामी और गृहस्वामिनी अपने गृह को पवित्र बनाते हैं इसी प्रकार मानो देखो, इन्द्रियों को पवित्र बनाने के लिए हमें पञ्च महाभूतों की आवश्यकता है और पञ्च महाभूतों का जो आयतन कर रहा है वह आत्मा है और वह आत्मा का भी जो आयतन करने वाला है बेटा! उसे ब्रह्म स्वीकार करते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! प्रत्येक मानव को विचारना है कि हम उस परब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते रहें क्योंकि वह परमपिता परमात्मा एक एक कण कण में व्याप्त है और मानो देखो, यह संसार उसकी यज्ञशाला है और वह उस यज्ञशाला में मेरे प्यारे! वह ब्रह्म बन करके याग हो रहा है। तो विचार आता है बेटा! आज का हमारा विचार क्या हम परमपिता परमात्मा कि आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए उस परब्रह्म परमात्मा के लिए हम देवता बनने में मानो देखो, हमें धर्म ध्वनि अपनानी होगी और धर्म कहते हैं जो मानव की प्रत्येक इन्द्रियों में समाहित है और समाहित होने से ही वह धर्म है और मेरे पुत्रों! देखो, उस धर्म को अपना करके परब्रह्म परमात्मा के समीप जाने के लिए हम सदैव तत्पर हो जाएं।

कल्याण का मार्ग

आज का विचार क्या हम परमपिता परमात्मा से उस आयतन को जानना चाहते हैं जिसके द्वारा हमारा वास्तव में कल्याण होता है। हम कल्याण के मार्ग को चाहते हैं। प्रत्येक मानव संसार में सुखद और आनन्द चाहता है। और आनन्द वहां प्राप्त होता है, जो स्वतः आनन्दित होता है। वह परमात्मा आनन्दित है और परमात्मा को आनन्दित स्वीकार, करके बेटा! देखो, मानव अपने में आनन्दित होता है। हम अपने में विचार विनिमय करते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास करें। बेटा! आज के हमारे वाक उच्चारण करने का अभिप्राय ये क्या महाराज इन्द्र और देखो, जो विरोचन दैत्य प्रवृति के हैं वह इस शरीर को ही मेरे प्यारे! ब्रह्म स्वीकार करते हैं

इसी के पालन पोषण में लगे रहते हैं, परन्तु जो ब्रह्मवादी हैं वह ब्रह्म को स्वीकार करके एक एक कण कण में ब्रह्म स्वीकार करके और इस शरीर को पञ्च महाभूतों का पिण्ड स्वीकार करके, आत्मा का गृह स्वीकार करके बेटा! देखो, ब्रह्म को जानते हैं वह ब्रह्म में परणित हो करके वह मोक्ष की पगडण्डी ग्रहण करते हैं वह ब्रह्म में परणित तो यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि महाराज इन्द्र और प्रजापति यह सर्वत्र मेरे प्यारे! प्रजापति नाम परमात्मा का है इन्द्र नाम मुनिवरों! देखो, आत्मां भूतं ब्रह्मे अव्रताः इन्द्र कहते हैं जो देवताओं का धिराज है। जो इन्द्रं ब्रह्मे जो आत्मा के रूप में परणित किया जाता है और मेरे प्यारे! विरोचन कहते हैं जो दैत्य प्रवृति के प्राणी है वह पालन पोषण में, आहार व्यवहार में लगे रहते हैं परन्तु परमात्मा का दर्शन करने वाला परमात्मा को प्राप्त होता है।

यह है बेटा! आज का वाक मैं विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट करने नही आया हूं विचार यह देने के लिए आया हूं कि हमे परब्रह्म परमात्मा की महिमा का गान गाना चाहिए और गान गाते हुए मुनिवरों! देखो, सुषुप्ति में चले जाए जहां मुनिवरों! देखो, आत्मा और प्राण के साथ में गमन करने वाला मुनिवरों! देखो, इस मन का सूत्र में सूत्रित किया जाता है ब्रह्मचरिष्यामि जैसे बेटा! ब्रह्म और चरी को दोनों को जान करके इनका मनका बना करके ब्रह्मसूत्र में पिरोने से ब्रह्मसूत्र एक बन जाता है। जैसे मानव जब सुषुप्ति में जाता है तो यह मुनिवरों! देखो, अमृतं देखो, यह प्राण ही जागता है आत्मा के साथ जागता है आत्मा के प्रकाश से प्राण अपनी गतियां करने लगता है तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार वह प्राणां ब्रह्मे देखो, श्वांस के साथ में मनका बन करके और वह ब्रह्म में ब्रह्मसूत्र में पिरोया जाता है। तो वह बेटा! आज का हमारा वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस सागर से पार होना चाहते हैं। हम ब्रह्मज्ञानी बनें ब्रह्मवेत्ता बने एक एक इन्द्रियों को जान करके बेटा! इस सागर से पार होने का प्रयास करें।

ब्रह्म की ओर

आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय ये क्या हम देवत्तं देखो, देवता बन करके विचरण करें। हम दैत्य न बनें मानो देखो, दैत्यों का क्रियाकलापम् दया अन्तरं ज्ञानं ब्रव्हे अस्सुतं देवतं दमन अस्ते बेटा! देखो, दमनशील रहें और दमनशील ही मुनिवरों! देखो, परमात्मा को जो पाता है। तो वह आज का वाक अब हमारा सम्पन्न होने जा रहा है। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परब्रह्म परमात्मा को जानने वाले बनें और देवत्व को प्राप्त हो करते हुए इस सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मनुगायन्त्वा रथं आपाऽम्। ओ३म् देवाऽम् लोक प्रा रथं आपाऽम्। अच्छा भगवन आज्ञा।

6. 920216-सुविधा न होने पर याग

स्वर व्यञ्जन से वेद का पठन पाठन

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां यह पाठ्यक्रम परम्परागतों से ही विचित्रत्व माना गया है, क्योंकि वेदों का पठन पाठन हमारे यहां कई प्रकार से किया जाता है, जैसे जटा पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त से उनके स्वरों का स्वर व्यञ्जन होता रहता है और भी नाना प्रकार के वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है जैसे वैखरी वर्णास्सुताः वर्णिमों में गाया जाता है। वही मुनिवरों! देखो, दीपावली के रागों में परिवर्तित होता रहा है। और वही गायन देखो, हमारे यहां मल्लाहर राग में परिणत होता रहा है। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विचार नही दे रहा हूं केवल विचार विनिमय यह है कि हमारे यहां वेदों का पठन पाठन नाना प्रकार से गायन रूप में किया जाता है। जैसे माला पाठ होता है। जैसे माला में माला जब बनती है तो धागे और मनकों का दोनों का एक समन्वय होता है तो जब मनके और धागे का दोनों का समन्वय होता है तो वह माला कहलाती है। इसी प्रकार शब्दः और वह शब्द मुनिवरों! एक सुर में पिरोये जाते हैं और पिरोने से ही वह माला बन जाती है जिसको हमारे यहां माला पाठ के सम्बन्ध में, माला पाठ के ही रूप में मानो निरूपण होता रहा है। तो विचार विनिमय क्या कि हम जब वेदों का गान गाना प्रारम्भ करें तो मानो प्रत्येक वेदमन्त्र की जो ऋचायें हैं जो ओ३म् रूपी धागे में पिरोई हुई हैं। अथवा वही उसका सूत्र बना हुआ है और वह सूत्र में पिरोने से सूत्रित मन वृत्ति मानी जाती है। तो विचार आता रहता है कि हम उस सूत्र के ऊपर विचार विनिमय करें।

वसु की विवेचना

आज का हमारा वेदमन्त्र जहां नाना प्रकार के स्वरों की चर्चा कर रहा है, वहां आज का हमारा वेदमन्त्र यागों के सम्बन्ध में अपना मन्तव्य दे रहा है, हमारे यहां यागां

भूतं ब्रह्मा मेरे प्यारे! वेदमन्त्रों में आज के वेदमन्त्र में हमारे आ रहा था यजं हे मानव! तू यागिक बन क्योंकि याग वसु है, और वसु उसे कहा जाता है जिसमें हम बसते रहते हैं। सुक्रियाकलाप है, सुकर्म है उन सर्वत्र का नाम एक प्रकार का याग माना गया है। परन्तु यदि सुक्रियाकलाप और कर्म नही होंगें, तो मानव संसार में बस नही सकेगा। इसीलिए हमारे यहां यागों का नाम वसु कहा गया है। क्या हे मानव! तु बस और बसने वाला बन, क्योंकि तू उसी में वशीभूत है। मेरे प्यारे! देखो, याग में तो मानव बसता रहता है। तो नाना प्रकार का जो पाठ्यक्रम है, नाना प्रकार की जो विचार, पवित्र विचार धारा है, और जैसे अग्नि देवताओं का मुख जब स्वीकार करते हैं तो वह सर्वत्र मानो एक याग है और उसी याग में मानव बसता है, इसीलिए उसे वसु कहा जाता है। जैसे बेटा! सूर्य का नाम यजं ब्रव्हा प्रकाशक है तो उसी में बसते हैं हमारे यहां विष्णु का नाम यागमयी माना गया है। यज्ञोमयी विष्णु क्या विष्णु को वसु कहते हैं। जहां परमात्मा का नामोकरण आता है वहां याग का नाम भी वसु कहा जाता है और विष्णु के रूप से उसकी विवेचना की जाती है। तो विचार आता है कि वह हमे बसाने वाला है इसीलिए यज्ञोमयी विष्णु यह अपने में वसु कहलाता है।

परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी निहित

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा था कि वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी निहित रहने वाले हैं क्योंकि याग उसका आयतन है उसका गृह है उसका सदन है और वह प्रायः उसी में वास करता रहता है। तो मेरे प्यारे! वह परमपिता परमात्मा वसु के रूप में रहता है मानो देखो, याग उसका आयतन है। आयतन का अभिप्राय यह है कि वह उसी का एक स्वरूप है और देखो, याग उसका गृह है उसमें वह वास कर रहा है और उसी का सदन है। तो मुनिवरों! वह परमपिता परमात्मा संसार में यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं। क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और सुक्रियाकलापों में जब परणित हो जाते हैं तो वह यज्ञोमयी विष्णु बन जाता है और वह मानो परमात्मा उसमें सदैव निहित रहते हैं। तो आओ

मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूं केवल विचार विनिमय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसका प्रायः अनुसन्धान करते रहें और अन्वेषण करते हुए हम इस संसार सागर से प्रायः पार होने का प्रयास करें। तो आओ मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र हमें प्रायः उद्गीत गा रहा है और हमे उद्गीत गाता यह उद्गानं ब्रह्मा ब्रव्हे मानो देखो, वही उद्गीत रूप में परणित रहता है।

यागिक प्रेरणा

आओ मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा यज्ञं आज मैं बेटा! तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के उस नैतिकवाद में ले जाना चाहता हूं। जहां बेटा! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विराजमान हो करके प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों को याग के माध्यम से अपनी पवित्र आभा को प्रगट किया करते थे। बेटा! वह मुझे स्मरण आ रहा है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विद्यमान है और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारी एक एक पंक्तियों में विद्यमान हो करके विराजमान है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे ब्रह्मचारियों! तुम यागिक बनो क्योंकि याग करना ही तुम्हारा कर्तव्य है, यह महानतम् क्रियाकलाप है। हे ब्रह्मचारियों! तुम ब्रह्म चरी को अपने में धारण करना चाहते हो तो तुम गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजन करो। विद्यालय में प्रवेश हुए तो तुम तो मानो देखो, वह गौमेध याग में परणित हो जाओ। गो कहते हैं बेटा! इन्द्रियों को और मेध कहते हैं बेटा! देखो, उसमें जो समाया हुआ ज्ञान, विज्ञान है। दोनों को मानो दखो पवित्र बनाना तुम्हारा कर्तव्य है और तुम आचार्यों की पवित्र शिक्षा को उसमें धारण करते रहो। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के न्यौदामयी वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए और उन्हें उद्गीत गाते हुए कहा तुम यागिक बनो।

गार्हपथ्य अग्नि

कहीं तुम गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करो, जिसमें ब्रह्मचारी रत्त हो जाता है और वह शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके, अपनी विद्या का अध्ययन करता हुआ

मन, मस्तिष्क को एकाग्र करता हुआ बेटा! इन्द्रियों के ऊपर चयन करता है अथवा संयमी बन जाता है तो तुम इस प्रकार से देखो, गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करो। यह विचारों की अग्नि है इस अग्नि का अवधान करो।

गृहपथ्य अग्नि

मेरे प्यारे! देखो, द्वितीयं ब्रह्मा देखो, गार्हपथ्य और गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करो। गृहपथ्य नाम की अग्नि वह कहलाती है, जिसमें गृह आश्रम में जाओ तो तुम उसमें तपो। देखो, पति और पत्नी दोनों उस अग्नि में जब तपायमान होते हैं तो बाल्य बालिका गृह में स्वर्ग की स्थापना करते हैं। क्योंकि माता पिता के चयन से ही गृह पवित्र बनता है और उन्ही के अचयन से देखो, गृह अस्त व्यस्त हो जाता है। तो परिणाम यह कि हम अपने में गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करें गृहपथ्य नाम की अग्नि के पश्चात वैश्वानर नाम की अग्नि का पूजन करें।

वैश्वानर अग्नि

मेरे प्यारे! देखो, जो विद्यालयों में प्रायः शिक्षा का अवधान चलता है, वह वैश्वानर नाम की अग्नि कहलाती है। उस अग्नि में तुम चयन करते रहो और अपने मानो जीवन के जो अनुभव हैं, उन्हें प्रगट करते रहो। तो बेटा! उसको वानप्रस्थी करता है उस अग्नि का चयन तो, यहां चयन देखो, एक अमृतं देखो, नाना प्रकार के यागों में परिणित हो जाओ।

याग कैसे करें

आओ मेरे प्यारे! जब ऋषि इस प्रकार का अपना उपदेश दे रहे थे तो एक ब्रह्मचारी यज्ञदत्त नाम का ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ और यज्ञदत्त गार्ग्य ने कहा हे प्रभु! आप हमे नाना प्रकार की नित्यप्रति कोई न कोई नवीन प्रेरणा देते रहते हैं और जितने प्राणी मात्र हैं यह सब प्रेरणा के स्रोत्र बने हुए हैं। हम भी प्रेरणा को पा करके अपने जीवन को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं। यह मानो देखो, आप महान हैं हे प्रभु! मेरी एक इच्छा वृत्ति है क्या मानो देखो, आप ने कहा यज्ञं ब्रह्मा यज्ञत्वां तुम याग करो कहीं गार्हपथ्य नाम की अग्नि कहीं मानो गृहपथ्य नाम की अग्नि का चयन

करो। तो हे प्रभु! देखो, मैं यह जानना चाहता हूं कि हम याग कैसे करें? क्या क्या साकल्य होना चाहिए?

महर्षि याज्ञवल्क्य जी का उपदेश

ऋषि ने बेटा! अपना उपदेश दिया। उन्होंने कहा, याज्ञवल्क्य जी ने, हे यज्ञदत्त ब्रह्मचारी! तुम याग करो। देखो, सुन्दर यज्ञशाला हो, अष्ट खम्बों वाली यज्ञशाला हो। वह यज्ञशाला नाना प्रकार के अव्ययों से सजातीय होनी चाहिए जैसे परमपिता परमात्मा ने यह ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला को रच करके इसको सजाया है सजातीय बनाया है। मानो देखो, चार प्रकार से इसको सजातीय बनाया है मानो सबसे प्रथम स्थावर, अण्डज, और जंगम और स्वेदज यह चार प्रकार के मानो अव्ययों से इस प्रकृति को सजातीय बनाया है इसी प्रकार तुम भी यज्ञशाला को अपने नाना प्रकार के रूपों में देखो, इसका स्वरंग बनाओ, और यह सजातीय होनी चाहिए परन्तु देखो, ब्रह्मणा यजं ब्रव्हा और यज्ञ में जो साकल्य हो वह चार प्रकार का होना चाहिए। देखो, मधु अमृतम् देखो, मधप्रव्हा रोगनाशक और देखो, सुगन्धित और पुष्टिकारक यह चार प्रकार के पदार्थ होने चाहिए। सबसे प्रथम सुगन्धित और जिसमें सुगन्धि आती हो उसके पश्चात रोग नाशक जिसमें उसके रूग्णों का नष्ट जो जाए और पुष्टिकारक जिससे देखो, पौष्टिकता को प्राप्त हो जाए। और पुष्टिकारक जिससे देखो, पौष्टिकता को प्राप्त हो जाए और चतुर्थ में मानव ब्रव्हा व्रतं मानो देखो, जो अपने में वर्णा अस्सुति है मानो देखो, वह भी पदार्थ होने चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, इसके द्वारा चार प्रकार के पदार्थों के द्वारा तुम याग करो। मधु सुगन्धित और पौष्टिक और अमृत्ति अत्वा मानो देखो, चार प्रकार के पदार्थों से साकल्य का निर्माण हो और देखो, उसको अग्नि के मुख में प्रदान करते चले जाओ और उस समय कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, और उदानाय स्वाहा कह करके मानो देखो, हूत प्रारम्भ करो। यह प्राण ही तो संसार का भक्षण कर जाते हैं। और यह प्राण ही मानव के जीवन को सजातीय बनाते रहते है तो इसीलिए तुम याज्ञिक बनो और याग में कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय

स्वाहाः, समानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः कह करके हूत प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा बहूत प्रियं ब्रहे तुम यागिक बनो ब्रह्मचारी और तुम मानो देखो, इस प्रकार के सुगन्धित पदार्थों के द्वारा अग्नि में प्रदान करो उसमें मानो देखो, तुम्हारा यज्ञ मानवीय बन जाएगा।

यज्ञशाला व चरू न होने पर याग

मेरे प्यारे! देखो, यज्ञदत्त ने नमः करके बोले, कि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कहीं मानोयह नाना प्रकार के पदार्थ हमें न प्राप्त हो और हम याग करना चाहते हैं तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि यह सुविधा तुम्हें प्राप्त न हो, तो कही मानो यज्ञशाला का भी निर्माण नही हुआ है, खम्बों का निर्माण भी नही हुआ है और देखो, वह मधु, पौष्टिक इत्यादि भी प्राप्त नही हुए हैं। चरू भी तुम्हे प्राप्त नही हुआ है तो तुम अग्नि प्रदीप्त करके मानो देखो, समिधा के द्वारा याग करो। अग्नि प्रदीप्त है तीन समिधा के द्वारा मानो देखो, दैविक आधि भौतिक रूप को के ले करके तुम समिधाओं के द्वारा याग करो। मानो देखो, उससे तुम्हारा अग्न्याधान हो जाएगा। क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है और देवताओं के साथ में जब तुम प्रत्येक वेदमन्त्रों का उद्गीत गाओगे तो तुम्हारा मानो अग्नि की धाराओं पर तुम्हारे जो विचार हैं तुम्हारा जो साकल्य है, तुम्हारी जो सङ्कल्प शक्ति है उसमें परणित हो करके वह द्यौ लोक में प्रवेश कर जाती है और मानो देखो, वही द्युयं ब्रह्मा देवत्वां अमृतम् देखो, देव में परणित हो करके, अशुद्धियों को नष्ट करके उसका शुद्धिकरण कर देती है। मानो देखो, तुम अपने में याज्ञिक बन करके अग्नि देवता को कहो कि हे अग्नि! तू देवताओं का मुख है और तू मानो हमारी छवि को, विचारों को स्वीकार कर, इस समिधाओं को प्राप्त कर, अग्नि तू मानो तेजोमयी स्वतः है तो मेरे प्यारे! इस प्रकार जब यज्ञमान याग करता है तो उसका याग सफलता को प्राप्त होता है।

अग्नि और समिधा न होने पर याग

मेरे प्यारे! जैसे उन्होंने ऐसा कहा तो महर्षि अमृतम् याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब मौन होने लगे तो उस समय यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा

प्रभु मैं यह जानना चाहता हूं भगवन कहीं मानो ऐसा भी हो क्या यह अग्नि भी और समिधा भी प्राप्त न हो तो हम कैसे याग करें? उन्होंने कहा यदि यह भी प्राप्त न हो तो तुम मानो देखो, जल को अञ्जलि में लो और जल को अञ्जलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः और उदानाय स्वाहाः कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो। वेदमन्त्रों की ध्वनि होनी चाहिए और देखो, तुम्हारा देखो, अञ्जलि से जल प्रोक्षण में होता हमे प्रतीत आता रहे तो मानो देखो, उस समय कहो प्राणाय स्वाहाः। तो मेरे प्यारे! देखो, जो इस प्रकार का तुम याग करोगे मानो यह जो जल है यही तो हमारा जीवन है। एक मानव को देखो, शरीर में अग्नि प्रधान हो गई है तो उस समय जल ही तो उस अग्नि को शान्त करता है मेरे प्यारे! देखो, इसीलिए वह आपो है, वह देवता है और उस मानो जल को अञ्जलि में ले करके स्वाहा कहो और प्राण को उसे प्रदान कर दो। मेरे प्यारे! देखो, वह अप्रतम् देखो, जल ही तो संसार में अग्नि के परमाणुओं को ले करके पिण्डों का निर्माण करता रहता है, पिण्ड मिश्रित हो जाता है। तो मानो देखो, यह अमृतम् माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो जल ही तो आसन होता है और जल ही ओढन होता है, और जल ही उसके पांशे बने रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह जल में ओत प्रोत रहता है, उसी में पनपता रहता है आसन और ओढन में मानो देखो, रक्त हो करके उसी में विद्यमान रहता है। तब विचार आता है बेटा! देखो, माता के गर्भस्थल में जब यह विद्यमान हम जैसे शिशु रहते हैं। तो उस समय मानो चन्द्रमा अमृत्त देता है जो समुद्रों से ले करके प्रदान करता है। सूर्य प्रकाश देता है जिसका समन्वय द्यौ से रहता है और अग्नि उष्ण बनाती रहती है। क्योंकि अग्नि मानो देखो, उष्णता में परणित रहती है। तो मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् यागों में ओत प्रोत होने वाला अभ्योदय होता रहता है और मुनिवरों! सर्वत्र देवता कोई प्राण देता है, कोई अमृत्त देता है उसी में बेटा! पनपता रहता है परमात्मा निर्माण करने वाला है। तो विचार आता है बेटा! यह परमपिता परमात्मा का अमूल्य ब्रह्मा जगत ब्रहे।

जल प्राप्त न होने पर याग

इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया, तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज जब मौन होने लगे तो ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ और ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! मैं यह ओर जानना चाहता हूं यदि कहीं ऐसा हो कि जल भी हमें प्राप्त न हो और यज्ञमान क्या हम सब यज्ञ करना चाहते हैं तो कैसे करें? उन्होंने कहा यदि कही तुम निर्जल में चले जाओ, जल भी कहीं प्राप्त न हो तो तुम पृथ्वी मानो पृथ्वी पर ही रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः कह करके हूत प्रारम्भ करो और वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहो। क्योंकि यह जो पृथ्वी है यह जो पृथ्वी की रज है इसी में गुरुत्व समाहित रहता है। जिस भी लोक लोकान्तरोंमें तुम भ्रमण करोगे वही मानो जितना भी पिण्डाकर जगत बना हुआ है केवल गुरुत्व परमाणुओं के कारण है, यह पृथ्वी की रज के कारण है।

ब्रह्माण्ड की माला

तो मानो देखो, सूर्य में भी पृथ्वी का कुछ अंश माना जाता है परन्तु देखो, ध्रुव में भी जब मानो देखो, पिण्डों का निर्माण होता है उसमें गुरुत्व विद्यमान है और गुरुत्व मेरे प्यारे! देखो, हमारे इस मानव शरीर में है तो इसका पिण्ड बन रहा हैजितना प्राणी मात्र है चाहे वह स्थावर सृष्टि है, चाहे वह जंगम चाहे वह मानो देखो, अमृति है और अण्डजं ब्रह्मो देखो जङ्गम और स्वेदज जितनी भी प्रकार की सृष्टियां हैं उन सर्वत्रता में मानो देखो, पिण्डाकार बना हुआ है और वह जो पिण्डाकार हमे दृष्टिपात आता है वह बड़ा विचित्र है। जैसे नाना पृथ्वियों पिण्ड बना हुआ है यह मानो देखो, पिण्डाकार दृष्टिपात आ रहा है और पृथ्वियों की एक माला बनी हुई है, और वह एक पिण्ड में ही बेटा! नाना प्रकार के पिण्डों की जैसे माला बनी हुई है और वह एक पिण्ड में ही बेटा! नाना प्रकार के पिण्डों की जैसे माला मानो देखो, वैसे एक सूत्र में देखो, वह अमृतम् मनके पिरोये जाते हैं वह माला बन जाती हैं। इसी प्रकार पृथ्वियों की माला बनती है और माला को धारण करने वाला सूर्य है और सूर्य पिण्ड बेटा! देखो, यह विशाल मण्डल है और वह भी पिण्ड

है। मेरे पुत्रों! देखो, यह पिण्ड भी किसी की माला बने हुए हैं तो माला बन करके बेटा! परमात्मा का ब्रह्माण्ड एक अनन्तमयी दृष्टिपात आता है एक दूसरे की माला बना हुआ है। मेरे प्यारे! जैसे सूर्य बृहस्पति की माला है, बृहस्पति आरूणि की माला है और आरूणि बेटा! देखो, ध्रुव की माला है और ध्रुव मुनिवरों! पुष्प नक्षत्र की माला है और पुष्प नक्षत्र स्वाति नक्षत्र की माला है और स्वाति नक्षत्र बेटा! देखो, अचंग मण्डल की माला है और अचंग मण्डल बेटा! देखो, व्रेणकेतु मण्डल की माला है और व्रेणकेतु मण्डल की जो माला है वह वर्णस्सुतम् ब्रह्मा बेटा! इनकी जो माला बनी हुई है वह श्वेताम् श्वेतर की माला है। तो बेटा! इसी प्रकार यह गन्धर्व की माला है और इतने मानो देखो, इतनी मालाएं बन करके बेटा! अरबों खरबों मालाएं बन करके मानो देखो, एक आकाश गंगा में मानो विद्यमान है और सहस्रों क्या अरबों आकाश गंगाएं बेटा! निहारिका की माला बनी हुई है और एक मानो देखो, एक अरब छयानवे करोड़ उनतीस लाख उन्चास हजार पांच सौ बावन के लगभग अवन्तिकाओं की बेटा! निहारिका बन जाती है तो वह भी एक माला है। तो बेटा! आज मैं माला के सम्बन्ध में विचार देना नही चाहता हूं। जब बेटा! देखो, योगीजन समाधिष्ट होते हैं, अपने लघु मस्तिष्क में बेटा! देखो, मन मस्तिष्क को मन और प्राण को जब प्रकृति के रूप में दृष्टिपात करते हैं तो परमात्मा का रचाया हुआ यह जो पिण्डोमयी जगत है यह दृष्टिपात आने लगता है। मेरे प्यारे! प्रभु का कैसा अनूठा विज्ञान है कैसा अनूठा यह जगत है। आज मैं विज्ञान के युग में जाना नही चाहता हूं। नाना आकाश गंगाएं बेटा! देखो, एक एक में परणित होती रहती हैं तो विचार आता रहता है। मेरे प्यारे! अमृतम् देखो, यह प्रथम् ब्रह्मा ऋषि कहता है क्या तुम गुरुत्व जिसके कारण यह संसार ब्रह्माण्ड का पिण्ड बना हुआ है और एक दूसरे में ओत प्रोत है यही सूक्ष्म सा मानव का शरीर भी एक पिण्ड है और वह पिण्ड भी मानो देखो, ब्रह्माण्ड से गुथा हुआ है। इसमें नाना ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आते हैं, एक आकाश गंगा नही।

ब्रह्माण्ड का दर्शन

ब्रह्म की ओर

देखो, मुझे स्मरण है एक समय बेटा! देखो, मैं श्वेताश्वेतर और महर्षि भारद्वाज मुनि ने तो अपने मन मस्तिष्क को एकाग्र करके तपस्या करते हुए अपने लघु मस्तिष्क में जब उन्होंने परमात्मा के ब्रह्माण्ड का दर्शन किया तो बेटा! अनन्त मानो आकाश गंगाएं, अनन्त अवन्तिकाएं उन्हें प्रायः दृष्टिपात हो करके ऋषि मौन हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है कि इस शरीर में यह सूक्ष्म सा पिण्ड बना है परन्तु इस पिण्ड का निर्माणवेत्ता ने बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड की कल्पना की है। आज मैं बेटा! देखो, पिण्ड और ब्रह्माण्ड की सन्तुलना नही देने आया हूं, केवल विचार विनिमय यह याज्ञवल्क्य मुनि कहते हंत्र क्या इस प्रकार तुम देखो, वह पृथ्वी के गुरुत्व अथवा रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः और उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! व्यानाय कह करके हूत प्रारम्भ करो। इस प्रकार देखो, ऋषि जब अपना उद्गीत गाते हैं उद्गीत गाने से पूर्व सम्भवा ब्रह्मणा व्रतम् इस प्रकार जब उन्होंने बेटा! उद्गीत गाया तो यज्ञदत्त ब्रह्मचारी उपस्थित हो गए। वेद का ऋषि कहता है वेदमन्त्रों का उद्गीत हो और प्राण को अपने में हूत प्रारम्भ हो और पृथ्वी की रज तुम्हारी अञ्जलि में हो।

अञ्जलि में भावना से याग

मेरे प्यारे! यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! कहीं मानो ऐसा हो कि यह पृथ्वी की रज भी कहीं प्राप्त न हो और हम याग करना चाहते हैं, तो कैसे करें? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा याज्ञवल्क्य जी ने क्या हे यज्ञदत्त गार्ग्य! मानो यदि तुम याग करना है यज्ञं ब्रह्मा और तुम्हारे द्वारा पृथ्वी की रज भी नही है, तो तुम मानो देखो, अञ्जलि में, अञ्जलि में अपनी भावना परणित करो, अपनी भावना अञ्जलि में अर्पित करते हुए मानो भरण करके और उसे कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहा कह करके तुम याग प्रारम्भ करो। वेदमन्त्रों का उदगीत होना चाहिए सम्भव ब्रह्मणे वातप्रव्हा देवत्वां स्वाहा यश्कुतम् देवो प्राणां ब्हे हिरत्यं देवं ब्रह्मा व्रत्यं स्वाहा इस प्रकार तुम उदगीत गाना प्रारम्भ करो और

जब तुम इस प्रकार का उद्गीत गाओगे तो तुम्हारा मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके अञ्जलि में रहेगा और अञ्जलि में तुम्हारी भावना परणित हो करके द्यौ लोक में तुम्हारी भावना है वह तुम्हारा भुः भुवः स्वः इसमें प्रवेश हो करके द्यौ लोक में तुम्हारी भावना प्रवेश जायेगी और मानो देखो, तुम्हारा याग सफलता को प्राप्त होता रहेगा। परन्तु वेद का ऋषि कहता है कि याग अवश्य होना चाहिए। इस प्रकार जब तुम अपने में मन मस्तिष्क को एकाग्र करके वेदमन्त्रों का उद्गीत गाओगे तो तुम्हारा मन मस्तिष्क पवित्र बन करके एक माला सदृश बन जायेगा।

भावना से याग

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार अपना उद्गीत गाया और उद्गीत गाने के पश्चात सम्भव ब्रह्मणो व्रातम् मानो देखो, वह यज्ञदत्त ब्रह्मचारी अपने में मौन होने लगे और यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! आपको धन्य है। आपने मानो मेरे हृदय में जो शङ्काएं थीं, उन शङ्काओं का सब का निवारण हो गया है। अन्तिम छोर पर आपने पंहुचाया है और आपने मानो वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए और वेदमन्त्रों में देखो, ज्ञान से तुम्हारी अञ्जलि मानो देखो,अन्कित होनी चाहिए और उससे स्वाहा कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो। तो मानो तुम्हारी अञ्जली में तुम्हारी भावना हो, वेदमन्त्रों की पुट हो और तुम्हारी अञ्जलि मानो और देवताओं को देखो, परमात्मा को समर्पित होनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, यह भावना भी एक पवित्र याग है, यह सबसे महान याग माना गया है। जब तुम्हारा मन मस्तिष्क एकाग्र हो आत्मा के समीप होगा और आत्मा के प्रकाश में मानो तुम अपने को प्रकाशित स्वीकार करोगे तो तुम्हारा जीवन एक महानता में परणित हो जाएगा।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार उद्गीत गाया, तो यज्ञदत्त ब्रह्मचारी नत्त मस्तिष्क हो गए, उन्होंने कहा प्रभु! आपको धन्य है, आप ने हमारे जीवन को प्रकाश में पंहुचाया है। हम कितने सौभाग्यशाली हैं जो आपके इस याग में परणित हो रहे हैं। आपके मुखारबिन्द से यह वाक श्रवण करते हैं। आपका तपा हुआ जीवन है, तपस्वी जीवन है, आपका अध्ययन कितना मानो गम्भीर है। इस प्रकार उद्गीत

गा करके बेटा! अपने कक्ष में विद्यमान हो गए।

विचार विनिमय क्या मुनिवरों! प्रातःकालीन जब इस प्रकार देखो, आचार्यजन अपने विद्यालयों में मानो इस प्रकार ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा देते हो, आत्मा का आत्मा के प्रकाश में इन्द्रियां अपना क्रियाकलाप करती हैं तो इन्द्रियां पवित्र हो जाती हैं। तो आज का विचार यह क्या हम परमपिता परमात्मा का ध्यानम् ब्रहे हम उसका ध्यानवस्थित होते हुए और नाना प्रकार के ब्रह्माण्ड को अपने में मापने वाले बनें। अब मेरे प्यारे महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवाम् भूतम् भविवर्णास्सुतं देवाः वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे अथवा गागर में सागर को भरण कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हम अपने विद्यालय में विद्यमान हैं और अपने विद्यालय में आचार्य हमें उस उपदेश को दे रहे हैं जिससे हमारा मन मस्तिष्क आत्मा के प्रकाश में पंहुंच गया है और अपने प्रकाश में रत्त हो गये हैं। परन्तु देखो, जहां हमारी यह वाणी जा रही है वहां एक याग का आयोजन हुआ। आज हम ब्रव्हे यह जो वर्त्तमान का काल चल रहा है इस पृथ्वी क्या संसार में इस काल को मैं वाम मार्ग काल कहा करता हूं जहां मानव सुरा और सुन्दरी में परणित हो रहा है और द्रव्य में द्रव्य की पुट लगी हुई है। द्रव्य और सुरा सुन्दरी में मानव लगा हुआ है तो इसे वाममार्ग का काल कहा करते हैं। मैं यह अपने में बड़ा प्रसन्न होता रहता हूं जिस गृह में द्रव्य देखो, याग के माध्यम से द्रव्य का सदुपयोग होता हो। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। क्योंकि द्रव्य का जब सदुपयोग होता है तो वही द्रव्य देखो, मानव को, यज्ञमान को पवित्र बनाता है और वही जब उसका दुरुपयोग हो जाता है तो द्रव्य उसे त्याग देता है। द्रव्य उसके समीप नही आता है, वह द्रव्य का दुरुपयोग ही बन जाता है।

उग्रवाद का मूल कारण

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वाक उच्चारण करने के लिए आया हूं इस

वाममार्ग को उग्रवाद का मूल कारण क्या है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह उच्चारण करने के लिए आया हूं क्या राष्ट्र की प्रणाली पवित्र नही है यदि राष्ट्र की प्रणाली पवित्र हो जाए तो यह समाज पुनः से ऊंचा बन सकता है क्योंकि जब राजा ही वाममार्गी है तो प्रजा भी वाममार्गी है। राजा भी सुरा सुन्दरी में परणित है तो प्रजा भी उस में संलग्न है इसी प्रकार जब दोनों ही एक काठ की नौका में विद्यमान है मानो देखो, जब वह उसमें विद्यमान हैं तो वह नौका एक समय शान्त हो जाएगी। तो विचार आता रहता है कि प्रजा और राजा दोनों मिल करके जब अश्वमेध याग करते हैं अपने में विचार विनिमय करते हैं कि हमारा राष्ट्र कैसे पवित्र हो हम कैसे जय बन सकते हैं तो समाज का कल्याण होना प्रारम्भ हो जाता है जब राजा ब्रह्मज्ञानी होता है, ब्रह्मवेत्ता होता है ब्रह्मवेत्ता वह राजा मानो देखो, नाना प्रकार की रुढ़ि नही पनपने देता है। जब राजा के राष्ट्र में भिन्न भिन्न प्रकार की ईश्वर के नाम पर रुढ़ियां पनपने लगती हैं और वह रुढ़ियां देखो, विनाश के मार्ग पर ले जाती हैं एक दूसरी रूढ़ि देखो, एक दूसरे के रक्त की पिपासी बन जाती हैं। तो उससे देखो, वह वाममार्ग बलवती हो जाता है। और वाममार्ग के हो जाने से देखो, राजा के राष्ट्र और वाममार्ग के बलवती हो जाने पर प्रायः राष्ट्र में रक्त भरी क्रान्ति आ जाती हैं उसका एक मूल कारण रक्त भरी क्रान्ति ही बनत है। तो विचार आता रहता है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उच्चारण करत रहता हूं कि जो नाना प्रकार की रुढ़ियां हैं ईश्वर के नाम पर मानो यह समाप्त होनी चाहिए। और वह उस समय होंगीं जब राजा ब्रह्मवेत्ता हो और प्रत्येक रुढ़ियों के आचार्यों का परस्पर विचार विनिमय हो और उसका निर्णय देने वाला ब्रह्मवेत्ता राजा होना चाहिए या गुरु होना चाहिए। इस प्रकार जब विवेक से देखो, उसका निर्णय दिया जाता है प्रजा के लिए वह मान्य होता है। जब इस प्रकार देखो, वह राजा ब्रह्मवेत्ता बन करके अपने राष्ट्र को सुसज्जित बनाता है तो प्रजा में रक्तभरी क्रान्ति नहीं आती, रक्तमयी जीवन नही बनता। मेरी पुत्रियों का श्रृङ्गार हनन नही होता और जब मानो देखो, इस प्रकार रूढ़ि नाना प्रकार का देखो, वह रूढ़ियां पनपती रहेंगीं और

रुढियां जब पनपती रहेंगीं तो राष्ट्र में क्रान्तियां आती रहेंगीं और क्रान्तियां आती रहेंगी तो जीवन देखो, सुरक्षित नही रहेगा।

विचार आता रहता है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करता रहता हूं राजा रावण के राष्ट्र के काल में नाना रूढ़ियां बन गई थीं ईश्वर के नाम पर। देखो, पुत्र किसी रूढ़ि में है तो पिता किसी रूढ़ि में है मानो देखो, वह इसी प्रकार देखो, लंका का विनाश हो गया। आज भी देखो, वर्तमान क्या मुझे वर्तमान का काल ऐसा प्रतीत होता है जैसे अग्नि का काण्ड बनता जा रहा हो अग्नि ब्रह्मणां व्रते देवाः और वह अग्नि बन करके ही देखो, अवृत्त हो जाएगा।

शान्ति का मार्ग

तो विचार आता रहता है राजा यदि अग्नि को शान्त करना चाहता है तो संसार के जितने भी पृथ्वी मण्डल पर राजा हैं परस्पर अपनी एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके ब्रह्मज्ञान को ले करके सब रूढ़ियों को नष्ट कर देना चाहिए और रुढ़िवाद को नष्ट करके वह ज्ञान के द्वारा नष्ट हों, अज्ञान से नही क्योंकि अज्ञान से पुनः रूढ़ि पनपती हैं और ज्ञान के माध्यम से रूढ़ि नही पनपती, ज्ञान होना चाहिए। इस प्रकार राजा का राष्ट्र ऊंचा बनेगा और समाज में एक शान्ति की स्थापना आ सकेगी। आज मैं विशेष चर्चा नहीं दूंगां केवल मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करा रहा हूं परन्तु यह वाममार्गपन समाप्त होना चाहिए। प्रजा को चाहिए कि अपने में वाममार्ग न रहने दे।

यज्ञमान को आशीर्वाद

मैं इसी वाक्यों के साथ अपने में अपने यज्ञमान को मैं देखो, अपना विचार देने आया हूं। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे देखो, गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होत रहे। द्रव्य का दुरुपयोग होना ही मानो देखो, मृत्यु है और द्रव्य का सदुपयोग होने का नाम जीवन है। वह देवाम् भूतम् ब्रहे, अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का देखो, कैसे पिण्डों की इन्होंने गणना कराई है। मैं उस सम्बन्ध में विशेषता नही केवल यह क्या अपने में विचार दे करके द्रव्य का सदुपयोग हो

अपने में सात्विक और अपने जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर अभी अभी महानन्द जी ने अपने विचार प्रगट किए क्या द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए और ईश्वर के नाम पर कोई रूढ़ि नही रहनी चाहिए। केवल मानव दर्शन रहना चाहिए। इन्द्रियों के ऊपर देखो,प धर्म और मानवीयता स्थित होनी चाहिए। मेरे प्यारे महानन्द जी! के जो उद्गार हैं वह उनके हृदय के इस प्रकार के तपे हुए उद्गार हैं जिससे समाज में एक मानवता की स्थापना हो जाए। पवित्रवाद आ जाए और रूढ़ियां नष्ट जो जाएं। तो ये इसके साथ आज का वाक समाप्त होने जा रहा है अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः यशस्वमः गायन्त्वाः। ओ३म् तनुमम् हिरण्य वाचस्कर्णाम् ब्रह्मगाताम्। ओ३म् यमभु सर्वाः गायन्त्वाः। ओ३म् तनु गायन्त्वा रेवं आपाऽम्। ओ३म् पारशचरीरिवाः ग्राणान्त्वा माऽहं वाचस्कर्णाः। अच्छा भगवन! आज्ञा।

7. 920217-ब्रह्म ज्ञान

परमपिता परमात्मा महिमावादी

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी है और विज्ञानमयी है मानो वह विज्ञानमयी स्वरूप माने गए हैं। तो हम उस परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है उसके ऊपर प्रायः हम अन्वेषण करते रहें और विचार विनिमय करते रहें कि परमात्मा कितना महान है और उसका ज्ञान और विज्ञान भी कितना महानतम् माना गया है। तो आओ मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है क्या वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है।

इन्द्र की विवेचना

आज का हमारा वेदमन्त्र जहां परमपिता परमात्मा की महिमा गा रहा है वहां बेटा! देखो, हमारे यहां वैदिक साहित्य में एक एक वेदमन्त्र के गर्भ में नाना प्रकार की धाराएं हैं जैसे वेदमन्त्र आता इन्द्रश्चम् ब्रव्हा रेतम् ममं आत्माः ये आज के हमारे वेद के पठन पाठन में आ रहा था क्या हमारे यहां परमपिता परमात्मा को इन्द्र के नामो से सम्बोधित किया जाता है। वह परमपिता परमात्मा यथार्थ होने से वह साधक होने से और गतिवान बनाने से उसको इन्द्र कहा जाता है परन्तु जहां इन्द्र परमात्मा को कहते हैं इन्द्र नाम आत्मा का है। आत्मा इस शरीर में विद्यमान है और प्रत्येक इन्द्रियों का स्वामित्व बन करके रहता है। वेद का मन्त्र कहता है रथो वर्णास्सुतं इन्द्रश्चं ब्रव्हा कृते। मानो वेदमन्त्र यह कहता है कि वह जो हमारा ये संसार रूपी अथवा ये शरीर रूपी जो रथ है इस रथ में विद्यमान होने वाला आत्मा है

और मन इसका सारथी बना हुआ है और इन्द्र इसके अश्व कहलाते हैं। तो मानो देखो, वह इन्द्र विद्यमान है रथ में वह इन्द्र ही मुनिवरों! देखो, इन्द्रियों का स्वामी है और स्वामी होने से ही उस आत्मा को इन्द्र कहा जाता है क्योंकि वह सर्वत्र इस शरीर रुपी राष्ट्र का स्वामी और नेतृत्व करने वाला है। परन्तु जहां इस आत्मा को इन्द्र कहते हैं वेदमन्त्रों में बेटा! नाना प्रकार से इन्द्रों की विवेचना आती रही है। इन्द्र नाम बेटा! राजा का है और उस राजा का नाम इन्द्र है जो एक सौ एक अश्वमेध याग कर लेता है।

बेटा! अश्वमेध याग किसे कहते हैं। अश्व नाम मानो अश्व का कहा जाता है अश्व कहते हैं देखो, घोड़े को तो अश्वमेध याग करने वाला इन्द्र कहा जाता है। तो इन्द्र होने से इन्द्रो ब्रह्मणा व्रतं देवत्वं स्वाहा। तो वह मुनिवरों! देखो, वह प्रजा देखो, अश्व नाम राजा का है और मेध नाम प्रजा का है जब दोनों को अपने में धारण करने वाला राजा देखो, अश्वमेध याग करता है और एक सौ एक अश्वमेध याग करने वाला इन्द्र कहा जाता है। तो इन्द्रों समं ब्रह्मा इन्द्राः बेटा! देखो, परम्परा के कालों में प्रायः देखो, इन्द्र की एक उपाधि मानी जाती है क्योंकि जो एक सौ एक अश्वमेध याग कर लेता है वह इन्द्र है मानो राजाओं का धिराज इन्द्र है और इन्द्र अमृतम् देखो, अश्वमेध याग का स्वामी है तो मुनिवरों! देखो, इन्द्र नाम राजा का है और राजा के देखो, इन्द्र के हृदय में रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण व्याप्त रहते हैं। और व्याप्त होने से मुनिवरों! यह नाना प्रकार की कृतियों में रत्त होता रहा है अथवा द्वेषों में क्या तेरे सामान्य संसार में कोई नही होना चाहिए।

आचार्य की अश्विनी कुमारों को महा अमृत्त पान करने की प्रेरणा

मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक ऋषि की साहित्यिक चर्चाओं में ले जाऊंगा जहां देखो, राजा इन्द्र और महात्मा दधीचि की चर्चाएं आती रही हैं। महात्मा दधीचि और देखो, इन्द्र का दोनो का परस्पर संवाद भी होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा दधीचि अपने आश्रम में शान्त मुद्रा में विद्यमान रहते। परन्तु देखो, महात्मा भुञ्जु के दोनों पुत्र अश्विनी और कुमार यह दो पुत्र थे जो बेटा! देखो, आयुर्वेद के बड़े मर्म

को जानते थे। बेटा! आयुर्वेद का आचार्य होने से एक सौ पांच वर्ष तक उन्होंने बेटा! तप किया और तप करके उन्होंने औषध विज्ञान को जाना और औषध विज्ञान को जानते हुए अश्विनी कुमार आयुर्वेद के मर्म को जानते थे। आयुर्वेद के मर्म को जानने के पश्चात उनके आचार्यों ने एक समय कहा कि हे अश्विनी कुमारों हे अमृतम् मानो तुमने अमृत्त को तो प्राप्त कर लिया है अब तुम देखो, ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करके तुम मानो देख एक महा अमृत्त को पान करो। यह जो मानो आयुर्वेद है वह तो अमृत्त है प्रत्येक वनस्पतियों के रस को तुम जान गये हो कि कहां कैसा रस उसमें प्रयोग मे लाया जाता है और कौन सी वनस्पति में क्या क्या रस है और क्या क्या देखो, उसमें संजीवनी विद्यमान है। परन्तु अब हमारी इच्छा यह कि तुम महा अमृत्त का ओर पान करो। तो अश्विनी कुमारों ने कहा प्रभु! वह महा अमृत्त कौन सा होता हैघ् उन्होंने कहा महा अमृत्त वह होता है जो परमात्मा का ज्ञान अथवा ब्रह्मज्ञान यज्ञमय हो जाता है। तुम ब्रह्मज्ञान को और प्राप्त करो। तो उन्होंने कहा बहुत प्रियतम् । मेरे प्यारे! देखो, अमृतां भूतं ब्रहे तो उन्होंने कहा हे प्रभु! हमने अमृत्त का तो पान कर लिया है क्या देखो, यह जो अमृता है यह औषध विज्ञान है क्या मानो सूर्य की किरण कहां कहां जाती है किन किन मानो फलों में क्या क्या गुण है और क्या क्या औषधियों में गुण हैं उनका तुमने गुणाधानम् किया। इससे मेरा आत्मा बड़ा प्रसन्न है और तुम मानो उसमें अमृता को प्राप्त हो गए हो। वह जीवन शक्ति को तुमने प्राप्त कर लिया है कि तुम मानो देखो, कण्ठ और मानो देखो, हृदय को दोनों को मिलान देखो, पृथक कर दिया जाए तो उनको तुम मानो एक सूत्र में लाकर के उसको जीवन शक्ति प्रदान कर देते हो। इससे मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न है परन्तु मेरी यह इच्छा है मेरी यह विद्या जब सफल होगी जिसने इस विद्या का निर्माण किया है उस निर्माणवेत्ता का तुम अपने में ध्यानवस्थित करो और उस मानो निर्माणवेत्ता को अपने में धारयामि बना करके अमृता को प्राप्त हो जाओ और महाअमृत को तुम प्रवेश कर जाओ। और पुनः कुमारों ने कहा प्रभु! बहुत प्रिय। परन्तु ऐसा कौन है जो हमे ब्रह्मविद्या प्रदान कर सकता है। उन्होंने कहा ऐसा मानो

एक ऋषि है इस समय जो महात्मा दधीचि, यू तो बहुत से ऋषि हैं मानो भृगु जी भी है, जो ब्रह्मवेत्ता हैं परन्तु देखो, वशिष्ठ भी हैं जो ब्रह्मवेत्ता हैं और नाना ऋषि हैं जैसे लोमश इत्यादि और कागभुषुण्ड जी, दोनो यह चाहे कि हम ब्रह्मविद्या में पारायण के दें, तो तुम पारायण हो सकते हो। परन्तु देखो, इस समय वह इन्द्र के आंगन में विद्यमान रहते हैं इसलिए महात्मा दधीचि के द्वार पर चले जाओ और दधीचि तुम्हें ब्रह्मज्ञान का बोध्याम् देखो, तुम्हे बोध कराएंगें। मेरे प्यारे! देखो, अश्विनी कुमार बड़े प्रसन्न हुए और वह दोनों ने आचार्य के चरणों को स्पर्श करके वहां से गमन किया।

अश्विनी कुमारों का महात्मा दधीचि आश्रम में आगमन

भ्रमण करते हुए बेटा! वह महात्मा दधीचि के द्वार पर आ गए। महात्मा दधीचि के चरणों को स्पर्श किया और चरणों को स्पर्श करके, उन्होंने कहा ब्रह्मणे व्रतं अप्रतं ब्रह्म बोधाः। उन्होंने कहा महात्मा दधीचि ने कहा बोधाय यथं ब्रह्मा इन्द्रों शमम् क्या हे अश्विनी कुमारों! मैं तुम्हे मानो देखो, ब्रह्मज्ञान तो दे सकता हूं परन्तु इन्द्र का यह आक्रमण न हो जाए। मुझे यह विवेचना लगी हुई है उसका तुम क्या करोगेघ् उन्होंने कहा प्रभु! जो भी हमारे सुयोग्य सेवा हो उस उद्गीत रूप में गाईये और निर्णय कराईये कि मानो देखो, इन्द्र का आक्रमण न हो सके। उन्होंने कहा इन्द्रो शमं ब्रह्मा मानो देखो, उसका शस्त्र गमने करेगा। उन्होंने कहा तो हमारे द्वारा कुछ औषध इस प्रकार की है जो तुम्हारे प्राणों का अन्त नहीं होने देंगें।

महात्मा दधीचि द्वारा ब्रह्मज्ञान

मेरे प्यारे! दोनों को ब्रह्मज्ञान देना उन्होंने प्रारम्भ किया। उससे पूर्व काल में अमृतम् ब्रह्मा देखो, वह और भी नाना ऋषियों के द्वार पर जाना चाहते थे परन्तु वह महात्मा दधीचि के आश्रम में विद्यमान हो गये। और जब वह मुनिवरों! ब्रह्मज्ञान देने लगे कि आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है। तो वह अपना उदगीत प्रारम्भ करने लगे। उन्होंने कहा हे अश्विनी कुमारों यह जो मानो देखो, जितना भी औषध विज्ञान है जितना भी यह संसार है उसका नियमन करने वाले को देखो, हम ब्रह्म कहा करते

हैं। जैसे हमारे यहां सूर्य में प्रकाश आ रहा है तो सूर्य में प्रकाश कहां कहां जाता है और वह सूर्य का नियमन करने वाला मानो देखो, वह परमपिता परमात्मा माना गया है। मानो देखो, वही ब्रह्म है और वह ब्रह्म ही वायु का नियमन कर रहा है, चन्द्रमा का नियमन कर रहा है और वही मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड को अपने में नियम में चला रहा है। तो उस नियमकर्ता को जानो, उसका नाम ब्रह्म है। तुम ब्रह्मज्ञान में परणित होना चाहते हो तो मानो देखो, एकोकी उसके आश्रित हो जाओ जैसे माता का प्रिय बालक देखो, माता के संरक्षण में रह करके रूदन करता है। जब उसकी लोरियों में लोरियो की इच्छा होती है तो वह रूदन करता है माता उसे अपने हृदय से आलिंगन करके मानो देखो, उसकी क्षुधा को शान्त कर देती है। इसी प्रकार जैसे आचार्य कुल में जि विद्यअ का उसे बोध कराना है तो आचार्य से वह प्रश्न करता है रूदन करता है जिज्ञासा करता हे और वह मानो देखो, उस विद्या का अध्ययन का अधिकारी बन जाता है। इसी प्रकार हे अश्विनी कुमारों! तुम मानो देखो, अपने जीवन को आश्रित कर दो उस परब्रह्म परमात्मा के जो इस संसार का नियमन कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जैसे वह ब्रह्म विद्या का ज्ञान करा रहे थे तो महात्मा अमृतम् देखो, अश्विनी कुमार अम्ब्रहे अपने में अध्ययन कर रहे थे।

महाराजा इन्द्र के दूतों ने यह इन्द्र से कहा हे प्रभु! देखो, महात्मा दधीचि अश्विनी कुमारों को ब्रह्म विद्या दे रहे हैं क्योंकि उनका पूर्व ही औषध विज्ञान इतना प्रबल बन गया है इतना महान बन गया है तो मानो देखो, वह तुम्हारी स्थली को न प्राप्त कर ले। तो तुम्हारे एक सौ एक अश्वमेध याग है और उसका जो औषध विज्ञान है वह भी एक याग ही स्वरूप माना गया है। परन्तु देखो, वह यागम् ब्रह्मा उसकी वनस्पतियों का विशेषज्ञ होना और देखो, वह आयुर्वेद में पारायणता को प्राप्त होना वह भी एक याग है। जब दूतों ने यह कहा तो महाराजा इन्द्र ने कहा क्या करना चाहिएघ् दूतों ने कहा हे प्रभु! यदि आपको अपने राष्ट्र की रक्षा करनी है और अपनी रक्षा करनी है तो उनको नष्ट किया जाए महात्मा दधीचि को जहां से ब्रह्मज्ञान को

उद्बोधन हो रहा अथवा जो ब्रह्मज्ञान को प्रसारित कर रहा है। अश्विनी कुमार ब्रह्मवेत्ता बनते ही उनका महायज्ञ हो जाएगा। और वह एक सौ एक अश्वमेध यागों से कई गुणा बन करके मानो देखो, उनका तप छा जाएगा। और तुम्हारी इन्द्रपुरी को देखो, सब देवता उसे अपना देवता स्वीकार करके तुझे देवत्व से दूरी न कर दें।

इन्द्र द्वारा अमोघ अस्त्र का प्रहार

मेरे प्यारे! देखो, ऐसा मुझे, ऐसा साहित्य से प्रतीत हुआ है, क्या महाराजा इन्द्र ने बेटा! कहा ब्रह्मणे हत्या। उन्होंने पुनः कहा क्या करना चाहिएघ् उन्होंने कहा तुम दधीचि के कण्ठ के ऊपरले भाग को दूरी कर दो। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो मुनिवरों! उन्होंने एक अमोध अस्त्र था उनके द्वारा उस शस्त्र को उन्होंने देखो, वायु मण्डल में त्याग दिया और यह कहा कि जाओ दधीचि के कण्ठ के ऊपरले भाग को दूरी कर दो। मेरे प्यारे! देखो, अमोध अस्त्र इन्द्र के यहां से गमन करता है गमन करता हुआ मुनिवरों! देखो, दधीचि को यह ज्ञान हो गया था। उन्होंने कहा अश्विनी कुमारों इन्द्र का अमोघ शस्त्र आ रहा मेरे कण्ठ को, मेरे कण्ठ के ऊपरले भाग को दूरी करने के लिए। अश्विनी कुमारों ने कहा प्रभु! आप इसके ऊपर कोई अशुद्ध मनन न करें। हम ब्रह्मणे व्रतम् ब्रहे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अश्विनी ने जा करके भयंकर वनों से दखो औषध एकत्रित की और मुनिवरों! देखो, इन्द्र ने उनके, इन्द्र ने दधीचि के कण्ठ के ऊपरले भाग को दूरी कर दिया। दूरी करके अमोध अस्त्र देखो, इन्द्र के यहां स्वतः चला गया और वह तो इन्द्र के यहां चला गया। अमोध से ज्ञान हो गया इन्द्र को की अमोध ने अपना क्रियाकलाप पूर्णत्व में प्राप्त कर दिया है।

अश्विनी कुमारों द्वारा महात्मा दधीचि का उपचार

परन्तु देखो, महात्मा दधीचि जब महात्मा दधीचि के दो भाग हो गये तो अश्विनी कुमारों ने बेटा! वह औषध एकत्र की, जिसमें एक औषध का नाम मृचिका है द्वितीय औषध का नाम व्रेतकेतु है और एक औषध का नाम अमृता है और तृतीय औषध का नाम सोमकृति है और सोमकृति से ऊर्ध्वा भाग में रमण करना वाली

सोमवृतिका कहलाती है। और मुनिवरों! देखो, शैलवृचिका इन औषधियों को एकत्रित करके बेटा! अग्नि में तपा करके इनका खरल किया और खरल करने से बेटा! देखो, कण्ठं ब्रह्मा उन्होंने देखो, ब्रह्मज्ञान तो चल ही रहा था, वह उन्होंने देखो, औषधियों का पिपाद बना करके वह कण्ठ का भाग देखो, उन औषधियों में नियुक्त कर दिया। और नियुक्त करके और द्वितीय देखो, उनके कण्ठ के ऊपरले भाग में अश्व का मस्तिष्क, अश्व का कण्ठ लाकर के मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने उनके कण्ठ पर स्थित कर दिया और स्थित करके उनको देखो, औषध का लेपपन करने से वह अश्व के मुखारबिन्द से बेटा! देखो, ब्रह्मज्ञान का प्रारम्भ हो गया। जब प्रारम्भ हो गया तो मुनिवरों! देखो, एक गो वृत्तिका एक औषध होती है जो प्रायः पर्वतों में प्राप्त होती है, हिमालय की कन्दराओं में और उसके साथ ही देखो, एक शैलवृत्तिका औषध भी विद्यमान रहती है दोनो एक खरल बना करके उस अश्व के मानो देखो, कण्ठ तक जाने ही से देखो, ब्रह्मज्ञान का प्रारम्भ हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब ब्रह्मज्ञान होने लगा ब्रह्मज्ञान को दोनों अश्विनी कुमार देखो, श्रवण करते रहे। श्रवण करने मात्र से बेटा! ब्रह्म ज्ञान उन्हें पूर्णता को प्राप्त होने लगा।

इन्द्र की मानवीयता

महाराजा इन्द्र को यह प्रतीत हुआ, उनके कर्मवेत्ताओं ने कहा प्रभु! देखो, महात्मा दधीचि का कण्ठ का जो भाग है उस पर अश्व का कण्ठ विद्यमान हो करके ब्रह्मज्ञान प्रारम्भ हो रहा है और उनकी खेचरी वाणी को वह श्रवण करने वाले हैं और वह श्रवण कर रहे हैं औषध विज्ञान को के बल को ले करके। क्योंकि मैं एक ही समय मेरा अमोध अस्त्र एक ही समय देखो, कण्ठ को दूरी कर सकता है। यह कर तो अब भी सकता है परन्तु यह मानवता के विपरीत है, मैं जो याग करता हूं उसके विपरीत है मैं उसको नही कर पाऊंगां।

महात्मा दधीचि का कण्ठ पुनः से स्थिर

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मज्ञान प्रारम्भ रहा और ब्रह्मज्ञान बेटा! देखो, ऊर्ध्वा गति में रमण करता रहा। ब्रह्मवेत्ता बेटा! अश्विनी कुमार दोनों जहां देखो, औषध विज्ञान में

वे पारायण में भी अमृता को प्राप्त होने लगा। जब अमृत्त को प्राप्त करने लगे बेटा! वहां अमृतमयी बन गये। मेरे प्यारे! देखो, छः माह तक वह अश्व के देखो, मुखारबिन्द से ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करते रहे। उस समय महात्मा दधीचि ने अश्व से यह प्रेरणाम् ब्रह्मा यह कहा कि हे अश्विनी कुमारों! वह जो मेरा कण्ठ है इसको इसी समय स्थिर करो। मेरे प्यार देखो, वह जो औषधियों का उन्होंने पिपाद बनाया था और पिपाद बनाया तो उसमें से और भी कुछ औषधियों को ले करके पिपाद बनाया परन्तु देखो, उस अश्व के कण्ठ से वह दूरी करके उनके श्रम ब्रव्हा उनके कण्ठ से बेटा! वह दूरी कर दिया और उन्होंने उनका जो मस्तिष्क था वह जो कण्ठम् ब्रह्मे कण्ठ का ऊपरला भाग था वह वही स्थिर करके और औषधियों का लेपन करके मेरे पुत्रों! देखो, वह ज्यों का त्यों पुनः गति करने लगा और अश्विनी कुमार बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा हमारे पूज्यपाद गुरुओं ने हमे मानो देखो, यह अमृतमयी विद्या दी है। इस अमृत्त का अध्ययन हमने एक सौ पांच वर्ष तक भयंकर वनों में मानो देखो, एकत्र विद्यामान हो करके अन्वेषण किया। उस अन्वेषण का यह फल हमें प्राप्त हुआ है क्या हमने ब्रह्मज्ञान को मानो देखो, उसी की कृपा से पाया है।

महात्मा दधीचि द्वारा अश्विनी कुमारों को ब्रह्मज्ञान की दीक्षा

मेरे प्यारे! देखो, अश्विनी कुमार तो प्रसन्न थे ही, परन्तु महात्मा दधीचि भी बड़े प्रसन्न हुए और महात्मा दधीचि ने कहा क्या तुम्हारा ब्रह्मज्ञान और औषध विज्ञान दोनों महान बन गए हैं। सबसे प्रथम तुम्हारा जो आत्मा है उस आत्मा का जो ज्ञान है वह तो औषध विज्ञान है परन्तु देखो, ब्रह्मज्ञान मैं तुम्हें करा रहा हूं। यह आत्मा जो है वह ब्रह्मज्ञानं ब्रह्मा देखो, वह परमाणु परमाणु के रूप में रहता है। परमात्मा विभु है, और आत्मा अणु है। इस प्रकार मुनिवरों! देखो, इसको ले करके महात्मा दधीचि ने अपना निर्णय दिया और निर्णय दे करके कहा कि वह संसार का आयतन करने वाला वह परब्रह्म परमात्मा है जो प्राणों का भी प्राण है। जो मानो आत्मा का भी आत्मा है, जो अमृत्त का भी अमृत्त कहलाता है। जो मृत्यु का भी मृत्यु है।

ब्रह्म की ओर

तुम मानो उसको ब्रह्म जान करके उसके आश्रित हो करके, आश्रित हो जाना ही ज्ञानयुक्त हो करके और आश्रित हो जाना ही बेटा! देखो, ब्रह्मज्ञान कहलाता है। जब तक वह ज्ञान से आश्रित होता है तभी मुनिवरों! देखो, उसका कल्याण होता है और यदि वह आश्रित हो गया, ज्ञान उसे है नही तो वह भी अधूरापन है और देखो, ज्ञानं ब्रह्मा देखो, ज्ञानात्वाम् ब्रह्मे ज्ञान देखो, आश्रित होना देखो, आश्रित कर्म है और ज्ञान मानो देखो, ज्ञान और कर्म दोनों ही मानव के पवित्र बनेंगें तब बेटा! देखो, वह ब्रह्मज्ञान में अपने में सफलता को प्राप्त हो सकेगा।

तो विचार आता है बेटा! ब्रह्मज्ञानी बनना, यह सौभाग्य का एक विषय कहलाता है। परन्तु ज्ञानी बनना यह भी सौभाग्य है। परन्तु देखो, ब्रह्मज्ञान में परणित होना ज्ञानां भूतं ब्रह्मे व्रतं मानो देखो, सर्वत्र हूत प्राणियों में एक ब्रह्म को जो सह दृष्टिपात करने वाला होता है, जो इस ब्रह्माण्ड को मापता रहता है और ब्रह्माण्ड को अपने में माप करके, ब्रह्माण्ड को अपने में समावेश कर लेता है। और ब्रह्माण्ड को जान करके बेटा! वह ब्रह्माण्ड अपने में और ब्रह्माण्ड को अपने में समेट लेता है जैसे देखो, ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म को अपने में, अपने को ब्रह्म में जो दृष्टिपात करता है बेटा! वह ब्रह्मवेत्ता कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं ब्रह्म की चर्चा करने लगा हूं, मैं इसमें अपना इतना समय अवरित नही करना चाहता हूं केलव यह क्या मुनिवरों! देखो, हमारे यहां साहित्यिक विचारों में अपने में बड़ा अन्वेषण होता रहा है। तो बेटा! देखो, वह ब्रह्मज्ञानी बन गए। जहां उन्होंने अमृत्त को प्राप्त कर किया था वहां ब्रह्मज्ञान बेटा! महा अमृत्त को प्राप्त करने वाले अश्विनी कुमार एक महानवेत्ता बन गए। महान ब्रह्मवेत्ता बन करके बेटा! उन्होंने अपने जीवन की ऊर्ध्वागति बनाई और ऊर्ध्ववेत्ता जो बन जाता है वही महानता को प्राप्त कर लेता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब महात्मा अमृतम् देखो, वह अपने में शान्त दोनों ब्रह्मविद्या को नित्यप्रति प्राप्त करते।

इन्द्र और देवताओं का दधीचि द्वार पर आगमन

देखो, उस समय महाराजा इन्द्र ने बेटा! वृत्रासुर ने आक्रमण कर दिया। जब वृत्रासुर ने दैत्यों ने आक्रमण कर दिया इन्द्र पे तो इन्द्र को यह आकाशवाणी आई, हे इन्द्र! यह वृत्रासुर जब विजयी हो सकते हैं जब मानो देखो, अमृतं जब यह परास्त हो सकते हैं, और तुम विजयी हो सकते हो जब दधीचि के मानो देखो, अस्थियों का वज्र बने और वत्रासुर नष्ट हो सकते हैं। तो बेटा! देखो, ब्रह्मे व्रतम् महाराजा इन्द्र ने अपने मन्त्रीगणों से, अपने महा ब्रह्मवेत्ताओं से उन्होंने कहा भई ऐसी वाणी आई है। बैखरी वाणी यह कहती है परन्तु मैं अब किस मुखारबिन्द से दधीचि के द्वार पर जा सकता हूं जो दैत्यों से मेरी रक्षा हो। अमृतम् देखो, वह देवताओं ने कहा हे प्रभु! यह जो महात्मा दधीचि है यह नम्र है। जो ब्रह्मज्ञानी होता है वह अपने शरीर पर शरीर को मोह नही किया करता है। वह लोक कल्याण की विचारता है वह ब्रह्म के राष्ट्र को विचारता है। वह मानो देखो, हित को विचारता है, वह अमृतों को प्राप्त करा देता है तुम उसके द्वार पर जाओ। उन्होंने कहा देवताओं से कि हम मानो दोनों ही गमन करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, देवताजन से कि हम मानो दोनों ही गमन करेंगें। मेरे प्यारे! देखो, देवताजन और इन्द्र दोनों ने ही उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते बेटा! देखो, वह महात्मा दधीचि के द्वार पर पंहुचें। महात्मा दधीचि ने इन्द्र का स्वागत किया। अश्विनी कुमारों से भी उनका स्वागत कराया। वह विराजमान हो गए। महात्मा दधीचि ने कहा कहो राजन हे देवा इन्द्रों भवतं ब्रहे हे देवताओं के राजा इन्द्र कैसे आगमन हुआ हैघ् उन्होंने कहा प्रभु! देखो, वृत्रासुर के आक्रमण कर दिया है और मुझे देखो, तुम्हारा दधीचि की अस्थियां चाहिए जिससे मैं उसका वज्र बना सकूं। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा सम्भव ब्रह्मे उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो देखो, मैं अपनी अस्थियों को प्रदान कर सकता हूं। बेटा! देखो, जो महात्मा देखो, अपने वज्र अमृते वज्र तुल्य अस्थियों का पालन कर रहे हों मानो देखो, उसमें से लेकर कदापि भी कही नही गया हो वह वज्र बनने के सुयोग्य बनती हैं अस्थियां।

अलंकार, साहित्य और इतिहास में भिन्नता

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणे देखो, हमारे वैदिक साहित्य में इन्द्र यहां राजा को तो कहते हैं और देखो, दधीचि भी ऋषि को कहा गया है। परन्तु यहां देखो, प्रकरण भिन्न हो जाता है। प्रकरण भिन्न हो करके इन्द्र नाम मेरे प्यारे! देखो, यहां सम्भव देखो, वायु का माना गया है वैदिक साहित्य में। राजा का नाम भी इन्द्र है और वायु का नाम भी इन्द्र है मेरे प्यारे! दधीचि नाम हमारे यहां देखो, ऋषि को कहा गया है। उस प्रकरण से भिन्न हो करके मानो देखो, यह अलंकार बन गया है। अलंकार होने से देखो, दधीचि नाम पर्वत को माना गया है। वहां से बेटा! देखो, धातु को ले करके उन्होंने मुनिवरों! वह अमृतं देखो, दधीचि से वज्र का निर्माण किया और वज्रों समं ब्रह्मा वजत प्रव्हा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने उस वज्र मानो देखो, उसके गम्भीर वृत्तियां मानी जाती हैं जैसे पर्वतों में धातु पिपाद बना हुआ है वह उस मानो देखो, पर्वतों की अस्थियां मानी गई हैं। तो उसका वज्र वना और वज्र बन करके बेटा! देखो, वह ब्रह्मणे अलंकार अस्स्सुतं वह वज्रं ब्रह्मे देखो, वायु बन करके बेटा! देखो, वह ब्रह्मणे अलंकार अस्स्सुसतं वह वज्रम् ब्रह्मे देखो, वायु जब मेघ मण्डलों को बेटा! देखो, पर्वतों से दधीचि से जब यह अपना प्रहार करती है तो उसी समय बेटा! देखो, वह मेघ मण्डलों को छिन्न भिन्न करके बेटा! वृत्रासुर को नष्ट कर देती है तो विचार आता है बेटा! देखो, यह वाक वाक्याम् भूतम् ब्रह्मे इन्द्र के नाना प्रकार के पर्यायवाची माने गए हैं। परन्तु यहां एक केवल यह शङ्का उत्पन्न हुई कि दधीचि के द्वार पर इन्द्र का आगमन होना और उससे यह उच्चारण करना कि मुझे अस्थियां चाहिए। तो देखो, वह इन्द्र उनको उपाय वर्णन करते हैं क्या जाओ तुम देखो, यहां तुम प्रकरण से भिन्न हो रहे हो। इन्द्र जाओ तुम देखो, इन पर्वतों की अस्थियों को ले करके वज्र का निर्माण करो। देवताजन और दैत्यों का जब संग्राम होता है तो मानो देखो, उससे वज्र बनते हैं और वज्रों का ब्रह्मणे देखो, वज्रम ब्रहे कृतम् उसी से बेटा! देखो, इन्द्र ने उनको उपाय उसके पश्चात उदगीत रूप में गाया।

परन्तु देखो, यहां यह भी कहा जाता है क्या देखो, इन्द्रों शमं ब्रह्मा दधीचि की

अस्थियों को लाने के लिए देखो, कामधेनु गऊ उनके द्वारा थी। उस कामधेनु ने देखो, उसका जो चमड़ी विभाग था वह अपने में स्वर्ण करके उसकी दधीचि अस्थियां उसकी जो मानो अस्थियां थीं, रूप में बन करके और वह अवृत्त हो गईं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह भी एक अलंकार है। हमारे यहां गो नाम बेटा! पृथ्वी को कहा जाता है गो नाम पृथ्वी का है मङ्गलम् देखो, दधीचि की जो अस्थियां हैं उसका धातु पिपाद है। बेटा! देखो, अलंकार और देखो, साहित्य दोनों भिन्न भिन्न होने चाहिए। जब एकोकीकरण हो जाता है तो साहित्य और साहित्य में और अमृति ब्रहे बेटा! देखो, अलंकार में दोनों में एकता आने से देखो, दोनों भ्रष्ट हो जाते हैं। न तो इतिहास रहता है और न मुनिवरों! देखो, यह अलंकार रहता है। तो इसीलिए अलंकार अलंकारों में रहना चाहिए और साहित्य साहित्य में इतिहास इतिहास में रहना चाहिए जिससे इतिहास का अपना अस्तित्व बना रहे। तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा दधीचि का इतिहास यहां तक है कि इन्द्र ने द्वेष में आ करके उनके कण्ठ का भाग दूरी कर दिया। वह रजोगुण, तमोगुण की अपने में देखो, ध्यानाम् ब्रह्मे वृतम् जो अभिमान की आभा ने देखो, उन्होंने नष्ट करना चाहा। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार अपने में अपनेपन को विचारों और देखो, दधीचि का जो विज्ञान है वह बड़ा विशाल है दधीचि एक ऋषि हुए हैं और सुकेन वैद्य के गुरु कहलाते थे। उन्होंने भी यही शिक्षा का अध्ययन किया था। अश्विनी कुमारों ने भी इसी विद्या का अध्ययन किया था। औषध विज्ञान देखो, सूर्य की किरणों के साथ में गमन करता है। मैं आगे बेटा! शेष चर्चाएं तुम्हे कल प्रगट कर सकूंगा आज मुझे इतना समय आज्ञा नही दे रहा है।

आज का हमारा विचार विनिमय क्या है कि आज के विचारों का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और उसका जो अनन्तमयी भण्डार है औषध विज्ञान का भण्डार है ब्रह्मज्ञान का भण्डार हे वह अनन्तमयी माना गया है। बेटा! उसके ऊपर विचार विनिमय करना चाहिए। आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ केवल तुम्हे इतिहास की चर्चाएं प्रगट कर रहा

था। इतिहास में इतिहास के दूसरे रूप में बेटा! देखो, दधीचि भिन्न भिन्न प्रकार से मानो उसकी विवेचना की जाती है। इन्द्र नाम आत्मा का है, इन्द्र नाम परमात्मा का है और इन्द्र नाम बेटा! सूर्य को कहा जाता हैए जो द्यौ का स्वामी है। जो प्रत्येक किरण का स्वामी है। मेरे प्यारे! स्वामी होने से उसका नाम इन्द्र है। मानो देखो, इन्त्र नाम राजा का है जो राषट्र की व्यवस्था का निर्माण करता है और राजाओं के ऊपर जो राजा होता है उसका नाम इन्द्र है। वह देवताओं का धिराज कहलाता है और इन्द्र नाम बेटा! वायु का है जो मेघ मण्डलों से वृत्रासुरों से दधीचि का वज्र बना करके हिमालय से जब वायु अपना मिलान करती है तो मेघमण्डलों को भिन्न भिन्न कर करके उनकी वृष्टि करा देती है। उसी से बेटा! अन्न इत्यादि की उत्पति होती है। तो यह अलंकार मानो देखो, वही लोलुक्ति देखो, अलंकार कहा जाता है। इन अलंकारों में देखो, साहित्य में दोनों में भिन्नता आ जाती है।

तो विचार विनिमय यह बेटा! अलंकार केवल वार्ता को सजाने सजातीय बनाने के लिए होता है। इसीलिए मैंने इसको सजाया है। तो आज का विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा के अनन्तमयी स्वरूप के ऊपर विचार विनिमय करें। वह परमात्मा भिन्न भिन्न प्रकार से मानो उसका विमोचन किया जाता है, गुणगान गाया जाता है। कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! इससे आगे की शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा जो इन्द्र और दधीचि का दोनों का संवाद प्रारम्भ होगा।

मेरे प्यारे! आज का विचार विनिमय केवल ये क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते रहें, देव की महिमा का गान गाते रहें और अलंकार और साहित्य को अपने में विचार विनिमय लाते रहें। इन पर विचार करें और विचार करके मानो देखो, उसके ऊपर अपने आचरण को धारयामि बनाए। यह है बेटा! अपना आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगां। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां मनुगायन्त्वा आभ्यां मनाः। ओ३म् तनु धितां रथं आभ्यां देवाः गायाऽयां। ओ३म् मनु मनथरं प्राची देवं भद्राः। अच्छा भगवन्! आज्ञा।

8. 920218-याज्ञिक प्रेरणा

परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, और वह प्रायः उसी में वास कर रहा है। तो उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है जो यागों में व्याप्त रहने वाला है हम प्रायः उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहे थे क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप है जो यागों में व्याप्त रहने वाला है। हम प्रायः उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहे थे। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन होता रहता है। क्योंकि मानव परम्परागतों से ही, भिन्न भिन्न प्रकार की उड़ाने अपने में उड़ता रहा है। परन्तु यागों के ऊपर भी आचार्यों ने अपनी एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो कर के और उसके ऊपर उन्होंने अन्वेषण किया, अनुसन्धान किया और इस संसार को उन्होंने यज्ञमयी वेदी का स्वरूप देते हुए यह वर्णन किया है कि यह परमपिता परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है यह एक प्रकार की यज्ञवेदी है। जिसके ऊपर मानव विराजमान हो करके, प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है जितना भी सुक्रियाकलाप है, सुकर्म है उस सर्वत्र का नाम एक यज्ञमयी रूप माना गया है। जैसे मेरी प्यारी माता अपने पुत्र को, अपने बाल्यों को शिक्षा देती रहती है। और वह अपने गर्भस्थल से ले करके पांच वर्ष की आयु तक वह अपना उपदेश और अपनी सुभावना उसे मानो वृत्तियों में रत्त करती रहती है। श्रोत्रों में शब्दों के द्वारा वह अपने में ग्रहण करता रहा है तो मुनिवरों! देखो, वह माता याग कर रही है देखो, आचार्य अपने विद्यालय में विद्यमान हो करके वह मानो उद्गीत गा रहा है ब्रह्मचारियों के मध्य में और ब्रह्मचारियों से कहता है हे ब्रह्मचारी! आओ तुम याज्ञिक

बन करके अपने में, यागों में प्रवेश कर जाओ। तो मानो देखो, अपने में याज्ञिक बन जाते है। और बन करके मुनिवरों! देखो, यज्ञनम् ब्रह्मा वर्णासुताः तो नाना ब्रह्मचारी भी इससे प्रश्न करते रहते हैं।

याग की व्याख्या

मैंने कई कालों में तुम्हें चर्चा करते हुए कहा है क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में नाना प्रकार की चर्चाएं होती रही है। उन्होंने जब याग के ऊपर अपनी नैतिक शिक्षा देते हुए ब्रह्मचारियों के मध्य में यह कहा कि हे ब्रह्मचारियों! यह तो याग है यह तुम्हारा वसु है और इस वसु में मानो तुम बसते हो जिस वसु में तुम बसते हो उसका नाम याग है तो जितना भी सुक्रियाकलाप है संसार में सर्वत्र मानो वह याग के रूप में परणित होता रहा है। क्योंकि उन्होंने अपनी विचार धारायें और कल्पना करते हुए कहा कि परमपिता परमात्मा का यह जो अनूठा जगत है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है। मानो उन्होंने ऊर्ध्वा में कल्पना करते हुए कहा है कि क्या अमृतम् ब्रह्मा अमृतम् देवाः अमृतम् दिव्यं ब्रह्मे वर्णास्सुति देवाः मानो यह जो परमपिता परमात्मा का ज्ञान है अथवा यज्ञोमयी जो एक धारा है वह अमृत है। हे मानव! तू उस अमृत को प्राप्त करने वाला बन। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकारी की अपने में कल्पना करते हुए आचार्यों ने यह कहा कि जो यह संसार रूपी यज्ञशाला है जिसके ऊपर मानव ने ऊर्ध्वा में कल्पना की है और कल्पना करते हुए उन्होंने कहा कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है और इस यज्ञशाला में स्वयं ब्रह्मा मानो यज्ञशाला में ब्रह्मा हैं और आत्मा यज्ञमान है। आत्मा यज्ञमान होने से मानो वह अपने में याग हो रहा है और यह पञ्च महाभूत यज्ञशाला के कोई इनमें से होता है, कोई उद्गाता है, कोई अध्वर्यु है और वह कोई पुरोहित बन करके बेटा! इस संसार रूपी याग को चलन हो रहा है और जिसमें मानव अपने में याग कर रहा है। यह परमात्मा का भव्य याग है। नाना प्रकार की वनस्पतियां, नाना प्रकार का यह जो क्रियाकलाप वनस्पतियों के रूप मे जो सुगन्धित, पौष्टिकता

मानव को प्रदान करता रहता है कोई खाद्य पदार्थों के द्वारा, कुछ खनिज पदार्थों के द्वारा। तो बेटा! यह परमात्मा का एक अनूठा जगत है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अपने में विचार विनिमय करता रहा है। कि यज्ञनम् ब्रह्मा यज्ञनम् ब्रहे कृतम् यह परमात्मा मानो इस संसार रूपी यज्ञ का स्वतः स्वामी है और इसका नेतृतव करने में इसका वह नियमन कर रहा है अथवा इसमें वह विद्यमान है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र यही कह रहा है कि हम अपने में याज्ञिक बन करके और याग को अपने में सम्पन्नता के मार्ग पर ले जाए जिससे यह संसार मानो पवित्र और महान बनता है तो मुनिवरों! विचार विनिमय क्या अमृतम् आज का हमारा वेदमन्त्र बेटा! याग के ऊपर अपना उद्गीत गा रहा है और यह कह रहा है यज्ञनम् ब्रह्मा अकृतं देवत्वाम् लोकाम् हे मानव! तू अपने में विचारधारा को पवित्र बना जिससे तेरा मानवीयतव पवित्रता की धारा ओत प्रोत होता हुआ परमात्मा, ब्रह्मा को जान करके तू ब्रह्म सूत्रों का पठन पाठन करता अपने को ब्रह्म के निकट ले चल क्योंकि वह तुम्हारा कल्याण कारक है और कल्याण में ही अपनी मानो देखो, उस मानव समाज को ले जाने वाला है। तो आओ बेटा! देखो, आज का विचार विनिमय क्या आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नही देने आया हूँ। केवल इतना वेदमन्त्र कहता है कि यज्ञनम् ब्रह्मप्रमाणं बहे, वह जो परमात्मा है वह यज्ञोमयी स्वरूप है। हम उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन करते चले जाएं और उसको वह संसार का स्वामीतव मानो यह संसार रूपी यज्ञशाला है वह यज्ञशाला में विद्यमान हो करके हम सर्वत्र याग कर रहे हैं।

महर्षि याज्ञवल्क्य जी द्वारा नैतिकवाद की शिक्षा

तो आओ मेरे प्यारे! इस विशेष वाकम् ब्रह्मा व्रतम् इन वाक्यों में न जाता हुआ केवल यह कि तो आओ बेटा! तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय की चर्चा मैं बारम्बार प्रगट करता रहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, प्रातःकालीन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारियों के मध्य में यह

उपदेश दे रहे थे हे ब्रह्मचारियों! विद्यालय का सबसे प्रथम यह कर्तव्य है कि क्या ब्रह्मचारियों को नैतिकवाद आना चाहिए। उन्हें अपनी इन्द्रियों का ओर अपने कर्तव्य का ज्ञान होना चाहिए। जब तक ब्रह्मचारी को आचार्य कर्तव्यवेत्ता नही बनाता, कर्तव्य का ज्ञान नही देता है उसको क्रियात्मक आचार्य ओर ब्रह्मचारी दोनों नहीं होंगें तो विद्यालय कदापि भी पवित्र नही बन पायेंगें। यह विद्यालय एक प्रकार की यज्ञशाला है जहां शिक्षा, शिक्षा में प्रणेः शिक्षाशाला हैं वही बेटा! देखो, यह यज्ञशाला है यज्ञशाला का अभिप्राय है कि जहां हम एक दूसरे में विचार का समन्वय करते हुए, वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए हम विचारों का एक याग करते हैं तो उसको बेटा! देखो, हमारे यहां यज्ञशाला कहा जाता है। जैसा मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि भारद्वाज मुनि के विद्यालय में मानो देखो, ब्रह्मचारी अपने में विद्यमान है। ओर ब्रह्मचारी एक एक वेदमन्त्र का उद्गीत गा करके उसकके ऊपर अनुसन्धान कर रहे हैं। अथवा विचार विनिमय हो रहा है ओर वह मुनिवरों! देखो, उसी विचार को ला करके अपनी आभा में परणित कर देते है। तो विचार आता रहता है कि वह यज्ञशाला है ओर यज्ञशाला में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारी अपने मानवीय जीवन को ओर मानवीय ओर बाह्य जीवन, दोनों को ऊर्ध्वा बनाने का प्रयास करते रहे हैं।

याज्ञिक बनने की प्रेरणा

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार के यागों का अवधान होता रहता था। मुझे स्मरण आता रहा है उनके यहां प्रातःकालीन ब्रह्मयाग होतारहता। आचार्य मध्य में विद्यमान है ओर ब्रह्म का चिन्तन कराना ओर ब्रह्म में उनको ले जाना बेटा! देखो, यह आचार्यों का कर्तव्य है, उसे ब्रह्मयाग कहा जाता है जहां ब्रह्म के ऊपर ब्रह्म की प्रतिभा का वर्णन होता रहा है अथवाउनकी शिष्टात्व ब्रीहि अस्सुतम् मनु वाचप्रवे मानो देखो, कैसे कैसे यह प्रकृति का अवधन हो रहा है कैसे यह जगत चल रहा है इसके ऊपर बेटा! वह अपना मन्तव्य देते रहे हैं। आचार्यजन जब यह उच्चारण करने लगे कि तुम याग करो तो

उन्होंने बेटा! देखो, भौतिक और आध्यात्मिक को, दोनों को, उन्होंने कटिबद्ध किया है। दोनों अपने में बड़े विचित्रतव में धारयामि बनते रहे हैं। तो बेटा! देखो, जैसे वह याग का उपदेश दे रहे थे हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो और तुम याज्ञिक बन करके अपने शरीर रूपी यज्ञशाला को जानने का प्रयास करो। बेटा! उन्होंने अपना मन्तव्य देते हुए कहा क्या अमृतम् ब्रह्मा यज्ञनम् ब्रहे तुम याज्ञिक बन करके वृत्तियों में प्राप्त हो जाओ।

याग के होता

तो बेटा! एक यज्ञदत्त ब्रह्मचारी और एक श्वेतकेतु ब्रह्मचारी दोनों उपस्थित हुए और उपस्थित हो करके यज्ञदत्त ने यह प्रश्न किया कि महाराज! यह यज्ञमान मेरे समीप है परन्तु वह याग करना चाहता है उस याग में कितने होता होने चाहिए? तो बटा यहां ऋषि ने आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का एक दूसरे में कटिबद्ध किया है, दोनों को एक दूसरे में उन्होंने मानो देखो, इसमें प्रवेश किया है। उन्होंने कहा क्वंगलम् ब्रहे वर्णस्सुतम् क्या हे प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है तो चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने चौबीस होताओं की गणना कराई दस प्राण हैं, दस इन्द्रियां हैं, मन और बुद्धि, चित्त और अहङ्कार मानो देखो, ये चौबीस होता कहलाए जाते हैं और ये चौबीस होता ही मानो देखो, ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला के मानो ये खम्बे हैं, वही मानव के जीवन के स्तम्भ माने गएं है। मेरेर प्यारे देखो, प्राणाम्भूतम् ब्रह्म इस प्रकार देखो, यज्ञमान यदि याग करना चाहता है तो चौबीस होताओं के द्वारा याग करे। मानो देखो, मन, बुद्धि, चित, अहङ्कार इसके बहुत अवान्तर भेदन माने गएं हैं। इन भेदनों को ले करके बेटा! आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना है मानो देखो, इसको हमारे यहां याज्ञिक कहा जाता है। यज्ञमान से जब अम्ब्रहाम् देखो, यज्ञमान याग करना चाहता है तो चौबीस होताओं के द्वारा वह याग करने वाला बनें इन सबको सुसज्जित बनाए और इनके साकल्यों को एकत्रित करके विचार विनिमय करता रहे।

सूक्ष्म शरीर

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? तो ऋषि ने बेटा! सूक्ष्म शरीर को मापे का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि यामान याग करना चाहता है तो सत्रह होताओं के द्वारा याग करें। बेटा! जिसमें देखो, दस प्राण हैं, पञ्च महाभूतों की वासनाएं है। ओर मन और बुद्धि है। यह मुनिवरों! देखो, सत्रह होताओं का यह सूक्ष्म शरीर कहलाता है जिसको अग्रणीय बना करके मानो देखो, इसको जानने का प्रयास करना चाहिए ओर जान करके मानो देखो, ज्ञान का साकल्य बना करके मुनिवरों! देखो, उसको हृदय में प्रवेश कर देना चाहिए। वह यज्ञमान माना ़देखो, सर्वश्रेष्ठ होता है जो अपने में देखो, सूक्ष्म शरीर के द्वारा अपने मानवीयतव को जानने का प्रयास करता है, संसार का सर्वत्र ज्ञान उसके समीप मानो सिमट जाता है। तो विचार आता रहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने भौतिकवाद को बेटा! आध्यात्मिकवाद से उन्होंने समन्वय किया।

एकादशो

उन्होंने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहत है कितने होताओं के द्वारा याग हो? उन्होंने कहा यज्ञमान याग करना चाहत है तो ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। तो वह ग्यारह होता कौन से हैं बेटा! देखो, उस इन्द्रियां हैं, ग्यारवां मन कहलाता है। मानो एकादशो बन करके मेरे प्यारे! देखो, एक रथ है ओर रथ में विद्यमान होने वाला आत्मा है वह मुनिवरों! देखो, यह इन्द्रियां अश्व हैं ओर मन उसका सारथी माना गया है जब सारथी बन करके मुनिवरों! गनम करता है, कराता है, इन्द्रियों को सुमार्ग पर ले जाता है तो वह याग कर रहा है। प्रत्येक इन्द्रियां बेटा! याग में होनी चाहिए, प्रत्येक इन्द्रियां अपनी कर्मठता में मानो कर्मठ रहनी चाहिए जिससे मेरे प्यारे! देखो, याग पवित्रता को प्राप्त हो जाएं। यही होता कहलाते हैं ओर इन होताओं को एकाग्र करके जब यज्ञमान याग करता है तो बेटा! यह जो मृत लोक है इसको वह विजय कर लेता है और विजेता बन करके बेटा! अपने को महान बनता है ओर वह कहता है विज्ञानम्भूतम्ब्रह्मे व्रातम्ब्राग्नि अस्सुताः आओ देखो, हम गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करें ओर गृहपथ्य नाम

की अग्नि का पूजन इसीलिए प्रजाम् ब्रव्हे प्रजाम् हम प्रजा को ऊँचा बनाते रहें। तो बेटा! देखो, यज्ञमान अपने में याग करता है तो ग्यारह इन्द्रियों के द्वारा मानो देखो, जिसमें दस इन्द्रियां, ग्यारहवां मन हैं। इनको पवित्र बनाना बहुत अनिवार्य है और उसमें ज्ञान का भरण करना बहुत ही अवृत माना गया है, तो उसके द्वारा याग होना चाहिए।

नौ द्वार

मेरे प्यारे! देखो, इतने में यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा नौ होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। बेटा! देखो, इस मानव शरीर में मानो देखो, नौ द्वार कहलाते हैं और नौ द्वारों के नौ देवता माने गएं हैं देखो, उन नौ देवताओं को ऊँचा बनाना, नौ देवताओं को जानना और प्रत्येक द्वार पर मुनिवरों! देवता को स्वीकार करके उसमें मानो सुन्दर साकल्य और स्थापित देखो, धर्म अम्ब्रहाः उनको जान करके हृदय में प्रवेश करना चाहिए। तो विचार आता रहता है बेटा! नौ द्वार हैं दो नेत्रों के छिद्र हैं, दो नासिका के छिद्र हैं, दो श्रोत्रों के छिद्र हैं और उपस्थ और ग्रीवा मानो मुखारबिन्दम्ब्रहे यह नौ छिद्र कहलाते हैं यह नौ द्वार कहलाते हैं। जब आत्मा जाता है शरीर से तो इन्हीं द्वारा से हो करके जाता है बेटा! यदि नेत्रों के छिद्रों से जाता है तो अग्निमयी शरीरों को धारा करता है और यदि वह मानो देखो, ब्रह्मणां नासिका के द्वार से जाता है तो वह मुनिवरों! देखो, पृथ्वी मण्डल पर मानव जीवन को प्राप्त करता है और यदि मुनिवरों! देखो, श्रोत्रों से जाता है तो अन्तरिक्ष में मानो देखो, गमन करके वह पक्षी बन करके देखो, जीवन को वह यापन करने लगता है। इसी प्रकार मुखारबिन्द से जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह जलचरों में अपनी कृतियों को ले जाता है। इसी प्रकार उपस्थ के द्वारा जाता है तो मुनिवरों! देखो, वह क्रीड़ा करने वाला प्राणी बनता है तो इसी प्रकार हमें विचारना है, हमें यह कर्म करना है जिससे यह आत्मा सुद्वार से जाना चाहिए। जिससे बेटा! हम देवतापन को प्राप्त हो जायें। मेरे प्यारे! देखो, जो योगीजन होते हैं, जो देखो, आत्मा परमात्मा के

ऊपर अन्वेषण करते हैं औरउनके चित्त में कुछ संस्कार रह जाते हैं उनका आत्मा ब्रह्मरन्ध्र से जाता है। वह पुनः देखो, पुण्यवान बन करके वह मुनिवरों! देखो, पुनः देखो, द्वितीय जन्म में देखो, वह अमृतम् ब्रह्म ज्ञान में लग जाते हैं वह उसी साधना में प्रवेश कर जाते हैं और जो मेरे प्यारे! ब्रह्मणे देखो, नासिका के वह सूर्य स्वरों से प्राण जाता है आत्मा के सहित बेटा! देखो, वह मानव जीवन को प्राप्त करता है। तो आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल यह कि दानम् ब्रह्मेः देखो, मानव योनी परन्तु साधारण है। इसी प्रकार देखो, यह नौ द्वारों को जानना और जान करके ही नौ द्वारों से बेटा! देखो, अपने जीवन में नौ द्वारों को पवि बनाने का नाम याग करना है इसको साधक जन करते हैं। यज्ञमान वह आध्यात्मिक में प्रवेश कर जाता है।

सप्त ऋषि

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने नतमस्तिष्क हो करके कहा प्रभु! आपको धन्य है हे प्रभु! मैं यह और जानना चाहता हूँ कि यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हो? तो उन्होंने बेटा! नौ द्वारा को त्याग करके उन्होंने कहा सप्त होता होने चाहिए बेटा! सात होता कौन से जो सप्त ऋषि हैं और वह सातों ऋषि मानो उनमें कोई जमदग्नि है, कोई कश्यप है कोई विश्वामित्र है, कोई व्रीहि है, कोई अत्रि है तो बेटा! देखो, इस प्रकार यह हमारे यहां सप्त होता माने गएं हैं। सप्तर्षि विद्यमान रहते हैं वाणी को अत्रि कहते हैं, नेत्रों को किसी को विश्वामित्र किसी को वशिष्ठ कहते हैं, किसी को कश्यप कहते हैं, तो किसी को जमदग्नि कहा जाता है। इसी प्रकार बेटा! देखो, इन्द्रियों को क्रियाकलाप चल रहा है। यह होता है। और यह होता हृदय रूपी यज्ञशाला में याग करते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। अत्रि इसीलिए वाणी को कहते हैं यह अति आहार कर जाती है मानो यह संसार को निगल जाती हैं अपनी वाणी को अत्रि तत्रमा देखो, वाणी के द्वारा तो इसे अत्रि कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा या इसकी गम्भीरता या इसके गम्भीर रहस्यों में नहीं ले जा रहा हूँ

केवल तुम्हें परिचय कराने के लिए आया हूँ।

पञ्च महाभूत

जब यह पुनः ऋषि ने अपनी जब विवेचना की तो अमृतम् यज्ञदत्त ने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। बेटा! पञ्च होताओं में मानो पञ्च महाभूत हैं औरयह पञ्च महाभूतों में मानो देखो, अग्नि है, जल है, और वायु है, अन्तरिक्ष है और मुनिवरों! देखो, गुरूतव पृथ्वी है। इनको जानना और जान करके मानो देखो, इनका साकल्य बना करके हूत बनाना यह मानो देखो, हूत करने का नाम याग माना गया है। इसको ऋषिजन जब करते हैं तो बेटा! पञ्च महाभूतों के मण्डल को जान करके बेटा! उसमें विजेता को प्राप्त करते है आज मैं इस सम्बन्ध में भी चर्चा नही दूंगा। केवल यह कि हम पञ्च महाभूतों के द्वारा याग करें और पञ्चमम् ब्रह्मे देखो, उनको एकाग्र करके हृदय में प्रवेश कराके हृदय परमात्मा का, हृदय समन्वय होना चाहिए।

यज्ञशाला के पात्र

तो मेरे प्यारे! देखो, जब पुनः यह कहा कि यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? तो बेटा! देखो, ऋषि कहता है सम्भवम्ब्रह्मे वर्णा ब्रह्मा ब्रह्मचरिष्यामि। हे ब्रह्मचारी! यह यज्ञमान, होता जन याग करना चाहते हैं तो मानो देखो, तीन होताओं के द्वारा याग करना चाहिए। यह तीन होता कौन से हैं बेटा! देखो, तीन गुण है सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण बेटा! इन तीन गुणों को एकाग्र करते हुए मेरे प्यारे! देखो, इनको जानना ही हमारा कर्तव्य है सतोगुण का मूल है विचार आता है बेटा! माता में यत तीनों गुण होते हैं। सतोगुण में बालक की पालना करती है और रजोगुण में बेटा! अनुशासन करती है, बाल्य को अनुशासन में ला देती है और तमोगुण में बेटा! उत्पति कामूल विद्यमान हो जाती है। यही मानव में तीन प्रकार के गुण व्याप्त रहते हैं। और यही बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड में तीनों गुणों े गुणाधानम् हो रहा है तीन ही प्रकार के परमाणु हैं देखो, सबसे प्रथम अग्नितत्व, गुरुतत्व, तरलतत्व यह तीन प्रकार के परमाणु जो वैज्ञानिकों के मध्य में

होते हैं। उन्हीं परमाणुओं के ऊपर मिलान करता हुआ कहीं जल परमाणुओं का तरलतव परमाणु को प्रधानता दे करके बेटा! जल में रमण करने लगते हैं और अन्तरिक्ष में प्रवेश कर देते हैं। जब अग्नि का तत्त्व प्रधान कर देते हैं, कहीं बेटा! गुरूतव प्रगधान करते हैं तो पृथ्वी के गर्भ में, पृथ्वी के ऊर्ध्वा भाग में गमन करने वाले यन्त्रों का निर्माण करते हैं तो बेटा! देखो, इसी प्रकार तीन प्रकार के ये गुणाधानम् हैं, तीन प्रकार के परमाणु है बेटा! तेजोमयी, तरलतव और गुरूतव, इन्हीं परमाणुओं में बेटा! देखो, विज्ञान अपनी आभा में अपनी परिधि में बेटा! गमन कर रहा है। तो विचार आता रहता है देखो, तीन ही शिक्षा के मानो शिक्षा प्रणाली में भी तीन ही शब्द हैं अ, उ, और म की आभा में रमण करने वाला यह जगत अपने में देखो, जगत्याम् कहलाता है। तो आओ बेटा! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं, विचार विनिमय क्या वेद का ऋषि कहता है हे यज्ञदत्ता! तुम तीनों गुणाधानम् देखो, तीन यज्ञशाला के पात्र कहलाते हैं, और तीन होताओं के द्वारा वह याग करें रजोगुण में सतोगुण में रजोगुण को और रजोगुण को तमोगुण को बेटा! देखो, यह तीन मनके एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं। मेरे प्यारे! वही सतोगुण है, वही रजोगुण है, वही तमोगुण हैं, तीनों एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं इनके ऊपर विचार विनिमय करने से हमें प्रतीत होता है कि वास्तव में तीनों गुणों में प्रवेश हो जाना चाहिए।

ब्रह्म और प्रकृति

मेरे प्यारे! देखो, यह यज्ञदत्त ने कहा प्रभु! मेरा अन्तिम चरण है कि यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा दो होताओं से देखो, यज्ञमान याग करें। वह दो होता कौन से हैं बेटा! देखो, ब्रह्म और प्रकृति, दोनों को एक सूत्र में ला करके और दोनों के साकल्य बना करके बेटा! अपने अन्तर्हृदय को ऊँचा बनाएं और हृदय से हृदय का मिलान होना ही मेरे प्यारे! देखो, याग माना गया है।

ब्रह्म

तो इस प्रकार तुम मानो देखो, ब्रह्मणो दो से होताम् ब्रह्मे और दो भी न हों तो एक होता होना चाहिए। एकोकी ब्रह्म को स्वीकार करके बेटा! कण कण को अपने में स्वीकार करके ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए। ब्रह्म के द्वारा याग होना चाहिए। याग का अभिप्राय यह कि ब्रह्म की उपासना हृदय में हृदयग्राही बन करके मेरे प्यारे! देखो, आध्यात्मिकवाद को उसमें प्रवेश कर दिया जाएं। तो विचार आता रहता है कि मैं आज तुम्हें कोई विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ। और ये परिचय यह है कि हम बेटा! एक दूसरे मं समावेश होते रहें, एक दूसरे में एक दूसरे की प्रतिभा को अपने में धारण करते रहें। जिससे बेटा! हमारा जीवन एक महानता की वेदी में प्रवेश हो जाए ओर हम महान बन करके बेटा! सागर से पार हो जाए। आओ मेरे प्यारे! आज का हमारायह विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए और याज्ञिक बनें ओर एक दूसरे में क्योंकि आध्यात्मिकवाद संसार में सर्वत्र याग है, भौतिक याग से प्रारम्भ होता है और आध्यात्मिक याग में बेटा! उसका समावेश हो जाता है। तो इस प्रकार के हम यागों में परणित हो जाएं। बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों को इस प्रकार नैतिकवाद दे करके वह अपने में मौन हो गये। तो बेटा! हमारा विचार विनिमय क्या कि हम याज्ञिक बनें एक दूसरे से एक दूसरे में समावेशता को दृष्टिपात करते रहें। यह है बेटा! आज का वाक अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवाम्भूतम्भवि वर्णास्वतम् देवाः वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गागर में सागर कीकल्पना कर रहे थे ओर हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था क्या इस ज्ञान का कहीं छोर नही हैं। वह इतना अनन्तमयी है परमात्मा का ज्ञान यह अनन्तमयी माना गय है परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागार में सागर की कल्पना कर रहे थे। आज मैं कोई विशेष चर्चा नही केवल यह कि जहां आज हमारी आकाशवाणी जा रही है। वहां एक

याग का आयोजन हुआ है ओर मैं यागाम् भूतम् ब्रह्मा क्योंकि यह जो वर्तमान का काल में मानो देखो, द्रव्य का सदुपयोग होना, याग जैसे क्रियाकलापों का होना यह मानो देखो, बड़े सौभाग्य का विषय माना गया है। मैं अपने यज्ञमान को क्या हे यज्ञमान! मेरी शुभकामना सदैव तेरे साथ रहती है कि तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। क्योंकि जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है वह द्रव्य का स्वामी बन जाता है द्रव्य उसे नही त्यागता और जहां द्रव्य का सदुपयोग होता है, सुरा और सुन्दरी में ओर द्रव्य में मानो जिसकी प्रवृत्ति चली गई वह वाम मार्गी कहलाता है। मानो जैसे सुरापान करने वाला देखो, वह वाम मार्गी है। सुन्दरियों में रमण करने वाला भी वाम मार्गी है ओर द्रव्य का जो सदुपयोग इस प्रकार करता रहता है वह देखो, द्रव्य की पिपासा उसकी प्रबल हो गई है, इन्हीं कार्यों के लिए तो वह वाम मार्गी कहलाता है वाममार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करता है इसीलिए हमारा विर केवल यह क्या आधुनिक जो काल है इसमें राजा और प्रजा दोनों ही वाम मार्गी बन रहे हैं ओर दोनों ही वाम मार्गी इसीलिए की सुरा ओर सुन्दरी और देखो, द्रव्य की लोलुपता में अपनी मानवीयता को नष्ट कर रहे हैं।

वर्तमान का काल

तो इस प्रकार मैं कोई विचार देने नही आया हूँ केवल यह कि मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निर्णय देना चाहता हूँ क्या आधुनिक काल में तो वर्तमान का काल चल रहा है यह बड़ा विचित्र काल है। यह वाममार्ग का काल इसे कहता हूँ। जहां राजा भी सुरा में लगा हुआ है प्रजा भी लगी हुई है जहां देखो, नाना प्रकार के सम्प्रदायों के आंगन में प्रत्येक मानव देखो, अपने को स्वीकार कर रहा है। यह सम्प्रदायवाद ओर देखो, यह राष्ट्रीयवाद का इससे विनाश होता जा रहा है। मैंने कई कालों में वर्णन करते हुए कहा है कि यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो राजा के राष्ट्र के चाहिए कि राजा को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए और ब्रह्मवेत्ता हो करके राजा के राष्ट्र में यह नाना प्रकार की रूढ़ियां नही रहनी चाहिए।

तो राजा के राष्ट्र में यह नाना प्रकार की रूढ़ियां नही रहनी चाहिए। यह जो रूढ़ि है यह राष्ट्रवाद के लिए हानिप्रद कहलाती है, जैसे अमृतम् क्योंकि एक दूसरा रूढ़िवाद एक दूसरे को देखो, अपने में रक्त को बहाना चाहता है। जैसे देखो, ईश्वर के नाम परजो भिन्न भिन्न प्रकार की रूढ़ियां बन गई हैं और रूढ़ियां बन करके देखो, ब्रह्मे ब्रतं राजा को चाहिए की ब्रह्मवेत्ता बन करके और प्रत्येक आचार्यों का शास्त्रार्थ होना चाहिए। विचार विनिमय हो और जो मानव दर्शन पर जो स्थित हो जाए उसको स्वीकार कर लेनाचाहिए यह उसका धर्म है। आज का राष्ट्रवेत्ता कहता है कि हम धर्म निरपेक्ष बन गएं हैं। जब धर्म की अपेक्षा तुम करोगे तो राजा किस वस्तु के हो, क्या तुम द्रव्य और सुरापान के लिए राजा बने हो, परन्तु जब मैं यह उद्गीत गाता हूँ तो मेरा अन्तरात्मा बड़ा खिन्न हो जाता है।

मानव का धर्म

मैं यह कहता रहता हूँ कि धर्म मानव ने देखो, पृथ्वी के कणों में धर्म को स्वीकार कर लिया है। मानव को जो धर्म है वह मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। नेत्रों में धर्म रहता है और घ्राण में धर्म रहता है। तो विचार विनिमय जब करता है तोवहां भी धर्म रहता है यदि धर्म चला जाएगा तो मानव के जीवन का कोई अस्तित्व नही रहेगा। मैं यह कहता रहता हूँ कि धर्म, धर्म केवल देखो, वत पर्वतों में स्वीकारकर लिया है मानव ने राजा ने। अरे, उसकी अपेक्षा, धर्म की अपेक्षा करने वाला कोई राष्ट्र नही कहलाया जाता है वह केवल देखो, वह वाममार्ग कहलाता है जिसमें अपने स्वार्थपरता में देखो, मानव लगा हुआ है। अरे, स्वार्थ को त्याग करके धर्म मानवता को देखो, दर्शनों की दृष्टि से विचारना चाहिए। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल ये क्या राजा को चाहिए कि यहां देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियों हैं और रूढ़ियों में जो भी कृतियां हों उन्हें नष्ट कर देना चाहिए। धर्म मानवीयता एक स्थली पर विद्यमान हो करके अपनी वार्त्ताएं प्रगट की हैं परन्तु इसमें धर्मम ब्रह्मा इसमें धर्म ही नही हैं केवल मानवता है, वैदिकवाद है और वैदिकवाद और मानववाद का नाम ही धर्म माना गया है। आज का विचार अब मैं

अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा और केवल मेरा यह वाक रहता है कि द्रव्य का दुरूपयोग नही होना चाहिए। ओर देखो, अपने में धर्म औरमानवता को अपना करके इस संसार सागर से पार होने का प्रयास होना चाहिए। राजा को वाममार्गी, प्रजा को वाम मार्गी न बन करके वह केवल देखो, अपनी मानवता को अपनाताचला जाए। ओर यज्ञमान तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे ऐसी मेरी सदैव कामना बनी रहती है। द्रव्य का सदुपयोग जहां होता है वही गृह पवित्र होते हैं, द्रव्य की जहां हीनता आजाती है वही देखो, नरक बन जाता है। नारकिक गृह को न बनाओ आज तुम्हारा यह कर्तव्य है। इसके साथ आज का यह वाक मैं अपने वाक्यों को विराम दे रहा हूँ। समय मिलेगा तो चर्चाएं शेष प्रगट करेंगें।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपना विचार दिया। इनके विचारों में बड़ी एक विडम्ना रहती है क्या राष्ट्र वाममार्ग नही होना चाहिए। ओर राष्ट्र में मानवता होनी चाहिए। धर्म ओर विज्ञान होना चाहिए ऐसा इनका मन्तव्य है। इनके मन्तव्य सदैव नवीनता को प्राप्त होते रहें। आज का यह वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गतं आप्यां देवाः ओ३म् सर्वं गतम्माहं वाचन्नमाः ओ३म् सर्वं गतंम्भ्रिता आ याः अच्छा भगवन्!।

9. 920219-तप की मीमांसा

परमपिता परमात्मा अनन्तमयी

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमात्मा अनन्तमयी है और तपोमयी इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते हैं। और उसकी महती के ऊपर विचार विनिमय करते रहे हैं। क्योंकि उसकी अनन्तमयी जो महती है जो एक एक कण कण में व्याप रही है तो हम उस परमपिता परमात्मा को एक एक कण कण में दृष्टिपात करते रहें। क्योंकि हमारा जीवन, जिन कणों से हमारा जीवन का निर्माण हुआ है उस निर्माणवेत्ता की महती उस मानवीयतव में निहित रहती है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान में प्रायः रमण करता रहा है और चितन्त करता रहा है कि मैं ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से उस मानवीयतव परमपिता परमात्मा की कृति को जानना चाहता हूँ। तो यह परम्परागतों सेस मानव अपने में विचार विनिमय करता रहा है।

तप की विवेचना

आज का हमारा वेदमन्त्र तप की महिमा वर्णन कर रहा था क्योंकि हमारे वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के सूक्तों का वर्णन आता रहा है जैसे तपों में जाने वाला प्राणी वह तपों के सूक्तों के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करता है और इसी प्रकार विष्णु सूक्त है और ब्रह्म का निर्णय देने वाला ब्रह्म के ऊपर ब्रह्म सूक्तों का वर्णन करता है और इन्द्र के ऊपर विचार विनिमय करने वाला इन्द्र सूक्तों का वर्णन करता रहता है। अग्नि सूक्तों का भी वर्णन प्रायः वैदिक साहित्य में होता रहा है। बैटा मैं नाना प्रकार के सूक्तों में तो जाना नहीचाहता हूँ केवल आज तो मैं तप

की महिमा का वर्णन करने के लिए आया हूँ। कि तपों ब्रह्मणा व्रतम, वेद का मन्त्र कहता है कि मानव तू तपों में निष्ठ हो जा और तप में अपने को ले जा क्योंकि तपों वर्णासुतम मानो जब तप की महिमा का वर्णन आता है तो वहां उत्तर और प्रश्न भी आते हैं एक वेदमन्त्र में कहा तपो वर्णन बहु वर्णासुतम तपा वेद का मन्त्र कहता है कि तप क्या है? जब तप की महिमा का इतना विशाल वर्णन है, उसी वेदमन्त्र में बेटा! उसके उत्तर के रूप में कहता है तपाम् भूतम प्रव्हे अस्वति देवा वेद का मन्त्र कहता है कि पञ्च महाभूतों को जानना और पञ्च महाभूतों का उपयोग करन उसका नाम तप है। बड़ी विशालता का वर्णन करते हुए ऋषियों ने कहा कि पञ्च महाभूतों का वर्णन करना ही तप माना गया है। पञ्च महाभूतों में बेटा! अग्नि का चयन होता रहात है मैं वही आपोमयी ज्योति का चयन होता रहा है और वही वायुमयी गतिवान बनाने के लिए इसका चयन होता रहा है और पिण्डं भूतं वर्णन वरणीय निर्माण और पिण्डों का निर्माण करने वाला जो गुरूतव मूल रूप में मानो उसके ऊपर जो विचार विनिमय करता है पञ्च महाभूतों की प्रवृत्तियों को जान करके तपों में प्रवेश हो जाता है। तो बेटा! देखो, तप की विवेचना करते हुए आदि आचार्यों ने यह कहा है कि हमारी इन्द्रियों का जो चयन होता रहा है, इन्द्रियों में जो एक मानो वियायवासम कृति नाना प्रकार के अवरूद्ध माने गएं हैं, उनको जानने का नाम ही तप है।

अन्न को पवित्र बनाना ही तप

मेरे प्यारे! देखो, तप में ब्रह्म अन्नाम् भूतम् आगे वेद का ऋषि कहता है कि अन्न को पवित्र बनाना ही तप है क्योंकि हमारे यहां मन की जो उत्पति होती है मन की जो तरंगों का जो प्रादुर्भाव होता है तो वह मन ब्रह्मा देखो, अन्न के द्वारा होता है और जब अन्न पवित्र होता है तो मन की तरंगें पवित्र होती हैं और मन की तरंगें ही मानो देखो, तप में प्रविष्ट हो जाती हैं वह प्राण को सन्देश देता है अपने तप का और प्राण का उसको गति कराता है। तो वही मुनिवरों! वह तपोमयी तपं ब्रह्मा वस्तुते देवाः आज का वेदपाठ में तपों की महिमा का वर्णन आ रहा था।

त्रेता के काल में रूढ़िवाद

मेरे प्यारे महानन्द जी ने इससे पूर्व काल में मुझे एक वाक प्रगट करते हुए कहा था क्या राष्ट्रदम ब्रह्मे राष्ट्र की चर्चा, विवेचना, राष्ट्र की विवेचना करते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्र में रिढ़िवाद नही रहना चाहिए। इन्होंने रूढ़ियों का वर्णन किया। मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन किया था क्या रूढ़िवाद मानो त्रेता के काल में भी प्रायः आता रहा है। त्रेता के काल में देखो, लंका में नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हुआ था और वह रूढ़ियों का प्रादुर्भाव क्योंकि राजा रावण, राक्षस सभी सम्प्रदायों का स्वामीतव था और एक देवी सम्प्रदाय थी जिए सम्प्रदायों का मानो देखो, वह उनका पुत्र मेघनाथ उसका संचालक था और यज्ञों की पद्धतियों में मानो स्वार्थवाद की प्रतिभा का जन्म हुआ। तो वह नाना प्रकार की रूढ़ियों में उनका राष्ट्र परिवर्तित हो गया। यह राक्षस भी एक रूढ़ि कहलाती है।

मानव को तप में रहना चाहिए

देखो, रूढ़ि का अभिप्राय यह है कि जो ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियां बन जाती हैं उन रूढ़ियों से राष्ट्र और समाज में मानवता का ह्रास हुआ करता है और जब मानवता का ह्रास होता है तो रक्त पिपासा में मानव परणित हो जाता है। तो यह सम्प्रदाय इसीलिए समाप्त होने चाहिए। अब यह समाप्त कैसे होते हैं? कल मेरे पुत्र ने मुझे यह वर्णन कराया परन्तु आज मुझे एक वेदमन्त्र स्मरण आ रहा है। वह वेदमन्त्र यह कहता है कि तपम् ब्रह्मे राजन प्रव्हा तपाः मेरे प्यारे! देखो, राज जो बनता है वह तपा हुआ होना चाहिए और वह तपा हुआ जब राजा होता है, इन्द्रियों पर जय करने वाला और वह ब्रह्मज्ञान की पवित्र उड़ाने उड़ता है और देखो, नाना प्रकार का मानो तर्कवाद से और गम्भीरता और ज्ञानवाद से जो अपना निर्णय हो जाता है तो उस निर्णय के लिए जब ध्रुव हो जाता है, अटल, मानो वह निश्चयात्मक हो जाता है उसका अपनाना चाहिए। तो विचार विनिमय हमारा यह है क्या राजा को अपना चाहिए क्योंकि बिना तप के राष्ट्र कदापि ऊँचा नही बनता। बिना तप के देखो, न गृह पवित्र बनता है मेरी पुत्री बाल्यकाल में अपने ब्रह्मचर्य

से तपायमान होती है और तपने के पश्चात वही मानो देखो, जब गृह में प्रवेश होती है तो ममतामयी को धारण करती है। यदि मेरी पुत्री तपेगी नही तो वह ममतामयी बनना उसके लिए असम्भव हो जाता है तो इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा, वेद का मन्त्र कहता है तपम् ब्रह्मा तपो देवत्वाम् देवा ब्रह्मा तपा मानव को तप में रहना चाहिए।

राष्ट्र का अधिकारी कौन

मुनिवरों! देखो, जब तक में रजोगुण छाया हुआ रहता है तो तप नही हो पाता। मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहा है जब राम भयंकर वनों में अम्ब्रहे बेटा! देखो, लंका को विजय करके अयोध्या में जब उनका प्रवेश हुआ तो अयोध्या में जब प्रवेश हुआ तो बेटज्ञ देखो, ब उनके स्वगतार्थ मानो उनका स्वागत किया गया। भरत सबसे अग्रणीय थे, स्वागतार्थ करने के लिए। तो मुनिवरों! देखो, अगले दिवस एक उनकी सभा हुई। वह सभा महाराजा शिव की अध्यक्षता में हुई और महाराजा शिव और देखो, उसमें नाना ऋषि भी विद्यमान थे जैसे महर्षि विभाण्डक, महर्षि विश्वामित्र, और महर्षि वशिष्ठ और माता अरूणधति और मुनिवरों! देखो, पारेत्वर ऋषि और भी नाना ऋषिवर विद्यमान थे। जिन ऋषियों की मध्यस्थता में और राजा शिव की अध्यक्षता में बेटा! वह सभा का प्रारम्भ हुआ। भरत ने बेटा! नतमस्तिष्क हो करके यह कहा कि मैं इस राष्ट्र को अपनाना नही चाहता हूँ। यह मेरे, मानो देखो, राम का अधिकार है। मैं इसकों मैंने बहुत समय इसकी सेवा की है अब मैं सेवा का पात्र नही रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह वाक कहा तो राम ने उपस्थित हो करके यह कहा कि मैं अभी राष्ट्र का अधिकारी नही हूँ उन्होंने कहा क्यों? क्या अमृतम वनाम् भुअसुतम राजतप्रव्हे देवत्वाम् आयामत्व राम ने यह कहा कि वेद का मन्त्र उच्चारण करे हुए क्या मेरा जो अन्तरात्मा है अथ्ववा मेरे अन्तर्हृदय में रजोगुण, तमोगुण, छाया हुआ हैं क्योंकि मैंने अभी अभी लंका से, लंका को विजय किया है और विजय करने से मेरे अन्तर्हृदय में रजोगुण, तमोगुण, छाया हुआ है, सतोगुण की मात्रा बड़ी सूक्ष्म है इसीलिए और जब तक

राजा दूसरों के अधिकार का क्या अपने कर्तव्य का पालन करता है तो राजा के हृदय में सतोगुण प्रधान होनाचाहिए। मेरे में यह सतोगुण प्रधानता न रहने के कारण मैं राष्ट्र का अधिकारी नही हूँ। हे भरत! इस राष्ट्र का अधिकार तुम प्राप्त करो मानो तुम इसकी सेवा करते रहो। मैं तपम् ब्रह्मे तपाम् दिव्यां भूतम ब्रह्मे वर्णा, मैं तप करूंगा तो मानो देखो, मैं इसका अधिकारी बन सकता हूँ। इसीलिए मैं तप में तपोनिष्ठ होना चाहता हूँ।

महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज द्वारा तप की विवेचना

जब मुनिवरों! देखो, राम ने यह कहा कि तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज उपस्थित हुए और वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा कि राम का शब्द तो वास्तव में बड़ा प्रिय है। क्या बिना तप के राष्ट्र कदापि भी ऊँचा नही बनता है और राजा को तप करना चाहिए क्योंकि उसका मन, मस्तिष्क जब ही ऊँचा बनता है और मन, मस्तिष्क ऊँचा तपों से बनता है। जबकि उसका आहार और व्यवहार पवित्र बन जाता है और रूढ़िवाद से वह उपरामता को प्राप्त हो जाता है। क्योंकि वास्तव में बिना रूढ़ि के पालन नही हुआ करता है तो वह रूढ़ि तो सामान्य होती है। परन्तु रूढ़िवाद का विनाश करती है तो ईश्वर के नाम पर रूढ़ियां बना करती हैं वह रूढ़ि नही रहनी चाहिए। वह वास्तव में देखो, रूढ़िवाद अपने जीवन में भी नही रढ़ि चाहिए। क्योंकि बना रूढ़ि के माता अपने पुत्र का पालन नही कर सकती जब तक उसे अपनात्व नही होगा मानो देखो, वह पालना में अधूरी ही सिद्ध होती है। इसीलिए मैंने यह पूर्व काल में कहा क्या अमृतम ब्र्व्हे ऋता मानो देखो, वह अपने में निष्ठावान हो करके तपों में मानो देखो, उसका आहार, व्यवहार और मन पवित्र होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, जब वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा क्या विद्यालयों में जैसे आचार्य मानो देखो, अपने तपों में निष्ठ हो करके ब्रह्मचारियों को ऊँचा बनाता है मानो ब्रह्मचारियों को देखो, वह पवित्र शिक्षा दे करके कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम जब ऊँचे बन सकते हो जब कि तुम्हारी इन्द्रियां मृत्यु से पार हो जाती हैं मेरे प्यारे! देखो, मृत्यु का अर्थ ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा है क्या

आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी! जब तक तुम्हारी इन्द्रियां में अज्ञान है, तुम्हारे मन मस्तिष्क में अज्ञान है जब तक मानो तुम मृत्यु से पार नही हो सकते और बिना मृत्यु से पार हुए तुम्हारा जीवन सार्थक नही बन सकेगा। इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में यह वर्णन करते हुए कहा था कि आचार्य जब देखो, सबसे प्रथम ब्रह्मचारियों को कहता है क्या तुम मृत्यु को लाङ्घजाओ और मृत्यु से वह प्राणी लांघता है तो इन्द्रियों के विषया को जान करे उनका साकल्य बनाना जानता है। मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार ऋषि ने वर्णन करते हुए, जब वशिष्ठ ने यह कहा, तो राजा देखो, उन्होंने कहा कि राम यथार्थ कहते हैं कि बिना तप के यह अपनी अयोध्या को ऊँचा नही बना सकते।

मुझे स्मरण आता रहता है इस अयोध्या का निर्माण मानो देखो, स्वायम्ीु मनु ने किया था किसी काल में और अयोध्या में जितने राजा हुए हैं वह सब तपों निष्ठ हुए हैं। मानो देखो, राम के जो महापिता महाराजा दिलीप थे वह बारह वर्ष तक एक गऊ और धेनु की सेवा करते करते बारह वर्ष का उन्होंने तप किया था राष्ट्र भी शून्य हो जाता है। राजा के राष्ट्र में प्रत्येक मानव अपने कर्तव्यवाद में रत्त हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होने यह कहा अमृतम देखो, तपश्चम ब्रव्हा कीर्ति वेदमन्त्र कहता है तपों में रहना चाहिए और तपो में परितण हाने वालाराजा ही मानोदेखो, प्रजा को ऊँचा बना सकता है, वह रूढ़िवाद को नही पनपने देगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने बहुत पुरातन काल में यह वाक कहते हुए कहा तो राम अमृतम् राम बड़े प्रसन्न हुआ और उन्होंने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया। उन्होंने कहा प्रभु! आपको धन्य है मैं आपकी आज्ञा का सदैव पालन करता रहूँ मेरी ऐसी मानो मनो इच्छा रहती है भगवन! तो मेरे प्यारे! देखो, अमृतम देखो, जब वह वशिष्ठ यह वाक उच्चारण करके अपनी स्थली पर विद्यमान हो गये।

महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज द्वारा तप का वर्णन

इतने में महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उपस्थित हुए और विभाण्डक मुनि ने कहा क्या ये राम ने जो यह शब्द कहा कि मेरे में तमोगुण, और रजोगुण छाया हुआ है

क्योंकि राजा के हृदय मे यदि तमोगुण, रजोगुण, दोनों छाए हुए होंगें तो वह राष्ट्र का अधिकारी नही बनना चाहिए। मानो क्योंकि रजोगुण, तमोगुण, उसे सबसे प्रथम उकसो शोधन करने के लिए अपने आहार को पवित्र बनाना है और आहार जब तब पवित्र नही बनेगा तब तक राजा का मन मस्तिष्क ऊँचा नही बन पाएगा मानो देखो, अपने राष्ट्र में वह अपने धर्म और मानवता को नही अपना सकता। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि इसी अयोध्या में महाराजा अश्वपति रहे हैं और महाराजा अश्वपति मानो देखो, प्रातःकालीन देखो, तारामण्डलों की छाया में अपने आसन को त्याग देते थे और त्याग करके वह अपने में कला कौशल मानो देखो, कुछ कृषि का उद्गम करते और कृषि का उद्गम करके उसमें जो अन्न उत्पन्न होता उसको वह पार करते थे। कामधेनु गऊ के दुग्ध का पान करते हुए मानो परमात्मा का चिन्तन करते कुछ शारीरिक और बौद्धिक दोनों प्रकार का मानो देखो, वह क्रियाकलाप करते। जब वह राष्ट्र का क्रियाकलाप करते थे, राष्ट्र के कर्तव्य का पालन करते थे राजा अश्वपति इसी प्रकार यह अयोध्या वैसी ही नही हैं परन्तु देखो, इसमें जो भी राजा अश्वपति हुआ वह स्वयं देखो, मन मस्तिष्क का निर्माण अन्न से होता है और जब राजा दूसरों के अन्न को ग्रहण करने वाला होगा या मेरी पुत्रियां के श्रृङ्गार को हनन करने वाला राजा होगा वह राष्ट्र को ऊँचा नही बन सकता। मेरे पुत्रों! देखो, वह महर्षि विभाण्डक मुनि ने यह वाक प्रगट किया तो विभाण्डक ने कहा कि हम सदैव यह याचना करते रहते हैं प्रभु से सुमति दे करके और मन मस्तिष्क सदैव सर्वत्र प्राणियों का पवित्र होना चाहिए। मन मस्तिष्क से देखो, मानव का जीवन प्राण की आभा में रत्त होता रहता है मानो देखो, इस प्रकार का वाक उच्चारण करके विभाण्डक मुनि महाराज ने कहा कि राजा को तप अवश्य करना चाहिए और तप है इन्द्रियों के ऊपर विजय करने वाला ही मानो तपोनिष्ठ कहलाता है। इतना उच्चारण करके बेटा! वह भी अपनी स्थली में मौन हो गएं और मौन हो जाने के पश्चात राजग प्रमाण ब्रहे बेटा! देखो, राम ने यह उच्चारण किया था कि मैंने लंका को विजय किया है और लंका विजय करने से मेरे हृदय

में तमोगुण, रजोगुण, छाया रहा मानो देखो, उससे मैं राज्य का अधिकारी नही हूँ यह वाक उच्चारण उन्होंने पूर्व किया।

ब्रह्मवेत्ता ओ३म् की विचित्र देन

महाराजा विश्वामित्र उपस्थित हुए और महाराजा विश्वामित्र ने कहा क्या ब्रहे भगवन! हे शिवम् ब्रह्मा हे शिव तुम मानो देखो, इस सभा के सभापतित्व हो परन्तु मैं अब क्षमा चाहता हुआ एक वाक उच्चारण करना चाहता हूँ क्या मैंने अपने जीवन में तपों की महिमा का वर्णन आज मानो द्वितीय मैंने श्रवण किया है। पूर्व काल में मैं महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से मैं श्रवण करता रहा हूँ परन्तु देखो, हमारे यहां ब्रह्मवेत्ताओं की बड़ी विचित्र देन रही है क्या वह ब्रह्म निष्ठ बन करके ब्रह्म के द्वार पर पंहुचा देते हैं ओर उन्होंने यह कहा कि मैं जब तक राजा रहा और मैंने मानो देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज के यहां मैं क्रोधित हुआ एक कामधेनु गऊ को अपनाने के लिए मैंने देखो, छंदों सेहित गायत्राणी छन्दों का पठन पाठन किया। भयंकर वन में चला गया। जब तक मेरे इस शरीर में देखो, राष्ट्र रक्त रहा है दूसरों के मनो देखो, आश्रित होने वाला राजा ओर वह अमृतम देखो, अन्न को पान करता रहा ओर देखो, मन मस्तिष्क को दूषित बना देता है तो मैं मानो देखो, तप करने लगा, वायु का सेवन किया भंयकर वनों में, देखो, मैंने वनस्पतियों का अध्ययन किया ओर अध्ययन करने करने के पश्चात मानो देखो, उसको आहार में लाता रहा। अभिमान बन जाने से जब मैंने वशिष्ठ मुनि महाराज से अभिमान के कारण मानो देखो, मैंने अम्रते विद्यार्थी को भी नष्ट किया ओर उनको मृत्यु दण्ड देने के लिए जब तत्पर हुआ तो माता अरूणधति ओर वशिष्ठ मुनि महाराज दोनों ने यह कहा कि यह तपोपम् ब्रह्मा तपय ब्रहे कृतं वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहे थे ओर मैं मृत्यु दण्ड देने के लिए तत्पर था परन्तु उस समय अरूणधति ने कहा प्रभु! आज तो चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त है प्रभु यह कैसा अनूठा प्रकाश है तो उस समय वशिष्ठ ने यह कहा क्या हे देवी! यह जो विश्वामित्र है यह बड़ा तपस्वी है परन्त देखो, इसमें अभिमान होने के कारण इसका मानो देखो, यह तप अधूरेपन

में जा रहा है तो उस समय ब्रह्मणां प्रभु मैंने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया, क्या मैं इनको मृत्यु दण्ड देने के लिए तत्पर हूँ इनका अन्तरात्मा क्या उद्गीत गारहा है तो विचार विनिमय क्या महर्षि विश्वामित्र ने कहा कि इसीलिए राजा वह होना चाहिए जिसके द्वारा तप में अभिमान न रहे अमृतम और तप की पिपासा बनी रहे परन्तु ब्रह्म निष्ठ हो करके अपने यहां निर्णायतमक बन सकता है तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार मनम् ब्रहे अभिमान के लिए उन्होंने बहुत अदभुत किया।

विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वह सभा मुझे स्मरण है उस सभा में नाना ब्रह्मवेत्ता हैं, नाना देखो, राष्ट्रवेत्ता हैं, महाराज शिव राष्ट्रवेत्ता थे और वह मानो देखो, अनुशासन में अपने जीवन को धारण करने वाले मेरे प्यारे! देखो, वह उनकी अध्यक्षता में वह समाज एकत्रित हुआ। मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि अमृताम् ब्रह्मणे देखो, उच्चारण करके वह बोले देखो, अभिमान राजा मैं नही होना चाहिए और देखो, राजा के यहां देखो, अभिमान होने से ही राष्ट्रीयता में देखो, अधूरापन आ जाता है, उसका अभिमान ब्रह्मणे देखो, मृत्यु में ले जाता है यह उच्चारण करके बेटा! वह अपनी स्थली पर विद्यमान हो गये।

ऋण से अवऋण

देखो, महात्मा भरत महाराजा भरत उपस्थित हुए और भरत ने यह कहा कि तुम ऋषि मुनि अपने अपने विचार दे रहे हो यह सब विचार तुम्हारे शरोधार्य हैं परन्तु देखो, मुझे बहुत समय हो गया है मैं प्रजा की क्या, मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ। मेरी इच्छा यह है कि मैं इस कर्तव्य से अवऋण हो जाऊं क्योंकि राजा के द्वार पर देखो, राजा के यहां कई प्रकार के ऋण मानो देखो, अपने पूर्वजों के होते हैं जब हमारे पिता, महातपिता राजा हुए हैं अयोध्या में मानो देखो, वह हमारे ऊपर ऋण इस रूप में है क्या हम मानो उनके पदचिन्हों पर चल करके तपों में देखो, यह अयोध्या को नही बना सकते और प्रजा को कर्तव्यवाद में नही ला सकते तो हमारा राष्ट्र हमारे पूर्वजों का ऋण देखो, ज्यों का त्यों बना रहेगा और यदि प्रजा में मानो सुगन्ध आने लगेगी विचारों की सुगन्धि, उनके क्रियाकलाप

में सुगन्धि ओर राष्ट्रवादियों में जब सुगन्धि आने लगेगी तो मानो देखो, वह सुगन्धि हमारे पूर्वज और देवताओं के ऋण से अवऋण हो जाएंगें। जैसे यज्ञोपवीत को धारण करने वाले के ऊपर तीन प्रकार के ऋण होते हैं मानो देखो, सबसे प्रथम उसके द्वारा ऋषि ऋण होता है ओर देखो, सबसे पूर्व देखो, मातृ ऋण होता है और देखो, द्वितीय में ऋषि ऋण होता है ओर तृतीय में देव ऋण कहा जाता है मानो देखो, सबसे प्रथम जो माता पिता हैं जिसके गर्भस्थल में हमारा निर्माण हुआ है ओर निर्माणवेत्ता ने निर्माण किया माता के विचारों को ओर माता के कर्तव्य पारायणता की तरंगों से देखो, हमारे शरीर का निर्माण होता है ओर वह निर्माण मानो देखो, उन पूर्वजों की मातृ शक्ति की आज्ञा का हमें पालन करना यह हमारा मानो देखो, पितर ऋण कहलाता है। जिसे मातृ ऋण कहते हैं ओर पितरों ब्रह्मणे देखो, पितर, हमारे जितने भी पितर हैं वह माता, पिता महापिता सब पितर होते हैं उनके क्रियाकलापों के अनुसार जीवन को हमें व्यतीत करना चाहिए ओर द्वितीय जो ऋण है वह हमारे यहां देखो, देवाम् भूतम् ब्रह्मा आचार्य ऋण देखो, जिसको ऋषि ऋण कहते हैं ऋषि कहते हैं तपों को क्योंकि मानव को तपना चाहिए। क्योंकि तपस्या में ही परणित होने वाला देखो, ऋषि ऋण से अवऋण हो सकता है, यदि वह तपेगा नही तो ऋषि ऋण से अवऋण नही होगा। ऋषि कहते हैं उसको जो तपा हुआ होता है ओर जब वह तप जाता है तो मानो देखो, वह ऋषि ऋण से अवऋण हो जाता है। तपता जब है जब वह देखो, प्रत्येक वस्तु के ऊपर विचार विनिमय करता है, अध्ययन करता है, प्रत्येक रूप में मानो देखो, अपने संस्कारों को जागरूक करता है ओर अध्ययन करता हुआ मानो देखो, वह स्वाध्याय करता रहे ओर स्वाध्याय करता हुआ देखो, ऋषि के ऋण से अवऋण हो जाता है ओर ऋषियों के ऋण से जब अवऋण हो जाता है वह ब्रह्म ज्ञान की चर्चा करता है कहीं मानो लौकिक व्यवहार की चर्चा करता है, कहीं विज्ञान की चर्चा करता है, कहीं अणु ओर परमाणु में प्रवेश हो जाता है, कहीं लोक लोकान्तरों की माला बना लेता है। कहीं मानो देखो, अपने जीवन को नाना लोक लोकान्तरों का यात्री बना लेता

है।

तो विचार आता है कि वह मानव बेटा! देखो, वह इस देवम् ब्रह्मा देवतो वह ऋषि ऋण से अवऋण हो जाता है तो ऋषि ऋण से, अवऋण से होने वाले जय कहलाता है। बेटा! जो इन्द्रियों का, मन का, सब का साकल्य बना करके प्राण में हूत करता है और प्राण में हूत करता हुआ मानो देखो, अपान और व्यान देखो, प्राण में रत्त हो करके अपने में मानो देखो, परमात्मा का दिग्दर्शन करता है। मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि ऋण से अवऋण हो जाता ओर तृतीय देखो, वह पितर ऋण और देवम् ब्रह्मा देव ऋण वह कहलाने वाला है जो मेरे प्यारे देखो, जो याग में परणित हो जाता है। नाना प्रकार का साकल्य बनाता है और वह देवताओं का ऋणी कहलाता है जो देवता उसके कर्तव्य से, उसके भोज्य से, उसके अग्न्याधान से मानो यदि तृप्त नही होते तो देवता मुनिवरों! देखो, अतृप्त रहते हैं। हमारा शरीर भी मानो देवताओं के निर्माण से निर्माणित हो रहा है ओर वही देव ऋण है बेटा! यज्ञमान जब अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के साकल्य को एकत्रित करता है और एकत्रित करके उसको देवनाम् मुखम् ब्रह्मा अग्ने वृत देवत्वाम् यह अग्नि देवताओं का मुख होने से मेरे प्यारे! देखो, उसमें हूत करता है ओर हूत करके वायुमण्डल को पवित्र बना देता है ओर जब वायुमण्डल उसके सुविचारों से ओर साकल्य से पवित्र बन जाता है तो गृह में बेटा! सुगन्ध, देखो, अनूठी सुगन्धि उत्पन्न हो जाती है ओर उसी सुगन्धि के कारण वह देवताओं के ऋण से अवऋण होता है। वही देवता देखो, हमारे शरीर में क्रियाकलाप कर रहे हैं मानो देखो, पञ्च महाभूतों के रूप में वह हमारे देवता है। ओर देवता जब देखो, सुगन्धि से तृप्त हो जाते हैं तो मानव बेटा! रूग्ण में परणित नही होता वह देखो, अवरणीय बन जाता है, रूग्ण से रहित हो जाता है उसे मृत्यु उसके निकट नही आती। तो विचार आता है बेटा! देखो, मृत्यु से पार होने के लिए तो मुनिवरों! देखो, यह तीनों प्रकार के ऋणों से अवऋण हो करके बेटा! एक ब्रह्म ग्रन्थि लग जाती है यज्ञोपवित कहते ही उसे हैं जहां देखो, तीनों ऋणों से अवऋण हो करके देखो, एक ग्रन्थि लग जाती है उसे

ब्रह्म ग्रन्थि कहते हैं। बेटा! ब्रह्म ग्रन्थि उसे कहते हैं जब तीनों ऋणों से अवऋण हो करे वह ग्रन्थि स्पष्टीकरण में परणित हो करके बेटा! देखो, ब्रह्म में जब लीन हो जाती है तो बेटा! मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त हो जाती है।

तो विचार बेटा! यह कहते हैं बेटा! विचार विनिमय करने वालों ने यह कहा कि इन ऋणों से अवऋण होने वाला जो राजा के राष्ट्र में जो समाज है या राजा है तो मेरे प्यारे! देखो, वह राज अमृतम् ब्रह्मे व्रतम् देखो, राजा अपने राष्ट्र में सुगन्धि को स्थापित करेगा। महाराजा भरत ने कहा कि मैं यह चाहता हूँ सदैव कि मेरी प्रजा में, हमारे अयोध्या में रहने वाली जो प्रजा है प्रत्येक गृह में देखो, कोई भी मानव ऋणों से अवऋण होता रहे, कोई भी ऋण न रहे। तो मानव समाज में बेटा! देखो, ऋणी बनना यह अप्रति अभिशाप माना गया है। तो इसीलिए देखो, हम देवम् मात्रम् ब्रह्मा देखो, मातृ आज्ञा और ऋषि आज्ञा ओर मुनिवरों! देखो, देवता आज्ञा यह तीन प्रकार के हमारे ऊपर ऋण कहलाते हैं। इन ऋणों से अवऋण होने के लिए राष्ट्र का निर्माण होता है ओर राष्ट्र की परम्परा भी जब ही बनती है तो महात्मा भरत ने कहा प्रभु! मैं यह चाहता हूँ क्या मैं इससे अवऋण हो करके मैं अपने ब्रह्म ग्रन्थि बना करके ब्रह्म को प्राप्त होना चाहता हूँ। मैं इस राष्ट्र को नही चाहता। मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र उनके लिए मानो एक अरिष्ट कहलाता है मानो एक खिलवाड़ बना हुआ है। राम कहता है कि मैं राष्ट्र को नही चाहता भरत कहता है कि मैं राष्ट्र को नही चाहता यह कैसा मानो देखो, उनका खिलवाड़ है? राष्ट्र का जब विचार आता रहता है जब राष्ट्र खिलवाड़ बन जाता है राष्ट्र अपना करके, न हो करके कर्तव्य का पालन रह जाता है खिलवाड़ के रूप में तो वह राष्ट्र अपवित्र बनता रहता है। तो आज का विचार केवल यह बेटा! देखो, रामम् ब्रहे व्रतम जब यह भरत ने कहा तो राम बड़े प्रसन्न हुए और राम ने कहा कि भई! भरत मैं तपस्या करने अवश्य जाऊंगा।

भगवान राम द्वारा तप की व्याख्या

मेरे प्यारे! देखो, महाराजा शिव ने अन्त में यह कहा क्या भई! जब राम की इच्छा

तप करने की है तो भयंकर वन में चले जाओ, तप करो, और तप करके, बारह वर्ष का तप करके तुम राष्ट्र को अपनाओ। मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या मुनिवरों! देखो, वह आज्ञा पा करके अन्त में यह कहा क्या तपम ब्रह्मे राम से यह प्रश्न किया कि तप कहते किसे हैं, जिस तप के लिए तुम पुकार रहे हो, उन्होंने कहा कि तप कहते है। अपनी इन्द्रियों को तपाना और जो हमारे अन्तर्हृदय में जो दूषित संस्कारों का जन्म हो गया है उन संस्कारों को, दूषित संस्कारों को नष्ट करना तप और स्वाध्याय के द्वारा संस्कारों ओर इन्द्रियों पर जय करने के द्वारा हम मानो देखो, दूषित संस्कारों को नष्ट कर दें और सुन्दर संस्कारों को जन्म देने का नाम तप कहा जाता है। मैं तप करने के लिए इसीलिए जा रहा हूँ अपने अन्नाद से और व्यवहारों से तपम् ब्रहे मैं अपने को ऊँचा बनाना चाहता हूँ मेरे प्यारे! देखो, राम ने जब यह कहा तो महाराजा शिव ने कहा यथार्थ, कहां जाओगे तप करने के के लिए? राम ने कहा कि वहां जाऊंगा जहां देखो, प्रभु के राष्ट्र से तो मैं दूरी नही जा सकता परन्तु देखो, जहां, जहां वायु देखो, पवित्र मिलेगी, जहां अग्नि पवित्र मिलेगी, जहां मानो देखो, मैं अपने अन्तःकरण को ऊँचा बना सकूं। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह वाक कह करके वह सभा विसर्जन हो गई ओर विसर्जन होने के अगले दिवस बेटा! देखो, राम तप करने चले गये।

तो मुनिवरों! देखो, तप की महिमा का गुणगान गाते हुए तपम हृदयानी गच्छतम तपे वर्णा असतुति देवाः मेरे प्यारे! देखो, तप करना चाहिए क्योंकि हमारे यहां वैदिक साहित्य में तप की बड़ी महिमा का वर्णन आता है देखो, जब महात्मा जन साधक बन करे निर्जले में देखो, जब अपने मन ओर प्राण का, दोनों का सहयोग करने लगते हैं, दोनो का मिलान करने लगते हैं, तो उनका आत्मा पवित्र बनने लगता है। वायु का सेवन कर करके बेटा! ऋषि मुनियों ने तप किए हैं। और तप के ही कारण मुनिवरों! देखो, वह ऋषि कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, यदि तप नही होगा तो जीवन नही होगा ओर जीवन नही होगा तो मुनिवरों! देखो, हमारी मृत्यु ओर मृत्यु को प्राप्त होते रहेंगें। इसीलिए मानव को मृत्युञ्जय बनना चाहिए। और

ब्रह्म की ओर

मृत्युञ्जय वह बनता है जो तपों में रहता है जिसकी प्रत्येक इन्द्रियां बेटा! तप में ही निहित रहती हैं, ब्रह्मचर्य से सजातीय रहती हैं और ब्रह्मचर्य का मनका देखो, ब्रह्मचर्य का देखो, श्वांस का मनका बना करके जो ब्रह्म सूत्र में पिरोना जानता है वह माला जानता है मेरे प्यारे! देखो, उस माला को हमें धारण करना चाहिए। विचारवेत्ता कहते हैं कि प्रत्येक श्वांस का अरे, मनका बनाओ और मनके को ब्रह्म सूत्र में पिरो करके माला बना दो जैसे ब्रह्माण्ड की, लोकों की माला बनी है, जिसकी चचांएं बेटा! मैं कल प्रगट करूंगा।

आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह तपम् ब्रह्मे तपाम देवत्वाम् तपा प्रत्येक मानव को तपों में रहना चाहिए क्योंकि तप से मानव का जीवन पवित्र होता है यह मानो देखो, सूर्य तपता है तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बनती है चन्द्रमा तपता है तो मानो देखो, रात्रि को अन्धकार को अपने गर्भ में धारण कर लेता है इसीलिए प्रत्येक मानव को तपों में रहना चाहिए। तो आज का विचार क्या हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम मानो अपनी इन्द्रियों को जय बनाएं मृत्यु से पार होने का प्रयास करें। देवतव को धारण करते हुए सागरसे पार हों। कल समय मिलगा तो बेटा! मैं शेष चर्चाएं कल पंगट करूंगा आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मानाः गायन्त्वाः ओ३म् देवम् आप्याम् गर्तस्वाः वायाम् अच्छा भगवन्!।

10.920228-ब्रह्म याग । ब्रह्म की ओर

परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणागान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं, और याग उसका आयतन उसका गृह उसका सदन है। और वह प्रायः उसी में वास कर रहे हैं, तो इसीलिए परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन करते रहते हैं।

सर्वत्र जगत एक यज्ञशाला

वास्तव में तो यह जितना भी यह जगत है, यह सर्वत्र एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में दृष्टिपात आता है, जैसे मानो ब्रह्माण्ड की प्रतिभा और पिण्ड के मार्ग से हो करके वह गमन करती रहती है। हमारे यहां वर्णास्तुप्रव्हा वेद की एक आख्यिका यह वर्णन कर रही है। क्या भी कोई भी वस्तु हो पिण्ड को निर्माणित करती हुई ब्रह्माण्ड की रचना में मानो सहायक बनती है, तो हमारा यह मानवीय यज्ञशाला है, पिण्ड है, इसमें कहीं सप्त होताओं के द्वारा याग का चलन हो रहा है। कहीं ग्यारह होताओं के द्वारा चयन हो रहा है, तो यह जो हमारा मानव शरीर है। यह पिण्ड रूप में माना गया है। परन्तु इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है, जिसकी प्रायः हम कल्पना करते रहते हैं, यह भी एक यज्ञोमयी स्वरूप माना गया हैं। परमात्मा का जगत यह इतना अनूठा है। जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया, तो वह परमात्मा ब्रह्म रूप बन गया, और वह परमात्मा ब्रह्म रूप बन करके संसार का नियमन कर रहा है, और आत्मा उस समय यज्ञमान के रूप में निहित रहता है, और देखो, अग्नि देवा मुखा यह जो देवताओं का यह जो मुख है, यही है, अग्नि सूक्ष्म बना देती है।

अध्वर्यु

यह अध्वर्यु अमृत कहलाता है। प्राणों के द्वारा गान गाया जाता है, तो वायु मानो गान गाने वाली उद्गाता कही जाती है, और मुनिवरों! देखो, जलं ब्रह्मा अमृतां यह अमृत जल है। जो मानो देखो, तरलतव हो करके मानव के श्रोत्रों में घ्राण में अथवा नेत्रों में यह अपने में समाहित होता रहा है।

तो विचार आता है, बेटा! यह अमृतं ब्रह्मा प्राणा यह प्राणों के ब्रहे वृतं देखो, प्राणों के संरक्षण में रहने वाला यह यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। तो विचार आता है कि अन्तरिक्ष में सब अवृत हो जाते हैं, अथवा लय हो जाते हैं, जैसे मुनिवरों! देखो, यह चारों प्रकार की सृष्टि का मैंने तुम्हें वर्णन किया और यह चारों प्रकार की सृष्टि अपने अपने स्वरूप में रमण करती रही है। और यह एक दूसरे मे सहायक बनी हुई है। लोक लोकान्तरों का वर्णन करते हुए, वेद का मन्त्र ये कहता है कि एक दूसरे में कटिबद्ध होने वाला है, और ये माला के सदृश्य जो जगत है, यह बड़ा अनूठा है इसके ऊपर मानव जब विचार विनिमय करने लगता है। तो बहुत दूरी चला जाता है। तो आओ, मुनिवरों! देखो, हमारे ऋषि मुनियों के बड़े विचित्र एक देन रही है क्या वह ध्रुवा से ऊर्ध्वा में, और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में अपनी उड़ाने उड़ते रहे हैं। आज बेटा! संक्षिप्त अपना परिचय, अपने विचार देने के लिए आया हूँ, कि वेद की आख्यिका हमें किस मार्ग के लिए प्रेरित करती रही है। मेरे प्यारे! देखो, इससे पूर्व काल में, मैं देखो, ब्रह्मयाग की चर्चा कर रहा था। आज भी मै तुम्हें ब्रह्मयाग में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ब्रह्मवेत्ता अपनी अपनी पक्तियां लगा करके विद्यमान है, और वह अपने अपने विचारों को व्यक्त कर रहे हैं, मानो ब्रह्मवादी अपना ब्रह्म का बखान कर रहे हैं, आत्मवेत्ता अपने आत्मा का बखान कर रहे हैं, उद्गीत गाने वाला उद्गीत गा रहा है। अध्वर्यु मानो अपने में शासन कर रहा है, और मुनिवरों! देखो, होताजन अपने में स्वाहा कह करके हूत कर रहे हैं। तो यह कैसा नृत्त हो रहा है, परमात्मा संरक्षण में मानो इन सबका नियमन कर रहा है, तो वे परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, तो विचार आता है कि बेटा! यह अपने में कितना

अनूठा है, कितना विचित्र है, और कितना वेदज्ञ माना जाता है। प्रकाश में युक्त कहलाया है।

उद्गाता

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं तुम्हें उद्गीत गा रहा था क्या एक दूसरे में बेटा! देखो, एक जगत ओत प्रोत हो रहा है। नाना प्रकार में अपने में प्रतिष्ठित हो रहा है। जैसे मानो देखो, जल और अग्नि की विवेचना हो रही थी, इससे पूर्व मानो ये जलं ब्रह्मा अग्नि मानो वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है। चाक्राणी गार्गी ने ये कहा कि हे प्रभु! ये अग्नि कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती है? उन्होंने कहा यह अग्नि वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है। और वायु ही इसको अपने में धारण करता है, जहाँ वायु है वही अग्नि है और जहाँ देखो, वायु नही रहता है, क्योंकि वायु अग्नि की जननी कहलाई जाती है। तो मेरे प्यारे! जहाँ वायु का वेग नही रहेगा, वहाँ अग्नि भी प्रदीप्त नही होगी। अग्नि भी शान्त हो जाएगी। तो विचार आता है अग्नि भी मानो देखो, प्राणों को देने वाला है, यहां प्राण नाना प्रकार के प्राणों के रूप में अग्नि का व्यवधान चलता रहता है गतिवान होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, इसके पश्चात उन्होंने कहा अग्नं ब्रह्मा वायु यह वायु है। जो जगत को प्रसारित कर रही है। अथवा यह प्राण सत्ता दे रही है। वायु नही रहेगी तो प्राण भी नही रहेगा, प्राण नही रहेगा, तो मानव नही रहेगा, प्राणी मात्र नही रहेगा, वनस्पतियां नही रहेंगीं, सर्वत्र मानो देखो, अपने मे शून्यता को प्राप्त हो जाएंगें। तो विचार आता रहता है वेद का मन्त्र कहता है, वायु प्राणां वायु वर्णम्ब्रह्मा प्राण यह प्राण को मानो वायु ही तो प्राण का वर्धन करने वाली है। यही तो उसको व्यवधान में परणित कर रही है। मेरे प्यारे! शिकामकेतु उद्दालक ने तो इन प्राणों के ऊपर अन्वेषण करते हुए बहुत से यन्त्रों का निर्माण किया भारद्वाज मुनि के यहां भी इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता रहा है।

अन्तरिक्ष की प्रतिष्ठा

तो आओ, मेरे प्यारे! यह जो वायु है यह अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाती है, यह अन्तरिक्ष में मानो देखो, वायु गमन करती रहती है, यह मानो तीन प्रकार के

परमाणुओं को ले करके यह वायुमण्डल मानो देखो, यह अन्तरिक्ष में रमण करती रहती है। अन्तरिक्ष्याम् भूत प्रव्हा वर्णसुति यह अपने में मानो देखो, भ्रमण करती है, तो धीरे धीरे अपने में अपनेपन का भान कराती रहती है, और यह कहीं अन्तरिक्ष में बेटा! लय हो जाती है। कहीं अन्तरिक्ष से यह पुनः पृथ्वी मण्डल पर आते हैं, कहीं पृथ्वी से मानो तरलतव में परणित हो जाते हैं। इसी प्रकार एक दूसरे में एक दूसरे का व्यवधान माना गया है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया तो ऋषि ने कहा कि अन्तरिक्षां भूतं ब्रव्हे क्या यह अन्तरिक्ष कहाँ रहता है, यह अन्तरिक्ष कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा यह महतत्व शून्यतं ब्रव्हा यह महतत्व में ओत प्रोत हो जाता है। जब वह ओत प्रोत हो की चर्चा बेटा! देखो, ऋषि ने वर्णन की तो ऋषि यहां आ करके मौन हो गया, और मौन हो करके उन्होंने कहा प्रभु! वर्णनं ब्रव्हा याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि शून्य बिन्दु पर जा करके शून्यता पर मानो देखो, वाणी या कोई इन्द्रिय कोई अपना क्रियाकलाप नही करती। मेरे प्यारे! ऋषि कुछ समय मौन रह करके, उन्होंने यह प्रश्न किया चाक्राणी ने क्या हे देव! यह मानो देखो, यह महतत्व कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? तो बेटा! प्रतिष्ठा की चर्चा आई प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठं ब्रह्मा प्रतिष्ठम देवाः जब यह चर्चा आई तो याज्ञवल्क्य कहता है, अब वह ध्रुवा से ऊर्ध्वा को उड़ाने उड़ता है। वह बोले कि वह चन्द्रमा में प्रतिष्ठित हो जाते हैं मानो यह चन्द्रमा ही तो सोम की वृष्टि करने वाला है यह चन्द्रमा सोम कहलाता है। यही मानो देखो, वनस्पतियों में रस देता है, यही माता के गर्भस्थल में मुनिवरों! देखो, हम जैसे शिशुओं का मंगलं ब्रह्मे देखो, अमृत को प्रदान करता रहता है उसके देखो, जन जीवन प्राप्त होता है, अमृतमयी बन जाता है वह अमृतां भूतम् यह चन्द्रमा ही मानो देखो, चन्द्रमा में ओत प्रोत हो जाता है। अथवा उसी में ये प्रतिष्ठित हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा ही देखो, सोम कहलाता है यह चन्द्रमा समुद्रों से बेटा! जलों का उत्थान करता है, और जल से मेघमण्डल बनते हैं और जब मेघमण्डल मानो देखो, वत्रासुर बन करके इन्द्र का और वत्रासुर का दोनों का संग्राम होता है, तो धीमी धीमी वृष्टि प्रारम्भ होती है।

उससे मुनिवरों! बेटा! जन जीवन मानो यह पृथ्वी नाना व्यंजनों वाली बन जाती है, नाना प्रकार का खाद्य और खनिज उसी के द्वार से उत्पन्न होता है। क्योंकि यह उससे यह कटिबद्ध हो रहा है, जगत तो बेटा! देखो, यह चन्द्रमा सोम है, इसका समन्वय मानो समुद्रों से रहता है, अन्धकार रूपी रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है, और धारण करके यह सोम की वृष्टि करता है, और सौम्य दे करके खाद्य और खनिज पदार्थों को यह पवित्रतव में परणित कर देता है। आओ, मेरे प्यारे! चाक्राणी ने प्रश्न किया प्रभु! यह वाक तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब बाल्यकाल में अध्ययन करते रहे हैं, तो वह बहुत सा निर्णय देते रहे हैं।

चन्द्रमा सूर्य में प्रतिष्ठित

परन्तु देखो, वह चन्द्रमा कहाँ प्रतिष्ठित है? उन्होंने कहा चन्द्रमा सूर्य में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह सूर्य से सहायता लेता है। चन्द्रमां भूतं ब्रह्मा सूर्य सुतं प्रव्हा लोकां मानो देखो, यह सूर्य से सहायता ले करके अपने में सोम कहलाता है, और यह ऊर्ज्वावादी है नाना प्रकार के ऊर्ज्वा को ले करके यह शीतल बन जाती है। अमृतमयी बन जाती है। इसी प्रकार ये ऊर्ज्वा का निधितव करने वाला है। ये द्यौ से प्रकाश लेता है, और द्यौ से ऊर्ज्वा ले करके बेटा! ये ऊर्ज्वा को बिखेर देता है, मानव में जन जीवन आ जाता है, पवित्रतव आ जाता है तो कितना विशाल ये याग हो रहा है। यह सूर्य के द्वारा याग हो रहा है, क्योंकि सूर्य को अदिति कहते हैं, और सूर्य को भास्कर कहते हैं, उदयन कहते हैं और भी नाना प्रकार से इसका वर्णन किया जाता है। ये उदय होने वाला तो उदयन कहते हैं। भास्कर इसीलिए कहते हैं, यह भासता रहता है, सदैव मग्न रहता है, और अदिति इसीलिए कहते हैं क्योंकि ये द्यौ से प्रकाश ले करके मुनिवरों! देखो, अपने में इस संसार को तपायमान करता रहता है। तो अदिति है। मेरे प्यारे! इसके नाना प्रकार के स्वरूप माने गएं हैं। आज मैं उन स्वरूपों में नही जाता ये जो सूर्य है ये नाना प्रकार की ऊर्ज्वा को ले करके, रात्रि को अपने गर्भ में धारण करता है, प्रकाश देता है, अन्धकार को अमृतं ब्रहे ये अन्धकार को अपनी भग रूपी किरणों में लय कर लेता है। मेरे

प्यारे! देखो, उस समय सूर्य को इन्द्र कहते हैं। क्योंकि ये भगों का स्वामी है, किरणों का स्वामी है किरणों का स्वामी होने से इसको इन्द्र कहा जाता है यह देवतव को धारण करने वाला है, तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा ये जो सूर्य है यह ऊर्ज्वा को बिखेरता है, और यह चन्द्रमा में कान्ति देता है, और ये रात्रि को अपने गर्भ में अपने में धारण करता है। इसीलिए इसको ये नाना प्रकार की आभा में रत्त रहता है। चाक्राणी ने कहा प्रभु! ये भी वाक मैं विस्तार से नही चाहती हूँ क्योंकि मेरी माता, जब मुझे लोरियों का पान कराती थी।

सूर्य की प्रतिष्ठा

तो इस प्रकार की वह शिक्षा देती रही है, मैं यह जानना चाहती हूँ, कि यह सूर्य कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा ये जो सूर्य है, यह अमृतं यह गन्धर्व मण्डल में ओत प्रोत हो जाता है। मैंने बेटा! देखो, इससे पूर्व काल में गन्धर्व की चर्चा की और यह गन्धर्व सौर मण्डलों का अन्तिम मनका कहलाता है, मानो इसी के द्वारा सुमेरू कहलाता है। सुमेरू उसे कहते हैं, जब देखो, नाना मण्डलों की माला बन जाती है मनकों की माला बन करके उसका एक सुमेरू होता है और वह सुमेरू में कटिबद्ध रहती है वह विशेष कहलाता है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, ये गन्धर्व सुमेरू की भान्ति रहता है। अमृतं देखो, ये सूर्य इसी में प्रतिष्ठित हो जाता है। द्यौं ब्रह्मा ब्रहे द्यौ के सहित मानो इसमें प्रतिष्ठित हो जाता है और यह गन्धर्व ही मानो देखो, ऊर्ज्वा को द्यौ में देता है और द्यौ मानो सूर्य को प्रकाशित करता है और सूर्य उससे ऊर्ज्वा ले करके मानो वह वनस्पतियों में सब प्राणी मात्र में जीवन सत्ता प्रदान कर देता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह गन्धर्व मण्डल है इसमें सूर्य प्रतिष्ठित हो जाता है। वेद का आचार्य कहता है कि यह गन्धर्व कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है।

गन्धर्व इन्द्र मण्डल में प्रतिष्ठित

उन्होंने कहा ये गन्धर्व इन्द्र मण्डल में ओत प्रोत हो जाता है। बेटा! जहाँ नाना प्रकार के मण्डल है, वहाँ एक मण्डल देखो, इन्द्र नाम का मण्डल है, जिस मण्डल में यह गन्धर्व भी प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। प्रतिष्ठाम् यह प्रतिष्ठितं प्रव्हा यह प्रतिष्ठित

हो जाता है उसी में ओत प्रोत होता हुआ दृष्टिपात आता है। जब योग साधना के द्वारा साधक जब इसको अपने में दृष्टिपात करता है। तो इन्द्र का स्थान बेटा! देखो, ब्रह्मरन्ध्र में होता है और ब्रह्मरन्ध्र में बेटा! देखो, प्रकृति का स्थिर हो जाता है और उसी में वह सान्तवना को प्राप्त हो करके अपने में दृष्टिपात करता है। तो विचार आता है बेटा! वह जो इन्द्र है वह गन्धर्व इन्द्र में ओत प्रोत हो जाता है। इन्द्र मानो देखो, हमारे यहां देखो, पर्यायवाची शब्दों में इन्द्र नाम राजा का है, इन्द्र नाम परमात्मा का है, इन्द्र नाम आत्मा का है, इन्द्र नाम विद्युत का है, यहां बेटा! देखो, इन्द्र के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। मानो परमपिता परमात्मा, अनुशासन में इस संसार को अनुशासन में लाता है। तो उसको इसीलिए इन्द्र कहते हैं, और आत्मा इस शरीर को अनुशासित बनाता रहता है। तो आत्मा को मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र कहा जाता है। यही मुनिवरों! देखो, शासन करता हुआ राजा बन जाता है, और देखो, एक सौ एक अश्वेमध याग करने वाला मानो बेटा! देखो, इन्द्र कहलाता है। जो राजाओं का धिपति कहलाता है, और देवताओं का राजा कहलाता है, इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, जब मेघ मण्डलों की उत्पति होती है। तो उस समय शचि का मिलन इन्द्र से होता है, और शचि कहती है कि महाराज! मानो देखो, यह जो मेरा भू वर्तम यह वत्रासुर का आगमन हो रहा है। इसे नष्ट करो। तो वह शचि और इन्द्र बेटा! देखो, सम्मिलित हो करके बेटा! देखो, वत्रासुर का वध करते हैं और वध करके उसी से मानो देखो, यह उसी का मानो वृष्टि रूप से परणित हो जाती है। तो मुनिवरों! देखो, विद्युत का नाम इन्द्र हैं। तो इन्द्र के नाना पर्यायवाची शब्द माने गएं हैं। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ इन्द्र नाम मण्डल का है, जो सब मण्डलों में विशेष मण्डल जो प्रतिष्ठा को लिए हुए होता है। वह उसको इन्द्र कहा जाता है। तो इन्द्रों स्वा भवा प्रवणां इन्द्रो देवां भुवं वर्णानं देवां इन्द्रा वह इन्द्र है जो अनुशासित करने वाला है, अपने में निर्वतीय कहलाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब ये वर्णन किया तो चाक्राणी उपस्थित हो करके बोली क्या महाराज यह इन्द्र कहाँ प्रतिष्ठित होता है?

इन्द्र प्रजापति में प्रतिष्ठित

उन्होंने कहा ये जो इन्द्र हैं यह प्रजापति में ओत प्रोत हो जाता है। प्रजां भूतं ब्रह्मा वर्णानं मानव के द्वारा जैसे माता पिता हैं, माता पिता के द्वारा दो प्रकार की सन्तानें होती हैं, एक सन्तान होती है एक प्रजा होती है। प्रजा लोकप्रिय कहलाती है, और सन्तान मोह के वशीभूत कहलाती है तो इसीलिए वेद का आचार्य कहता है, वेदमन्त्र कहता है चित्रं देवो पुत्रों वर्णानं ब्रह्मा वर्णानं, यशस्सुतं प्रया देवत्वां माता पिता को प्रजा को जन्म देना चाहिए, माता जब अपने गर्भ से प्रजा का जन्म देती है। तो वह प्रजा कहलाती है, सन्तान को जन्म देती है तो वह मोह ममता में कर्तव्य से विहिन हो जाती है। तो इसीलिए देखो, वह मोह न करते हुए, वह केवल प्रजा और उसको शिक्षित बना दे, और देवतव बना करके मानो देखो, माता का कर्तव्य है।

माता सन्तान को नही प्रजा को जन्म दे

मेरे प्यारे! देखो, ब्रहे और माता जब उसे प्रजामयी बना देती है, और यदि उसको पुत्र बना देती है तो उसमें मोह हो जाता है और मोह से पुत्र पुत्र ही रह जाता है। वह प्रजा नही बनती प्रजां भूतं ब्रह्मा लोकां वेद का वाक कहता है, हे माता! तू प्रजा को जन्म दे मानो तू सन्तान को जन्म न दे करके तू सन्तान में ब्रह्मणो देखो, प्रजामयी बना इसमें इन्द्र ओत प्रोत हो जाता है। इन्द्र कहते हैं जो अनुशासित होता है, और जिसमें अनुशासन होता है, वही प्रजा कहलाती है और जो मानो देखो, माता के संरक्षण में सन्तान ही बना रहता है, पुत्र ही बना रहता है, तो माता को भी मोह है पुत्र को भी मोह है, वह कर्तव्य से विहिन हो जाते हैं दोनों, तो कर्तव्य न करो प्रजा नही कहलाता तो विचार आता है कि वह प्रजा में सन्तान में कुछ अन्तर्द्वन्द्व माना गया है उस अन्तर्द्वन्द्व को क्योंकि संसार में प्रीति होनी चाहिए, परन्तु देखो, मोह भी रूढ़ि न होना चाहिए, अति देखो, वह जो मोह है वह विनाश का मूल बन जाता है, इसीलिए देखो, ममतामयी प्रजां प्रजा को कहता है, पितर मातृ कि जाओ तुम सुयोग्य बन करके मेरे द्वार पर आओ, इसीलिए हमारे आचार्यों

ने, भगवान मनु और कालेत्वर ऋषि महाराज ने नौका में विद्यमान हो करके, मुनिवरों! देखो, प्रजा के लिए कहा और उन्होंने लेखनियाँ बद्ध की हैं, क्या माता पिता माता पांच वर्ष के पशचात मानो देखो, उसे शिक्षित बनाने के लिए विद्यालय में प्रवेश करा देती है। पितर भी कहता है जाओ विद्यालय में चले जाओ, आचार्य के संरक्षण में माता पांच वर्ष तक, आठ वर्ष तक मानो देखो, पिता के संरक्षण में उसके पश्चात आचार्य के द्वारा चले जाओ और प्रजामयी बन करके आओ और प्रजामयी वह कहलाता है जो सुयोग्य बन करके गृह में प्रवेश करता है, वह गृह प्रकाशित होते हैं, और जहाँ गृह में देखो, ममतामयी वाला देखो, गृह को नही त्यागता वह सङ्कीर्ण एक मानो देखो, सूक्ष्म सी आभा में रमण करता रहता है, वह अपने में अपनेपन की आभा में पवित्रता को धारण नही करता तो आज बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें देने नही आया हूँ, कि ये बहुत विशाल विचार हैं।

भगवान मनु

भगवान मनु ने इसके ऊपर बड़ी अपनी लेखनियाँ बद्ध की हैं, कालेत्वर ऋषि ने भी अपनी लेखनियाँ बद्ध की हैं, और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने भी अपनी लेखनियाँ बद्ध की है। तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, वह प्रजामयी इन्द्र कहाँ? प्रजापति में ओत प्रोत हो जाता है यदि इन्द्र के अङ्ग संग रहने वाली प्रजा सुसज्जित है, तो इन्द्र राजा इन्द्र ही बन करके रहेगा, और प्रजा में किसी प्रकार का देखो, आततायी अथवा देखो, उग्रवाद की उत्पति नही हुआ करती है। वहाँ देवतव को धारण किया जाता है।

प्रजापति याग में प्रतिष्ठित

तो विचार आता है मुनिवरों! प्रजामयी अपने को बनाना चाहिए, वहाँ इन्द्र रहता है। तो मेरे प्यारे! चाक्राणी उपस्थित हुई, चाक्राणी ने कहा हे भगवन! आप तो बड़े ब्रह्मवेत्ता है आपका अध्ययन बड़ा नितान्तर हैं। परन्तु मैं ये जानना और यह चाहती हूँ क्या यह प्रजापति कहाँ प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा ये प्रजापति याग में प्रतिष्ठित हो जाता है यागां भूतं देवत्वां देखो, ये याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। याग

में ही मुनिवरों! देखो, प्रजापति है, माता पिता अपने में याग करते हैं, मानो कहीं पुत्रेष्टि याग करते हैं, कही वाजपेयी याग करते हैं। कहीं अग्निष्टोम याग होता है। कहीं मानो देखो, अश्वेमध याग होता है। कहीं अजामेध याग होते हैं, कहीं नरमेध याग होते हैं, कहीं देवी याग का व्यवधान माना गया है। यहां भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन प्रायः देखो, हमारे वैदिक साहित्य में माना गया हैं। परन्तु देखो, वह प्रजापति याग में प्रतिष्ठित होता है। जो प्रजापति होते हैं, वह प्रजां भूतं देखो, वह शुभ कर्म करते हैं। जिसको याग कहा गया है। जब वह याग में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। याग में उनका जीवन याज्ञिक बन जाता है। तो बेटा! देखो, उसका संसार में कोई शत्रु नही रहता है। विचार आता है कि जो मानव कोटि के प्राणी है, वह उनका जीवन प्रत्येक श्वांस याग में शुभ कार्यों में लग जाता है। वह शत्रु उनका कोई नही रह पाता। तो मानो देखो, वह अपने को याज्ञिक बना लेते हैं। वह याग में परणित हो जाते हैं। तो वह मृत्यु से पार होने का प्रयास करते हैं। तो बेटा! देखो, वह प्रजां भूतं वह याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। याग करने वाला यज्ञमान जब निष्पन्न हो करके अपने देवताओं को हूत करता है। जैसे कागभुषुण्ड जी की

अनुष्ठान के द्वारा वायुमण्डल को सात्विक बनाना

मुझे चर्चाएं आती रहती हैं, वह अनुष्ठान करते थे अपने प्रभु से याचना करते थे प्रभु मैं अनुष्ठान कर रहा हूँ। मैं वायुमण्डल को सात्विक बना रहा हूँ। मेरे अङ्ग संग रहने वाला जैसे क्षत्रिय देखो, युद्ध के लिए जाता है, संग्राम के लिए जाता है, तो वह कवच को धारण करता इसी प्रकार भगवन! मैं अपने याग रूपी कवच को अपने में धारण करना चाहता हूँ। जिससे मेरे यहां कोई भी अशुभ तरंगें न आयें मैं शुद्ध तरंगों में परणित हो करके मैं याज्ञिक बन जाऊं। इस प्रकार मुनिवरों! देखो, यज्ञमान अनुष्ठान करता हुआ कहता है।

याग दक्षिणा में प्रतिष्ठित

मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी उपस्थित हुई और चाक्राणी ने यह कहा प्रभु! यह याग कहाँ प्रतिष्ठित रहता है। तो वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य कहता है, क्या हे देवी! यह

जो यागां भूतं यागाम ब्रहे यह जो याग है, यह दक्षिणा में ओत प्रोत हो जाता है। दक्षिणा मेहि देहि दक्षिणां भूतं मानो देखो, द्रव्य देना कोई दक्षिणा नही, यह तो इसका उदर की पूर्ति करने को कहा जाता है। परन्तु देखो, दक्षिणा का अभिप्राय यह कि यज्ञमान की त्रुटियों को समर्पित कर देता है, और वह कहता है, हे भगवन! हे पुरोहित! हे ब्रह्मदेव! मैं आपको दक्षिणा देना चाहता हूँ। जैसे कौशल्या जी ने जब पुत्रेष्टि याग हुआ, तो कौशल्या जी ने मानो महर्षि शृङ्गी से कहा था प्रभु मैं आपको दक्षिणा देना चाहती हूँ। तो उस समय उन्होंने कहा देवी! प्रदान करो, तुम क्या चाहते हो, तो ऋषि ने कहा कि मैं यह चाहता हूँ कि तुम्हारे गर्भ से ऐसी सन्तान का जन्म हो, जिससे मानो देखो, इस संसार में धर्म और मानवता और ऋषितव की रक्षा होनी चाहिए, और देखो, राष्ट्र ऊर्ध्वा में गमन करता रहे। इस प्रकार देखो, सन्तान सुसज्जित होनी चाहिए। माता कौशल्या ने वही दक्षिणा प्रदान कर दी। तो यज्ञमान जब दक्षिणा देता है, तो अपने हृदय की जो नाना प्रकार की जो शरीर में क्रियाकलापों में त्रुटियां है।

दक्षिणा श्रद्धा में प्रतिष्ठित

उन त्रुटियों को वह आचार्य को समर्पित कर देता है, और यह कहता है, लीजिए भगवान श्रद्धामयी देहि वह श्रद्धा से देता है वह लज्जा से देता है वह मानो देखो, परन्तु वह दक्षिणा देता है, और दक्षिणा का अभिप्राय मानो देखो, अपने नेत्रों को सुज्ञित बनाना, अपने घ्राण इन्द्रियों को सुज्ञित बनाना, सर्वत्र इन्द्रियों को जो दोष है उन्हें वह आचार्य को प्रदान कर देता है आचार्य उसे यज्ञ में मानो समर्पित करता हुआ यज्ञं भूतं ब्रह्मा वर्णनं मानो देखो, वह उसको दग्ध कर देता है। तो बेटा! मैं दूरी नही जाना चाहता हूँ विचार विनिमय क्या वेद के ऋषि ने कहा क्या यज्ञ दक्षिणा में ओत प्रोत हो जाता है। दक्षिणा में प्रतिष्ठित हो जाता है। इसीलिए बिना दक्षिणा के याग सफलता को प्राप्त नही होता, परन्तु द्रव्य नही त्रुटियों को त्यागने का नाम दक्षिणा है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे तो बहुत सा काल स्मरण है, अश्वपति के यहां जब याग हुआ था तो वह वृष्टि याग में जाने के लिए सौभाग्य प्राप्त हुआ,

तो जब राजा दक्षिणा देने लगे तो उन्होंने कहा आचार्य ने आचार्य से कहा प्रभु! मैं दक्षिणा देना चाहता हूँ। तो उस समय पुरोहित ने कहा हे राजन! तुम्हारा जो अन्न है, वह राष्ट्र का अन्न है, इस अन्न को इस द्रव्य को तो हम लेना नही चाहेंगें। परन्तु देखो, यदि तुम दक्षिणा देना चाहते हो तो तुम प्रत्येक इन्द्रियों के जो तुम्हारे में भाव उत्पन्न होता है। उन भावों में दूषितपना न हो जाएं, वह हमें प्रदान करो। वह दक्षिणा हम प्रदान कर सकते हैं मेरे प्यारे! देखो, राजा बड़े प्रसन्न हुए तो राजं ब्रह्मा कृतं देवं देखो, यज्ञमान का यह कर्तव्य है। बेटा! आज यह तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ, परन्तु चाक्राणी उपस्थित हो गई और ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा गार्गी तुम प्रश्न करो ब्रह्मवेत्ता से। मानो देखो, इसका अध्ययन कितना है। तो मेरे प्यारे! चाक्राणी उपस्थित हुई, और चाक्राणी ने कहा प्रभु! मैं जानना यह और चाहती हूँ, कि दक्षिणा कहाँ प्रतिष्ठित होती है? उन्होंने कहा कि यह दक्षिणा हृदय से समन्वय रहता है, हृदय से ही हृदय में दक्षिणा ओत प्रोत हो जाती है। यह उसी हृदय की तलहटी में रहती है। जहाँ हृदय से मानो देखो, जगत की प्रतिभा का जन्म होता है, ये श्रद्धामयी होती है देखो, वह हृदय से श्रद्धा का जन्म होता है, दक्षिणा श्रद्धा में रहती है, इसीलिए यज्ञमान में श्रद्धा होनी चाहिए, प्राणी मात्र में श्रद्धा होनी चाहिए, क्योंकि श्रद्धा का ये जगत है श्रद्धा में माता है, श्रद्धा में पितर है, श्रद्धा में पुत्र पुत्रियाँ हैं, श्रद्धा में आचार्य जगत मानो इस श्रद्धा से गुथा हुआ है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, तो उस समय चाक्राणी उपस्थित हो करके बोली, हे प्रभु! ये दक्षिणां श्रद्धां भूतं ब्रह्मे मैं आगे कोई प्रश्न करू, उस समय तो महर्षि याज्ञवल्क्य बोले कि हे देवी! तुम आगे प्रश्न मत कर देना, अन्यथा तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, उस समय चाक्राणी ने कहा प्रभु! मेरा मस्तिष्क नीचे क्यों गिर जाएगा? उन्होंने कहा प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करता ही रहेगा परन्तु देखो, यह प्रश्न करने वालों का अभिमान न हो जाएं, देखो, प्रश्न ब्रहे इन्द्रियों का विषय जब नही रहेगा, प्रश्न में तो उस समय इन्द्रियाँ मौन हो जाएगी और प्रश्न कर्त्ता को अभिमान हो गया तो अभिमान ही मृत्यु कहलाती है। मेरे प्यारे!

देखो, उन्होंने कहा कि मैं मृत्यु नही हूँ, मैं यह मुझे यह भय हो रहा है, मुझे ये आशङ्का हो रही है कि तुम्हारा मस्तिष्क नीचे न गिर जाएं।

श्रद्धा दक्षिणा में प्रतिष्ठित

मेरे प्यारे! चाक्रायणी वहीं मौन हो गई। आगे तुम ये प्रश्न करोगी यह प्रश्न करूंगी उसका उत्तर दिए देता हूँ कि श्रद्धा कहाँ रहती हैं? यह हृदय में रहती है, और हृदय का हृदय से जब समन्वय रहता है, तो मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त हो जाती है, मेरे प्यारे! देखो, परमात्मा का हृदय ये जगत है और आत्मां ब्रह्मे देखो, पिण्ड में एक हृदय है, उस हृदय का हृदय से मिलान होता है। हृदय से देखो, जो मनका बन करके देखो, जो हृदय में हृदय समावेश होता है। तो बेटा! पगडण्डी बन जाती है, कि तुम यह कहो कि हृदय कहाँ प्रतिष्ठित है तो हृदय ही तो मानो देखो, परमात्मा की प्रतिभा कहलाती है, और यदि तुमने हृदय की व्याख्या जानना चाहते हो, तो हृदय की अधिकार समाहित हो जाता है, और यदि तुम आगे प्रश्न करोगे तो कोई उत्तर नही देगा, तुम्हें यह अभिमान होगा कि मेरे प्रश्नों का उत्तर नही बना है, और इस अभिमान में तुम्हारा सिर नीचे गिर जाएगा। तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा। तो बेटा! चाक्रायणी ने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने यह कहा धन्य है प्रभु! आप अपने मेरे हृदय की जो अन्धकार में जो ग्रन्थियाँ लगी हुई थी, उनका आपने स्पष्टीकरण किया है, मैं आपके चरणों की वन्दना कर रही हूँ, प्रभु आपं ब्रह्मे लोकां व्रतं देवाः मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या अमृतं ब्रह्मा तो बेटा! देखो, श्रद्धा, हृदय, हृदय में श्रद्धा, श्रद्धां ब्रह्मे और हृदयश् ब्रह्मे हृदय से श्रद्धा, श्रद्धा से दक्षिणा दक्षिणा से याग, याग से प्रजापति और प्रजापति से इन्द्र और इन्द्र से गन्धर्व गन्धर्व से सूर्य और सूर्य से चन्द्रमा तो बेटा! यह ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और देखो, यह किस प्रकार ध्रुवं ब्रह्मे बेटा! यह जगत और जगत मानो चारों प्रकार की सृष्टि में चारों प्रकार की सृष्टि पृथ्वी में और पृथ्वी मुनिवरों! देखो, जल देखो, अग्नि में अग्नि वायु और देखो, अग्नं प्रतं ब्रहा वायु अन्तरिक्ष में अन्तरिक्ष मुनिवरों! देखो, महतत्व में तो ऋषि मुनियों की यह देन रही है, कि चिन्तन करने की ध्रुवा से

ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में उड़ान उड़ने वाला बने। तो यह हमें अपनी उड़ान उड़नी चाहिए। विचारों की उड़ान बड़ी विचित्र होनी चाहिए। जिससे हमारा जीवन एक महानता को प्राप्त हो जाएं। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, बेटा! मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् रथं ब्रह्मणा देवं भद्रा मनौ रेवं वरुणाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल, अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने गागर में सागर की कल्पना की है, मानो गागर को सागर में गागर को सागर में भरण किया है। हमारा अन्तरात्मा वे बड़ा प्रसन्नीय हो रहा था, मानो यह जो हमारी वाणी जा रही है, वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ। आज यह जो काल है, यह वाममार्ग का काल है, जिसको मैं पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ और वाममार्ग उसे कहते हैं, जो उल्टे मार्ग पर गमन करता है, सुरा और सुन्दरी और द्रव्य की लोलुपता में जब राजा और प्रजा और प्रजा विहिन हो जाते हैं। तो विहिन होने लगते हैं, तो उस समय यह समाज वाममार्ग का समाज बन जाता है। आधुनिक जो वर्तमान का काल है, वह उसी प्रकार का है, यह सुरा सुन्द्रियों में अपने में मग्न हो रहा है। द्रव्य की लोलुपतता में यह मानव मानव का भक्षण कर रहा है। तो विचार आता है कि यह वाममार्ग समाज में नही रहना चाहिए। परन्तु देखो, ऐसे काल में मेरा यज्ञमान मैं यज्ञमान को अपनी शुभकामना क्या हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, क्योंकि द्रव्य ही मृत्यु का कारण है, और द्रव्य ही जीवन का कारण है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन किया आज मैं भी वर्णन कर रहा हूँ, क्या द्रव्य का दुरूपयोग होगा तो द्रव्य तुमसे चला जाएगा। द्रव्य का सदुपयोग होगा यह द्रव्य तुम्हारे समीप आता रहेगा, तुम्हें बलवती बनाता रहेगा, इसीलिए द्रव्य का सदुपयोग होना, देव पूजा में परणित करना यह महान देखो, अपने में प्रतिष्ठा में आता है। आज मैं विशेष चर्चा न करता हुआ आधुनिक जो यह जो जगत वर्तमान का काल

है, यह कहते हैं कि देखो, कि आतंक वृत्ति उग्र क्रिया बन गई है। समाज की मैं यह कहता रहता हूँ कि उग्र क्रिया क्यों नही बनेगी, जब राजा ब्रह्मवेत्ता नही होगा। जब राजा ब्रह्म का बखान करने वाला होगा, प्रजा को ऊँचा बनाने के विचार देगा तो प्रजा महान बनेगी, और यदि उसी प्रजा में स्वार्थ की परता आ जाती है और प्रजा में ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार के मत मतान्तरों की प्रतिभाषिता होने लगती है, तो रक्त भरी क्रान्ति स्वाभाविक है तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से, इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही, तो आधुनिक काल में, यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है। तो राजा को ब्रह्मवेत्ता बनना होगा, और ये जो नाना प्रकार की ईश्वर के नाम पर जो रूढ़ियाँ बनी हुई है। ये रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके, ज्ञान और विज्ञान और विवेक और मानवता पर स्थिर विचार हो जाएं, वह विचार मान्य होने चाहिए। तो इसीलिए मेरा कोई विशेष इस सम्बन्ध में नही ये वाक मेरा है कि उस वाक की जो प्रतिक्रिया है, इसके मूल में नाना प्रकार के ईश्वर के नाम पर जो रूढ़ियाँ बनी हुई हैं, मत मतान्तर बने हुए हैं, उसके मूल में ये है, मत मतान्तरों को राजा को नष्ट करना चाहिए और नष्ट जब होते हैं, जब एकोकी ईश्वर का विचार विनिमय करता है। राजा ब्रह्मवेत्ता हो और प्रत्येक रूढ़ियों को एकत्रित करे एकोकीकरण होना चाहिए, तो यह आज का विचार अब केवल यह कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। ऐसी मेरी कामना रहती है, यह मेरे हृदय की वेदना है क्या द्रव्यां भूतं देखो, यह द्रव्य परमात्मा की एक देन है इसको ....शेष अनुपलब्ध।

11.920403-सत्यवादी

परमपिता परमात्मा अनन्तमयी

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, कि आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जात है क्योंकि परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है, और उसका ज्ञान और विज्ञान प्रायः अनन्तमयी माना गया है। हमारे यहां, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, और वर्तमान के काल तक नाना प्रकार का विचार विनिमय होता रहा है, और प्रत्येक मानव की एक इच्छा रहती है क्या मेरा जीवन सदैव प्रकाश में रत्त हो जाए,और उसके मनोनीत हृदयों में एक इच्छा रहती है कि मैं परमपिता परमात्मा के समीप चला जाऊं और तृतीय इच्छा यह होती है, कि मैं संसार में दार्शनिक बन जाऊं। इस संसार का दिग्दर्शन करने लगूं, और अपना भी दिग्दर्शन करता रहूँ। ऐसी बेटा! प्रत्येक मानव की मनोनीत इच्छा बनी रहती है, मेरी प्यारी माता अपने बाल्य को लोरियों का पान कराती रहती है, और उसके मनों की यह इच्छा होती है कि मेरा जो बाल्य है, वह आज्ञाकारी हो और पाण्डितव होना चाहिए, और उसके साथ साथ यह इच्छा होती है कि वह द्रव्यपति भी होना चाहिए। तो यह माता की नाना प्रकार की आकांक्षाएं होती हैं। प्रत्येक मानव का, सबका एक ही तारतम्य होता है, कि क्या जीवन प्रकाश में चला जाए, अन्धकार न रहे, जीवन में ऐसी प्रायः देखो, मातृ और पितरों की सभी की इच्छा होती है, और मानव के हृदय की यह पुकार होती है कि मैं हृदयगामी बनूं। प्रत्येक वस्तु को हृदय में गृहीत करने लगूं। तो बेटा! यह मानव की इच्छा होती है, जैसे विद्यार्थी, ब्रह्मचारी अपने गुरु के कुल में प्रवेश करता है और यह विद्या का अध्ययन करता है तो उसकी सदैव इच्छा यह बनी रहती है कि मेरा जब परीक्षा फल आए, तो मैं मानो अपने मे उतीर्ण हो जाऊं। तो यह सर्वत्र इच्छाएं जो बनी रहती हैं इसका मूल कारण

क्या है? इसका मूल कारण यह है कि परमपिता परमात्मा सदैव महान है और उसकी महानता के आश्रित मानो यह जगत अपने में क्रियाशील हो रहा है और उन क्रियाओं को प्रत्येक मानव अपने में धारण करना चाहता है, और उसकी यह इच्छा बनी रहती है कि मैं धारयामि बनूं और इस संसार को विजय करने वाला विजेता बनूं अपने को जितेन्द्रिय बनाता रहूँ। परन्तु जैसे वह उपरामता को प्राप्त होता है तो मानवीत्व में प्रवेश होता रहता है और परमपिता परमात्मा की एक अनुपम ज्योति में ज्योतिवान बनने के लिए मनोनीतता की इच्छा बनी रहती है।

राष्ट्र और समाज

तो आओ, बेटा! आज मैं तुम्हे इससे पूर्व जो मेरे प्यारे महानन्द जी ने कुछ शब्द उच्चारण किए थे, राष्ट्र के प्रति और राष्ट्र को जितेन्द्रिय बनाने के लिए इन्होंने जो अपना मन्तव्य दिया और रूढ़िवाद को नष्ट कराने करने के लिए इन्होंने अपने विचार दिये। तो बेटा! यह जो रूढ़िवाद है वह प्रायः राजा होता ही इसीलिए है कि रूढ़िवाद को समाप्त करे। जब तक मानव के हृदय से रूढ़ि नही जाती जब तक कोई भी क्रियाकलाप पवित्रता में नही आ सकेगा। न तो दीक्षा ही ऊर्ध्वा में प्राप्त होगी और न मानव के हृदयों से एक दूसरे के नष्ट करने की जो प्रवृत्ति है वही समाप्त होगी। यह जब समाप्त होती है जब रूढ़िवाद नही रहेगा क्योंकि ईश्वर और धर्म एक है और रूढ़ियाँ अनेक होती हैं। जब तक अनेकता को एकता में परणित नही कर लिया जाता जब तक राष्ट्र और समाज ऊँचा नही बनता। एक मानव देखो, योगेश्वर बनने के लिए तत्पर है और वह नाना प्रकार का प्राणायाम करता है उदान और समान को उसमें प्रवेश मानो उसमें उतीर्ण जब ही होता है जब उसका आहार और व्यवहार और मानवीयतव पवित्रता में धारयामि बना रहेगा तो यह मनोनीत इच्छा बनी रहती है। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में कोई विचार नही देने आया हूँ।

माता का सौभाग्य

आज मैं तुम्हें बेटा! उस स्थली पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ माता अपनी लोरियों

का पान कराती अपने बाल्य को शिक्षा देती है और यह कहती है कि हे बाल्य! तू मानो जब प्रबल होगा तो तुझे मिथ्या नही उच्चारण करना है। तू सदैव सत्यवादी बन क्योंकि परमात्मा सत्य है। परमात्मा रूढ़ि नही है। वह एकोकी चेतना है और चेतना के ऊपर तेरा मन्तव्य रहना चाहिए। माता अपने में ये शिक्षा दे रही है और वह माता प्रसन्न हो रही है, अपने हृदय की जो पुकार है वह उद्गीत रूप में गा रही है मेरे प्यारे! जब बाल्य कुछ प्रबल हुआ, तो एक समय अपनी माता से बोले हे देव मातम् ब्रह्मा हे माता! तूने मुझे ब्रह्म का उपदेश दिया है, हे माता! तूने मुझे यह कहा है कि तू दीक्षित होना और परमपिता परमात्मा सत्य है, तू उसके समीप जाना तो माता मुझे आज्ञा दीजिए मैं आचार्य के समीप जाता हूँ। और मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ। मेरी एक ही आकांक्षा बनी हुई है माता बड़ी प्रसन्न हुई। सांयकाल का समय था, माता अपने में प्रसन्न हो रही है और यह उद्गीत गा रही है कि तेरा जो मनोनीत जीवन का उद्देश्य है वह पूर्ण हो गया है। मैं यही चाहती थी कि मेरे गर्भस्थल से जो बाल्य का जन्म हो वह ब्रह्मवेत्ता हो ब्रह्मनिष्ठ होना चाहिए। क्योंकि ब्रह्मनिष्ठ होना ही सौभाग्य की वार्त्ताएं हैं। यह हमारा सौभाग्य है, क्योंकि हमारे यहां मंगलं ब्रहे तत्त्व्रा मानो सहस्त्रां राजा जितेन्द्रिय हो जाएं उनका एकोकी विचार बन जाऐ तो उसी विचार के सामान्य एक ब्रह्मवेत्ता होता है और एक सहस्त्र मानो ब्रह्मवेत्ता हो मानो देखो, उनके सामान्य एक विवेकी पुरूष होता है और एक मानो देखो, जो विवेकी पुरूष जो अमृतं आत्मा में लीन रहने वाला आत्मतत्व, आत्मा के प्रकाश में ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने वाला, इन्द्रियों के विषयों को उसी में दृष्टिपात करने वाला मानो सहस्त्रों विवेकियों के सामान्यता में रत्त रहता है। क्योंकि वह परमात्मा के हृदय से उसका मिलान हो गया है।

माता की शिक्षा

तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, वेद का वाक कहता है मैं नही कह रहा, वेद का एक एक मन्त्र हमें उस ऊर्ध्वा पर ले जाने के लिए सदैव तत्पर रहता है तो माता बड़ी प्रसन्न हुई और माता अपने में उद्गीत गा रही थी मध्य रात्रि का समय हुआ

माता ने निश्चय कर लिया कि मैं ब्रह्मवेत्ता के समीप बाल्य को मानो देखो, उसको आज्ञा दूं। प्रातःकाल हुआ तो माता से पुत्र ने कहा अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करे हे माते! तुमने मुझे आज्ञा नही दी, मैं ब्रह्मवेत्ता के समीप चला जाऊं उन्होने कहा जाओ बाल्य। तो मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने आज्ञा दी तो वह आज्ञा जब देने लगी तो बोली मेरा नामं ब्रह्मः मानो देखो, मेरा नाम जाबाला है, आचार्य कुछ प्रश्न करेंगें, तो तुम सत्य उच्चारण करना और जो तुम्हें सत्य प्रतीत न हो तो तुम मेरे समीप आ जाना, मैं सत्य को उद्गीत गाऊंगी। मेरे प्यारे! देखो, वह बाल्य सत्यकाम आचार्य के समीप जाने के लिए तत्पर हुआ। माता ने कहा हे बाल्य! जब तू आचार्य के समीप पंहुचेगा तो आचार्य के चरणों को स्पर्श करना और चरणों में अपने नतमस्तिष्क हो करके जब तक वह तुम्हें कोई आज्ञा न दे तो तुम वहाँ से अपना प्रस्थान नही करना और जब वह कुछ प्रश्न करें तो सत्य उच्चारण करना, क्योंकि सत्य में प्रभु है। सत्य में विष्णु है। पालन होता है, माता जब पालन करती है तो उसके सत्य का आश्रय होता है यदि सत्य उसके हृदय में नही है तो पालना का मूल उत्पन्न नही होता। यदि रजोगुण में पालना होती तो वह तमोगुण की प्रवृत्तियों में रत्त हो जाएगी। तो इसीलिए हे ब्रह्मचारी! जब आचार्य के समीप जाएगा तो विद्या का जब अध्ययन करता है, आचार्य उपदेश देता है विद्या का तो उसके द्वारा सत्य होगा और वह सत्य के ऊर्ध्वा में कुछ और उद्गीत गाता है तो न देखो, उपदेश रहता है, न आचार्य रहता है। माता ने जब इस प्रकार का वाक उच्चारण किया तो ब्रह्मचारी ने कहा धन्य है माते! जो आप ने जो कुछ कहा मैं वही कर पाऊंगा।

महात्मा गौतम और सत्यकाम संवाद

मेरे प्यारे! देखो, वह भ्रमण करते हुए महर्षि गौतम के द्वार पर पंहुचे और महात्मा गौतम के चरणों में नत मस्तिष्क हो गएं मानो वह विराजमान हो गये। जब विराजमान हो गएं तो मनिवरों देखो, प्रातःकाल से सांयकाल हो गया, अन्न जल का पान नही किया, व्रती बने रहे। सांयकाल को आचार्य ने कहा कहो, ब्रह्मचारी!

तुम्हारा नामोकरण? उन्होंने कहा मैं सत्यकाम हूँ, माता का नाम जाबाला है। आचार्य ने कहा तुम्हारा गोत्र क्या है? सत्यकाम ने कहा कि मैं गौतम ब्रहे मैं गोत्र को नही जानता। मैं माता से प्रश्न करके आता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि के समय वहाँ से प्रस्थान करते हैं, माता के द्वार पर पंहुचे। माता ने कहा सत्यकाम तुम विद्यालय से चले आये? उन्होंने कहा नही, माते! आचार्य ने गोत्र का प्रश्न किया है। तुम्हारा गोत्र क्या है? जाबाला ने कहा जाओ गोत्राम् बहु ब्रह्म ब्रहा व्रती देवा वह बोली कि जाओ कहो कि गोत्र का मुझे भी प्रतीत नही हैं। मेरे प्यारे! सत्यकाम ने वहाँ से प्रस्थान किया और भ्रमण करते हुए मानो प्रातम् ब्रहे वह मध्य रात्रि के अन्तिम चरण में आचार्य के द्वार पर आ गये। प्रातःकाल हुआ, प्रातःकाल होते ही आचार्य ने कहा तुम्हारा गोत्र क्या है हे सत्यकाम! उन्होंने कहा प्रभु! माता ने ये कहा है कि मैं गोत्र को नही जानती। आचार्य ने बेटा! उसे ब्राह्मण संज्ञा प्रदान की और यह कहा कि हे ब्रह्मवेत्ता! हे जिज्ञासु! तुम ब्राह्मण हो क्योंकि जो ब्राह्मण है वही सत्यवादी होता है जो ब्रह्म की आभा में रत्त रहने वाला वह सत्यवादी है मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! जैसे आपका व्रततव। सांयकाल हो गया विचार विनिमय होता रहा। उन्होंने कहा प्रभु! मुझे कुछ आज्ञा दीजिए। मैं आपका शिष्य हूँ, आपका देवतव ब्रहे आपके देवतव की पूजा करता हूँ। उन्होंने कहा जाओ, तो हे ब्रह्मचारी! रात्रि समय तुम विश्राम करो और रात्रि में तुम मेरे गर्भ में रहो।

आचार्य की तीन दिवस

मेरे प्यारे! देखो, आचार्य तीन दिवस अपने गर्भ में ब्रह्मचारी को धारण करता है, माता नौ माह तक अपने गर्भ में धारण करती है, पितर देखो, तीन वर्ष तक अपने गर्भ में धारण करता है और आचार्य तीन रात्रि तक। मेरे प्यारे! देखो, माता तो इसीलिए करती है क्या यह जो ब्रह्माण्ड है ये नौ खम्बों पर स्थिर रहता है। मेरे प्यारे! देखो, पञ्च महाभूत हैं, काल और दिशा, आत्मा और एक मन है यह मानो देखो, ये नौ में ही यह जगत विद्यमान रहता है, माता के गर्भस्थल में नौ माह में इसका निर्माण होता है और निर्माण करने वाला चैतन्य देव है। तो संसार में नौ

पदार्थ हैं और नौ ही तक मुनिवरों! देखो, गणना कही जाती है। संसार की नौ तक गणना है आगे शून्य बिन्दु है। आगे मानो देखो, उसमें एकाकी चलता रहता है द्वितीय भी चलता रहता है इसी प्रकार देखो, एकादशो से अवृत प्रारम्भ होता है मेरे प्यारे! देखो, आचार्य तीन वर्ष क्यों धारण करता है क्योंकि तीन में यह जगत विद्यमान है सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण। तो रजोगुण, तमोगुण में मानो देखो, उसे उनका ज्ञान करा देता है। हे बाल्य! तुझे सत्य रहना है हे बाल्य! तुझे रजोगुण में भी जाना है और तमोगुण मे भी प्रवेश होना है। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, आचार्य, पितर देखो, उसको अमृत करा देता है और तीन रात्रि मुनिवरों! देखो, आचार्य की होती है, आचार्य तीन में ही मुनिवरों! देखो, तीन पदार्थों का ज्ञान करा देता है आत्मा, परमात्मा और प्रकृति यह तीन पदार्थ हैं। इनका ज्ञान कराता है वह कहता है हे ब्रह्मचारी! तो सबसे प्रथम जो मेरा गर्भाशय है, उसमें मानो ब्रह्म का ज्ञान होना चाहिए। यह ब्रह्म क्या है? और ब्रह्म उत्पन्न ब्रहे क्या है, और देखो, उसके पश्चात तू आत्मा को जान क्योंकि आत्मा ही भोगतव्य में परणित रहने वाला है। और तीन रात्रि मुनिवरों! प्रकृति की होती हैं। प्रकृति का ज्ञान करा देता है और यह कहता है कि आत्मा का जो लोक है, यह पञ्च महाभूत हैं, और मुनिवरों! देखो, ब्रह्म का जो लोक हैं, यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड हैं। एक एक कण कण मानो देखो, उसका लोक है और प्रकृति मानो देखो, प्रकृति का जो लोक है। वह ब्रह्म है। ब्रह्म ही प्रकृति का लोक है क्योंकि प्रकृति जब भी स्थिर होती है, तो वह ब्रह्म में स्थिर हुआ करती है तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार उन्होंने कहा क्या हे ब्रह्मचारी! अमृतां भूतं ब्रह्मे लोकां मानो देखो, परमपिता परमात्मा रचयिता है, प्रकृति रचने वाली है और आत्मा मानो देखो, उसमें वास को भोगने वाला है। तो सिद्धान्त में, वेद का सिद्धान्त यह है कि तीन पदार्थ अनादि हैं बेटा! परमपिता परमात्मा, आत्मा और प्रकृति, इनका किसी भी काल में अक्षय नही होता, इनका विनाश नही होता, मानो यह एक रस में बने रहते हैं। यदि देखो, प्रकृति का मण्डल नही रहेगा तो आत्मा का लोक नही रहेगा और यदि आत्मा का लोक नही रहेगा तो रचने वाला जो ब्रह्म

है, ब्रह्म नही होगा तो आत्मा और प्रकृति दोनों शून्यता में तो रचना का प्रसंग ही नही आता। तो वह कहता है हे ब्रह्मचारी! यह तीन रात्रि है, तू मेरे गर्भ में स्थित हो और तीन पदार्थों का तुम्हें ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान ये कि परमात्मा के प्रति तुम्हें निष्ठा होनी चाहिए, परमात्मा है। और आत्मा के प्रति मानो देखो, आत्मा की उसकी स्थिरता है, और प्रकृति रचयिता है, प्रकृति का ज्ञान ही संसार में विज्ञान है, प्रकृति का विज्ञान ही विज्ञान है। आत्मा का ज्ञान ही देखो, वह विज्ञान से परमात्मा के समीप जाना है, और परमात्मा का ज्ञान होना ही मानो देखो, मोक्ष का द्वार है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया तो सत्यकाम मेरे प्यारे! देखो, ऋषि के चरणों में ओत प्रोत हो गया। और यह कहा कि तुम तीन रात्रि आज के दिवस रात्रि मेरे गर्भ में विद्यमान हो और मेरा जो गर्भाशय है, वह ज्ञान का, मोक्ष का मार्ग है। मेरे प्यारे! देखो, पिता का जो मार्ग है। तीन वर्ष का पिता का जो मार्ग है, वह मानो देखो, संसार की आभा है और माता का जो नौ माह है वह रचना का रचना की आभा है, और गणना का एक अन्तिम अक्षय कहलाता है। इस प्रकार बेटा! देखो, ऋषि ने ब्रह्मचारी को वर्णन किया, ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गया और ब्रह्मचारी के मौन हो जाने के पश्चात रात्रि के काल में ब्रह्मणां ब्रह्मा लोकां वाचस्सुतं देवत्वां लोकाम् ब्रह्मचारी ने प्रातःकाल हुआ और प्रातःकाल होते ही उन्होंने कहा प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा जाओ सत्यकाम ये गऊ चार सौ गऊँ हैं जब तक एक सहस्र नही हो जाएं, तुम गुरु के आश्रम में नही आना। सत्यकाम ने कहा प्रियतम्।

सत्यकाम का तप

मेरे प्यारे! देखो, आचार्य ने गर्भ से पृथक हो करके वह गऊओं के मध्य में पंहुचे। उन गऊओं के मध्य में एक वृषभ है मानो जिसे हम बैल के रूप में वर्णन करते रहते हैं। गऊ का बछड़ा है वह कहता है आओ, सत्यकाम आओ, उन्होंने कहा हे दस्तुतम् तुम्हारे पदार्थ व्रतम् ब्रहे उन्होंने कहा गुरु की आज्ञा का पालन करना है तो चलो। वह चार सौ गऊओं को ले करके बेटा! वहाँ से गमन करता है और

जहाँ वह गऊएं जाती वहीं सत्यकाम जाते। दिवस मानो देखो, गऊओं का दुग्धाहार करना और उसी के दुग्ध और घृत में वह नित्यप्रति मानो याग करते। प्रातःकाल होते ही मुनिवरों! देखो, वह पूर्वाभिमुख करते हुए वह मुनिवरों! देखो, अग्न्याध्यान करते और अग्नि को कहते हे अग्नि! तू देवताओं का मुख है और तू देवताओं का मुख हो करके तुझे मेरी भावनाओं को विचारना है। मेरे प्यारे! वह कहते प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, कह करके उदानाय सम्मब्रव्हे और यह स्वाहा कह करके बेटा! देखो, अग्न्याध्यान करते। वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहा है ब्रह्मचारी, गऊएँ सब शान्त हो करके उनकी ध्वनि को अपने में ध्वनित कर रही हैं, बेटा! यह ध्वनि बड़ी विचित्र है, वेद की ध्वनि बड़ी विचित्र है जो गान रूप में गाता है, हृदय से गाता है, मुझे बेटा! देखो, आज मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ भगवान कृष्ण का जीवन जब वह अपनी ध्वनि में ध्वनित होते थे, तो गऊएं सब शान्त हो जाती और वह मानो स्वर ध्वनि उसे बंसरी कहते थे परन्तु बंसरी नही उस बंसरी में वह वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते थे और वह उद्गीत गाते मानो गऊएं प्रसन्न हो जाती दुग्ध देने के लिए तत्पर उन गऊओं का वह दुग्धाहार करता है, वह मानो अमृत को पान करता है। वह अमृतमय बन जाता है। उसका जो रजोगुण, तमोगुण, वह नष्ट होने लगता है और वह मानो देखो, उसके द्वारा ऐसी तरंगों का जन्म होता है, जिन तरंगों के ऊपर मुनिवरों! देखो, वह तरंगित हो करके द्यौ लोक में प्रवेश कर जाता है। बेटा! मैं बहुत दूरी न चला जाऊं आज इन वाक्यों को ले करके। विचार विनिमय केवल यह क्या सत्यकाम जब वेदों का उद्गीत गाते और वह वेदमन्त्रों का सबसे प्रथम यह भूमिका बनाते वेदमन्त्रों का प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा कह करके उद्गीत गाते प्रजापति स्वाहा इस प्रकार जब वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते। तो मेरे प्यारे! देखो, मन मस्तिष्क एकाग्र रहना चाहिए। इसीलिए हमारे यहां देखो, शतपथ के ऋषि ने कहा है कि क्या यज्ञमान जब यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह अपने मन, मस्तिष्क को एकाग्र करके, प्रसन्न हो करे जब देवताओं के समीप जाता है, तो उस

देवतव को प्राप्त होने लगता है, यह मानो देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन किया है आज मैं बेटा! देखो, उन वाक्यों में न जाता हुआ सत्यकाम ब्रह्मचारी प्रातःकालीन मेरे प्यारे! देखो, गऊओं के मध्य में विद्यमान हो करके अग्न्याध्यान कर रहे हैं और अग्न्याध्यान करते उनको मुनिवरों! देखो, अमृतं ब्रह्मा वह अमृत प्राप्त होने लगा। जब अमृत में प्रवेश होने लगे तो उनकी चित्त की वृत्तियां अपने में रत्त हो गई। तो विचार विनिमय करने का अभिप्राय क्या है कि हम बेटा! देखो, उस सत्यकाम की भान्ति बने और गऊओं को ले करके बेटा! देखो, जब याग करता है, उसके दुग्ध का आहार करता है, उसी दुग्ध के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करता है, अग्नि जो अपने अन्तःकरण में प्रदीप्त हो रही है, आपो जो अपने शरीर में प्रवेश कर रहा है और मुनिवरों! देखो, वायु जो प्राणों को सञ्चार करने वाला है और पृथ्वी गुरूतव देने वाली है। इसी प्रकार बेटा! अमृतं ब्रह्मा अन्तरिक्ष में गमन करने वाला मेरे प्यारे! वह पञ्च महाभूतों वाला जो लोक है अरे, उसमें ही तो आत्मा वास करता है वही तो आत्मा का लोक है। जैसे एक गृह स्वामी है, गृह स्वामिनी है वह गृह में वास करते हैं परन्तु जब आत्मा का, आत्मा का गृह क्या है बेटा! पञ्च महाभूत हैं। इस पञ्च महाभूतों के लोक में ही तो आत्मा वास करता है।

तो आओ, बेटा! देखो, विचार विनिमय क्या आज के हमारे विचारों का अभिप्राय ये कि हम अपने में मानो देखो, अपनी प्रतिभा को जानने का प्रयास करें। तो मेरे प्यारे! देखो, सत्यकाम इसी प्रकार भ्रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो, उन्हें छः माह हो गएं छह माह में उन्हें बेटा! ज्ञान की उपलब्धि होने लगी। अमृत को पान करने वाला ही अमृत में प्राप्त हो जाता है जितेन्द्रिय बन करे क्योंकि इन्द्रियों को ही तो मृत्यु से पार करना है तब ही तो मृत्युञ्जय बनता है मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब छह माह हुए, छह माह क्या एक वर्ष हो गया। एक वर्ष हो गया तो दो हो गये। बारह वर्ष के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, वह चार सौ गऊए एक सहस्त्र हो गईं। जब एक सहस्त्र गऊए हो गई, एक समय प्रातःकालीन ब्रह्मचारी याग कर रहे थे और याग करके वह पवमानाय सूक्त के वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके हूत कर रहे

थे। बेटा! जैसे उन्होंने याग का सम्पन्न किया उन्हीं गऊओं में से एक वृषभ कहता है गऊ का बछड़ा कहता है हे सत्यकाम्! गुरु के आश्रम को चलो हम एक सहस्र हो गएं हैं, और देखो, उससे पूर्व मैं तुम्हें एक उपदेश देता हूँ। मानो देखो, प्राचीदिक, दक्षिणीदिक, और उदीचिदिक और प्रतीचिदिक यह चार प्रकार की कलाएं है। मानो जिन चारों कलाओं में ब्रह्मचारी वास करता है। इन चार कलाओं का ज्ञान तुम्हें हो जाना चाहिए। सबसे प्रथम प्रतीचीदिक्, दक्षिणीदिक, और उदीचिदिक और प्रतीचिदिक सबसे प्रथम मानो देखो, पूर्व दिशा में परमात्मा अग्नि बन करके रहता है और तृतीय दक्षिणाय में वह परमात्मा इन्द्र बन करके रहता है, और प्रतीचिदिक में वही परमात्मा वरुण बन करके रहता है और वरणीय है और उदीचि में मानो वही सोम बन करके रहता है। तो चार कलाओं का बेटा! उन्होंने वर्णन कराया इनकी व्याख्या में तुम्हें कल प्रगट करूंगा।

प्रेरणा

आज का विचार केवल हमारा ये कि यदि हमें अपने जीवन को ऊँचा बनाना है तो पवित्रतम बनाना है तो परमात्मा को हमें प्राची में, दक्षिण मे और पश्चिम में और उत्तरायण में हमें परमात्मा का दर्शन करना है। मानो देखो, इसमें वरुण है, सोम है, इन्द्र है और अग्नि है। मानो देखो, यह परमात्मा के वाची शब्द हैं जिनकी विवेचनाएं मैं कल प्रगट करूंगा। आज मैंने इन विचारों की भूमिका बनाई है क्योंकि वह जो षोडश कलाओं को जाननेवाला ही षोडश कलाओं वाला बेटा! अवतारी कहलाता है। वही तो षोडश कलाएं कहलाती हैं इनको जानना ही परमात्मा का इनमें अवधान करना है। अथवा दर्शन करना है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता रहा है, विचार विनिमय करता रहा है। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह चार कलाएं हैं जिनका ज्ञान मैं तुम्हें कल प्रगट सकूंगा, जिनकी विवेचना जितनी मैं जानता हूँ उतनी वर्णन करूंगा। आज का विचार अब यह सम्पन्न होने जा रहा है आज के विचारों का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती उसकी अनन्तता को जानते हुए और अपने मानो देखो, अपने जीवन को महान बनाने का

प्रयास करें। जिससे हमारा जीवन एक महानता में परिणत हो जाएं और हम अपने देखो, संसार को ऊँचा बनाए।

आत्मवेत्ता

माताओं का कर्तव्य है, क्या वह अपने बाल्य को गर्भस्थल में शिक्षा देना प्रारम्भ करें, और लोरियों का पान कराती हुई, यदि माता देखो, जब अपने में ऊर्ध्वा शिक्षा देती है, सत्यमयी बनाती है, तो माता अपने में सौभाग्यशाली बन जाती है। पितरजन मानो देखो, रजोगुण, तमोगुण का ज्ञान कराता है। तो वह भी सौभाग्यशाली बनता है। उसका बाल्य कदापि ऐसा नही हो सकता, जो आज्ञा का पालन न करे। वह माता का, पिता का पुत्र आज्ञा का पालन करेगा, क्योंकि उन्होंने पितर याग को जान लिया है। आचार्य की जो मानो देखो, वह आचार्य के गर्भ में जो रह गया है। वह आचार्य का अपने आचार्य का अपमान नही करता वह अपमान ही मानो देखो, अपमान को विजय कर लेता है और विजेता बन करके मुनिवरों! अपने में आत्मवेत्ता बन जाता है मेरे प्यारे! देखो, आचार्य कदापि अपमानित नही होते हैं। जो ज्ञान में रत्त रहने वाले हों, जो विवेकी कहलाते हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, सत्यवादी ही संसार में महान बनता है क्योंकि सत्य में प्रभु है, सत्य में प्रकृति है और मुनिवरों! देखो, इन दोनों सत्यों को जानने वाला आत्मा सत्यम् ब्रह्मा अवृतम यह आत्मा जानने वाला है तो यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गायन्त्वा रथं मां प्राची गतं मना आभ्याम् देवाः यम सर्वा। ओ३म् दधि धृतां मनाः वाचन्नम् देवाः। ओ३म् आभ्यां मनु गायन्त्वाः३म्। अच्छा भगवन्!।